आज़ादी का
अमृत महोत्सव

10 जुलाई, 2022, जयपुर

अभिनंदन

राजस्थान की अविस्मरणीय पत्रकारिता

रजत जयंती वर्ष

जयपुर
महानगर टाइम्स

पत्रकारिता सम्मान

श्री प्रवीणचंद्र छाबड़ा

महात्मा गांधी पत्रकारिता सम्मान

महात्मा गांधी ने पत्रकारिता को स्वतंत्रता संग्राम का माध्यम बनाया।

देश की आजादी के पहले से सक्रिय श्री प्रवीणचंद्र छाबड़ा राजस्थान के इतिहास के जीवंत दस्तावेज हैं। पत्रकारों को संगठित करने और आर्थिक-सामाजिक सुरक्षा दिलवाने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

श्री विजय भंडारी

लोकमान्य तिलक पत्रकारिता सम्मान

विश्व में प्रखर पत्रकारिता की मिसाल बालगंगाधर तिलक ने कायम की।

राजस्थान में पत्रकारिता के प्रतिमान श्री विजय भंडारी का जीवन आदर्श संवाददाता और संपादक के रूप में अविस्मरणीय है। पत्रकारिता में वे विश्वसनीयता और मर्यादा के प्रतीक बने हुए हैं।

श्री मिलापचंद डंडिया

गणेशशंकर विद्यार्थी पत्रकारिता सम्मान

शहीद पत्रकार गणेशशंकर विद्यार्थी ने सदैव मशाल जलाए रखी।

बीसवीं-इक्कीसवीं सदी के संक्रमण काल में श्री मिलापचंद डंडिया ने खोजपूर्ण रिपोर्टिंग में मिसाल कायम की। उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण विषय उठाए और हमेशा से निष्कलंक बने हुए हैं।

श्री सीताराम झालानी

मदनमोहन मालवीय पत्रकारिता सम्मान

महामना मालवीय ने पत्रकारिता के माध्यम से आजादी की लड़ाई को बुलंद किया।

सहायता के लिए सदैव तत्पर रहने वाले सीताराम झालानी राजस्थान के एनसाइक्लोपीडिया हैं। झालानी जीवन के नवें दशक में भी सेवा-समर्पण के पर्याय माने जाते हैं।

स्व. श्री श्याम आचार्य

बाबूराव विष्णु पराड़कर पत्रकारिता सम्मान

आजादी के आंदोलन में अखबार को तलवार की धार-सी तीक्ष्णता दी।

सहज, स्नेहिल, सरल, समर्पित स्वभाव के श्याम आचार्य ने निष्पक्ष, पत्रकारिता के लिए जीवन समर्पित कर दिया। वे अनेक राज्यों में सक्रिय रहे और देशभर में अपनी प्रतिष्ठा कायम की।

संपादक
गोपाल शर्मा

●

कार्यकारी संपादक
जिज्ञासु शर्मा

●

मैगजीन संपादकीय
विनोद चतुर्वेदी
उपेन्द्र शर्मा
आलोक शर्मा
आशुतोष तिवारी

●

साज-सज्जा
राधेश्याम शर्मा
लेशिष जैन
कमलेश कुमार कसेरा
विमल तंवर

●

प्रबंध संपादक
ऐश्वर्य शर्मा

स्वत्वाधिकारी महानगर मल्टीमीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक और प्रकाशक गोपाल शर्मा द्वारा 2, सहकार मार्ग, जयपुर-15 से प्रकाशित एवं महानगर मल्टीमीडिया प्राइवेट लिमिटेड, जी-848, फेज-3, रीको सीतापुरा, जयपुर से मुद्रित। सम्पादक: गोपाल शर्मा, कार्यकारी संपादक : जिज्ञासु शर्मा। फोन: 0141-2741076, 2741077 e-mail : mahanagarmarketing@gmail.com * आर.एन.आई. 67873/97/ पोस्टल रजिस्ट्रेशन नम्बर-JaipurCity/008/2021-23

अभिनंदन

भारत की आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष और जयपुर महागर टाइम्स के रजत जयंती वर्ष में वरिष्ठतम पत्रकार सम्मान समारोह का आयोजन सामाजिक सरोकारों की दृष्टि से श्रद्धा से भरा विनम्र प्रयास है। स्वतंत्रता काल के समय से ही प्रवीणचंद्र छाबड़ा, विजय भंडारी, मिलापचंद डंडिया, सीताराम झालानी और दिवंगत श्याम आचार्य का राजस्थान और राष्ट्रीय पत्रकारिता में अतुलनीय योगदान है। ये 'पंच प्रमुख' आदर्श पत्रकार रहे। लगभग 6-7 दशकों की पत्रकारिता के दौरान इन्होंने अपने दामन को सदैव निष्कलंकित रखा और आने वाली पत्रकार पीढ़ी के लिए प्रेरणा के स्रोत बने रहे। इन्होंने अपनी सक्रियता के दौरान प्रभाव और यश की पराकाष्ठा देखी, लेकिन कभी अहंकार को आड़े नहीं आने दिया। इन वरिष्ठतम पत्रकारों को पत्रकारिता क्षेत्र से जुड़ी जिन विभूतियों के नाम पर अलंकृत-सम्मानित किया जा रहा है, वे सभी महान हस्तियां थीं। बाबूराव विष्णु पराड़कर और गणेश शंकर विद्यार्थी हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में शीर्ष पर हैं ही; पूज्य लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी और महामना मालवीय भी दशकों तक पत्रकारिता से जुड़े रहे और आगे जाकर स्वतंत्रता संग्राम में भारत का नेतृत्व किया। लोकमान्य तिलक के प्रखर संपादकीय, उनके कारण जेल यातनाएं और उसके बावजूद ब्रिटिश साम्राज्यवाद को चुनौती देने के अदम्य साहस ने विश्व में मिसाल कायम की।

त्वदीयं वस्तु गोविंद, तुभ्यमेव समर्पये!

यह गरिमामय आयोजन महानगर टाइम्स की अंतःसलिला के प्रवाह का एक सुखद मोड़ है, जो 25 साल पहले आम जनता के सजग प्रहरी की भूमिका से प्रारंभ हुई। पीत पत्रकारिता, आडम्बर और अहंकार से दूर मिशन पत्रकारिता का स्वप्न ही उसका आराध्य था; कांटों भरे राह का सफर उसकी नियति थी। इस दौरान आए संकटों और बाधाओं ने संकल्प को और दृढ़ किया; सच्चाई की राह कभी छोड़ी नहीं गई।

स्वतंत्रता सेनानियों, क्रांतिकारियों, शहीदों और शूरवीरों का सम्मान महानगर टाइम्स की परंपरा है। इसी शृंखला में लगभग 90 वर्ष या उससे ऊपर के पांच वरिष्ठतम पत्रकारों का सार्वजनिक अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया है। देशभक्ति से जुड़े ये भाव ही सत्यनिष्ठ, निष्पक्ष और राष्ट्रीय पत्रकारिता के लिए प्रेरित करते हैं। यह कार्य काफी कठिन होते हुए भी पाठकों, विज्ञापनदाताओं और सहयोगियों के विश्वास और योगदान से ही संभव हो सका। पाठकों का आशीर्वाद ही हमारा संबल है और एक सेवक की भूमिका ही हमें वरेण्य है।

आभार.. अभिनंदन.. अनंत शुभकामनाओं सहित।

जयपुर
महानगर टाइम्स
वरिष्ठतम पत्रकार सम्मान
समारोह
पत्रकारिता सम्मान
श्री प्रवीणचंद्र छाबड़ा
महात्मा गांधी पत्रकारिता सम्मान
श्री विजय भंडारी
लोकमान्य तिलक पत्रकारिता सम्मान
श्री मिलापचंद डंडिया
गणेशशंकर विद्यार्थी पत्रकारिता सम्मान

मीडिया में अभिनंदन

महानगर टाइम्स के वरिष्ठतम पत्रकार सम्मान समारोह की जयपुर ग्रामीण सांसद ने की अध्यक्षता

देश को आगे बढ़ाने में पत्रकारिता की अहम भूमिका

अतिथियों का किया सम्मान

इन्होंने भी बढ़ाई कार्यक्रम की शोभा

संतों-महंतों का मिला आशीर्वाद

पत्रकारिता के पुरोधाओं का सम्मान

संस्था-संगठनों ने लगाए चार चांद

ये भी रहे मौजूद

वरिष्ठतम पत्रकार सम्मान समारोह आयोजित

मीडिया की जीवंतता लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत : राज्यपाल

सम्मान समारोह में राज्यपाल ने कहा

मुंह से कोई गलत बात न निकले, पढ़ता हूं लिखित भाषण: मिश्र

मिश्र की राज्यपालों को नसीहत: संवैधानिक पद की मर्यादा रखनी जरूरी

भावावेश में इधर उधर की बात करना शोभा नहीं देता

इसलिए पढ़ता हूं लिखा हुआ भाषण

बेधड़क | जयपुर

राज्यपाल कलराज मिश्र ने रविवार को राज्यपाल पद पर बैठे वक्तव्यों को संवैधानिक मर्यादा के पालन की नसीहत दी। कलराज मिश्र ने कहा कि जब से राज्यपाल हुआ हूं, उसके बाद से मैं कार्यक्रमों में लिखित भाषण ही लोगों के बीच में पढ़ता हूं। राज्यपाल एक संवैधानिक पद है। भावावेश में आकर कोई बात इधर उधर निकल जाए तो हमारे लिए शोभा नहीं देता। मिश्र की नसीहत को मेघालय के राज्यपाल सतपाल मलिक की केन्द्र सरकार के खिलाफ लगातार की जा रही बयानबाजी से जोड़ कर देखा जा रहा है। मलिक किसान आंदोलन को लेकर लेकर केन्द्र सरकार पर हमलावर है। वे रविवार को यहां आयोजित एक समारोह को संबोधित कर रहे थे।

पारदर्शी और निष्पक्ष रिपोर्टिंग करें

मिश्र ने कहा कि राजनेताओं जैसा जबरदस्त भाषण तो नहीं कर पाऊंगा, लेकिन लिखित भाषण जरूर आपके बीच में पढ़ूंगा। राज्यपाल ने मीडिया जगत को भी नसीहत देते हुए कहा कि पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना गया है। इसके जरिए गणतंत्र की हमारी जड़ों को सींचने का कार्य किया जाता है। खबरें तथ्यों पर हो, सत्यता और शब्दों की मर्यादा, विश्वसनीयता बनी रहनी चाहिए। हर क्षण की खबरें देने की होड़ में कई बार मीडिया चैनल अपनी सीमाएं लांघ देते हैं। मीडिया की विश्वसनीयता और साख को बनाए रखने के लिए जरूरी है कि वह सच के साथ रहते पारदर्शिता के साथ निष्पक्ष रिपोर्टिंग करे।

महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम में वरिष्ठतम पत्रकार सम्मान समारोह का आयोजन

जयपुर में पांच वरिष्ठ पत्रकारों का किया सम्मान

बेधड़क | जयपुर

यहां विद्याश्रम स्कूल के महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम रविवार को आजादी के अमृत महोत्सव के तहत वरिष्ठतम पत्रकार सम्मान समारोह हुआ। राज्यपाल कलराज मिश्र, शिक्षा और संस्कृति मंत्री डॉ बीडी कल्ला, सांसद राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़ की मौजूदगी में कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में राज्यपाल कलराज मिश्र ने वरिष्ठ पत्रकार प्रवीण चन्द छाबड़ा को महात्मा गांधी पत्रकारिता सम्मान, विजय भण्डारी को लोकमान्य तिलक पत्रकारिता सम्मान, मिलापचन्द डांडिया को गणेशशंकर विद्यार्थी पत्रकारिता सम्मान, सीताराम झालानी को मदनमोहन मालवीय पत्रकारिता सम्मान दिया। साथ ही दिवंगत श्याम आचार्य को भी बाबूराव विष्णुराव पराड़कर पत्रकारिता सम्मान दिया गया। सम्मान स्वरुप एक लाख रुपए की नकद राशि व स्मृति चिन्ह दिया गया। वरिष्ठ पत्रकार गोपाल शर्मा की ओर से पत्रकारिता के पुरोधा रहे राजस्थान की स्थापना से लेकर आज तक की घटनाओं का गवाह बनने वाले पत्रकारों को सम्मानित किया गया।

समारोह में राज्यपाल कलराज मिश्र ने वरिष्ठ पत्रकारों को बधाई देते हुए कहा कि विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बाद लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ के रूप में पत्रकारिता का नाम इसलिए लिया जाता है, क्योंकि गणतंत्र की जड़ों को सींचने का काम इसके जरिए किया जाता है। गणतंत्र को सींचने का काम कोई व्यवस्थित तौर पर कर रहा है तो पत्रकारिता कर रही है।

अभिनंदन

वरिष्ठतम पत्रकारों का ऐतिहासिक सम्मान

जयपुर महानगर टाइम्स द्वारा गुरु पूर्णिमा से पहले महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम, भारतीय विद्या भवन, विद्याश्रम में आयोजित वरिष्ठतम पत्रकार सम्मान समारोह पत्रकारिता के पुरोधाओं के प्रति गुरु भावना, समर्पण, श्रद्धा और विनम्रता प्रकट करने का अभूतपूर्व अवसर बन गया। राजस्थान के राज्यपाल कलराज मिश्र के सान्निध्य में आयोजित हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता सांसद और पूर्व केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने की। मुख्य अतिथि प्रदेश के शिक्षा एवं कला संस्कृति मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला और विशिष्ट अतिथि कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मोहन प्रकाश रहे। सभी वरिष्ठ पत्रकारों को एक-एक लाख रुपए की सम्मान निधि और स्मृति चिह्न भेंट करके सम्मानित किया गया।

प्रवीणचंद्र छाबड़ा: महात्मा गांधी पत्रकारिता सम्मान

विजय भंडारी : लोकमान्य तिलक पत्रकारिता सम्मान

मिलापचंद डंडिया : गणेशशंकर विद्यार्थी पत्रकारिता सम्मान

सीताराम झालानी : मदनमोहन मालवीय पत्रकारिता सम्मान

श्याम आचार्य (मरणोपरांत) : बाबूराव विष्णु पराड़कर पत्रकारिता सम्मान

पत्रकारिता जगत के पुरोधाओं के ऐतिहासिक सम्मान का साक्षी बना अपार जनसमूह

अभिनंदन राजस्थान की अविस्मरणीय पत्रकारिता

अद्भुत, अविस्मरणीय, अनुकरणीय

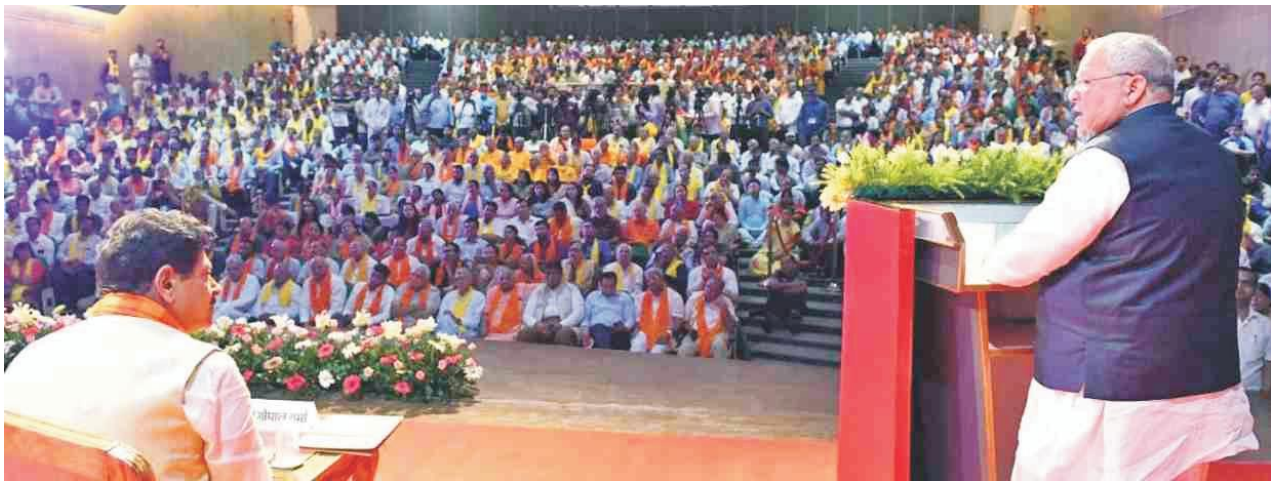

'महानगर टाइम्स की यह पहल सुखद'

'गोपाल शर्मा से मेरा काफी पुराना संबंध रहा है। वे समय-समय पर विशिष्ट प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करते रहते हैं। इनके द्वारा जब भी कोई आयोजन किया जाता है तो यह स्वयं में सुनिश्चित होता है कि वह एक सफल कार्यक्रम होगा। आज का यह अवसर इस रूप में अत्यंत सुखद है कि किसी समाचार पत्र ने अपनी ओर से पहल करके राजस्थान के पांच वरिष्ठतम पत्रकारों के अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें पत्रकारिता अलंकरण और एक-एक लाख रुपए की निधि भेंट करने का महत्वपूर्ण उपक्रम किया है। कर्तव्य, अधिकार, संविधान में दिए कानूनों की पालना करते हुए व्यक्ति कैसे जिम्मेदार नागरिक बने, इसकी सीख पत्रकारिता देती है। उन्होंने प्रेस की स्वतंत्रता को जरूरी बताया लेकिन, साथ ही सलाह दी कि स्वच्छंदता से बचना भी जरूरी है। इसके लिए स्वनिर्मित आचार संहिता होनी चाहिए। व्यावसायिक हितों पर आधारित पत्रकारिता नहीं होनी चाहिए क्योंकि यह मिशन है और पत्रकारों को आम आदमी की आवाज बनना चाहिए। बाजारवाद के दौर में आदर्श मूल्य और नैतिकता का निवर्हन जरूरी है। इस ग्लैमर वाले फील्ड में दायित्व बोध और सजगता आवश्यक है। मूल्यों के साथ समझौता नहीं होना चाहिए।

– कलराज मिश्र, राज्यपाल, राजस्थान

'स्वागत योग्य कदम'

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

'महानगर टाइम्स अखबार द्वारा आयोजित पत्रकार सम्मान समारोह में प्रवीणचंद्र छाबड़ा, विजय भंडारी, मिलापचंद डंडिया, सीताराम झालानी एवं दिवंगत श्याम आचार्य को सम्मानित करने की पहल का मैं स्वागत करता हूं। इन सभी ने पत्रकारिता को पूरा जीवन समर्पित कर समाजसेवा में बड़ा योगदान दिया। मैं सम्मानित पत्रकारों एवं उनके परिजनों को बधाई देता हूं।'

'नियमित हों ऐसे कार्यक्रम'

महानगर टाइम्स द्वारा आयोजित वरिष्ठतम पत्रकार सम्मान समारोह एक सराहनीय पहल है। पत्रकारों की नई पीढ़ी को अपने क्षेत्र के अनुभवी व्यक्तित्वों का सान्निध्य और आशीर्वाद मिल सके, इसके लिए ऐसे कार्यक्रमों का नियमित आयोजन किया जाना चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में एक सैनिक खड़ा रहता है, वहीं कलम का सिपाही भी साथ होता है। इनका पथ भी कठिन और ये अपना जीवन देश के लिए जीते हैं। जब भी लोकतंत्र पर खतरा आया, मीडिया ने अपना धर्म निभाया। पत्रकारों और मीडिया संस्थानों को मजबूत करने की जरूरत है। उनके लिए आर्थिक मॉड्यूल तैयार करने की भी आवश्यकता है। डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया से खबरें बहुत तेजी से पहुंचती हैं, लेकिन, इसमें कई बार गलत तथ्य भी चले जाते हैं। विश्वसनीयता के लिए आज भी अगले दिन अखबार पढ़ा जाता है।

– कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़, सांसद

'आजादी में पत्रकारिता का योगदान'

आजादी दिलाने और देश के नवनिर्माण में पत्रकारिता का बड़ा योगदान है। वरिष्ठतम पत्रकार प्रवीण चंद्र छाबड़ा जैसे पत्रकार अंहिसा और शांति में विश्वास करते थे और सभी से अच्छे संबंध होने के बावजूद उसका दुरुपयोग नहीं किया। विजय भंडारी के लिए सच्चाई से बड़ा कोई धर्म नहीं है। सादा जीवन और उच्च विचार उनकी पहचान है। मिलापचंद डंडिया की पहचान खोजपूर्ण पत्रकारिता के क्षेत्र में रही है। उन्हें भारत का एंडरसन कह सकते हैं। सीताराम झालानी और श्याम आचार्य की जोड़ी थी। सीताराम झालानी एनसाइक्लोपीडिया हैं। इनका सम्मान करना गौरव की बात है। भारत की संस्कृति में भी बड़ों के सम्मान पर जोर दिया जाता है। बड़ों के सम्मान से धन, आयु, बुद्धि और समृद्धि बढ़ती है। आजादी की रक्षा के लिए हम सब को मिलकर रहना होगा। तेरा-मेरा करना भारत की संस्कृति नहीं है और पूरी दुनिया हमारे लिए एक कुटुम्ब है।

– डॉ. बी.डी. कल्ला, शिक्षा, कला एवं संस्कृति मंत्री

'समाज का दीपक है पत्रकार'

पत्रकार समाज के लिए दीपक की तरह है। उसकी रोशनी से समाज आगे बढ़ता है। आज सोशल मीडिया अनसोशल हो गया है। इस वजह से प्रिंट मीडिया का महत्व बरकरार है और ये कभी खत्म नहीं होगा। सोशल मीडिया की खबर पर एकदम विश्वास नहीं किया जा सकता है, इसलिए लोग सुबह अखबार में छपी खबर पर ही विश्वास करते हैं। मूल्यों पर आधारित पत्रकारिता लोकतंत्र के लिए जरूरी है। अखबार निकालना हिम्मत का काम है। एक साधारण और सक्रिय पत्रकार अखबार का मालिक हो सकता है, महानगर टाइम्स के संस्थापक संपादक गोपाल शर्मा इसकी मिसाल हैं। यह मात्र पांच पत्रकारों का सम्मान समारोह नहीं है बल्कि देश के पत्रकारों का सम्मान है। जो पीढ़ी बुजुर्गों को सम्मान नहीं देती, उसकी अगली पीढ़ी उसका सम्मान नहीं करती है। ऐसे में महानगर टाइम्स की यह पहल सराहनीय है।

– मोहन प्रकाश, पूर्व कांग्रेस राष्ट्रीय महासचिव

प्रवीणचंद्र छाबड़ा

बहुमुखी प्रतिभा के विलक्षण व्यक्तित्व

राजेंद्र बोड़ा

राजस्थान के पत्रकार जगत में एक नाम अपनी अलग पहचान और विशिष्ट स्थान रखता है। यह नाम है प्रवीणचंद्र छाबड़ा। अपने दोस्तों और सहयोगियों के बीच गहरे अपनत्व से 'भाई साहब' के नाम से पुकारे जाने वाले छाबड़ा उन पत्रकारों में से हैं, जो देश की आजादी और वर्तमान राजस्थान बनने के पहले से पत्रकारिता तथा सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होंने राजस्थान का निर्माण होते हुए ही नहीं देखा है, बल्कि उसके बनने की प्रक्रिया और उसके बाद से अब तक के समूचे राजनीतिक घटनाक्रम को पत्रकार के रूप में बहुत नजदीक से और बहुत गहराई से देखा है। इसीलिए वे आधुनिक राजस्थान बनने की राजनीतिक प्रक्रिया को समझने और उसे विश्लेषित करने की अपनी दृष्टि नई पीढ़ी के पत्रकारों को देने में सक्षम हैं। छाबड़ा के व्यक्तित्व के कई आयाम हैं। राजस्थान पत्रिका के शुरुआती दौर में लंबे समय तक प्रबंध संपादक रहे और बाद में संपादक के रूप में सेवानिवृत्त हुए विजय भंडारी की यह टिप्पणी छाबड़ा पर एकदम सटीक बैठती है, 'भाई साहब एक बहुमुखी व्यक्तित्व हैं। वे पहले जयपुरी, दूसरे नंबर पर जैनी, तीसरे पर कांग्रेसी तथा चौथे पर पत्रकार हैं। लेकिन पत्रकारिता उनके इन चारों गुणों की पूर्ति करने का माध्यम है।'

इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि छाबड़ा के इन चारों व्यक्तित्वों को अलग-अलग नहीं किया जा सकता है। वे इन चारों का समुच्चय हैं और प्रत्येक

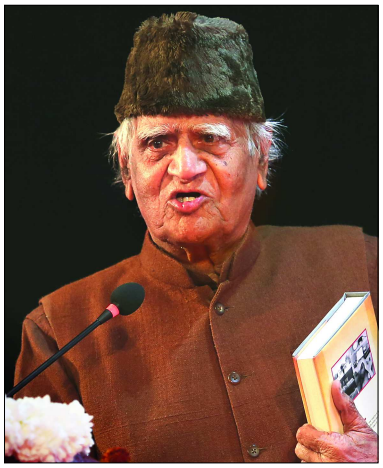

व्यक्तित्व की अपनी भूमिका स्वतंत्र रूप से निभाते हैं। फिर भी उनके सभी व्यक्तित्वों को कोई तार जोड़ता है। इसलिए उनके व्यक्तित्वों का भेद करना आसान नहीं है। हरेक को यह गुत्थी समझ में भी नहीं आती, मगर अपने बारे में छाबड़ा किसी और से अधिक खुद जानते हैं और अपने इस बहुआयामी व्यक्तित्व का तटस्थ भाव से विश्लेषण करने में नहीं हिचकते। वे जानते हैं कि उनके समाज में उनकी पहचान उनके पत्रकार होने के आभा मंडल से ही बनी हुई है। इसीलिए उनकी हमेशा यही चेष्टा बनी रहती है कि उनकी पत्रकार की छवि बनी रहे। यह भी सही है कि वे उन विरले पत्रकारों में हैं, जो अपने पत्रकारिता जीवन के उत्तरार्द्ध के सक्रिय काल में ही स्वयं में एक संस्था बन गए। अनेक लोगों, खासकर उनके समकालीनों को उनका यह व्यवहार गुत्थी वाला लगता रहा है कि वे अपने लेखन में जितने गहरे और गंभीर होते हैं, सामान्य व्यवहार में उतने ही सरल तथा बाल

सुलभ होते हैं और सभी से दोस्ती कर लेने वाले होते हैं। उनके लिए कोई त्याज्य नहीं है। वे सबको साथ लेकर चलना चाहते हैं। लेकिन अपने अलग व्यक्तित्व की स्वीकृति भी चाहते हैं।

छाबड़ा में नेतृत्व की अद्‌भुत क्षमता है और वे दूसरों के हित में हमेशा तत्पर रहते हैं। समूह का प्रतिनिधित्व करते हुए भी वे सामान्य कार्यकर्ता के रूप में बने रहने का बड़ा आग्रह रखते हैं। यह अंतर्विरोध दूसरे नहीं समझ पाते। इसी अंतर्विरोध के कारण शायद उन्हें जो होना चाहिए, वैसा नहीं हो पाते। बहुतों के लिए उनका किसी मुद्दे पर किसी एक पक्ष के लिए अड़े न रहना उलझन भरा होता है। यहां उनकी जैन स्यादवाद की अवधारणा व्यक्त होती है, जो कहती है हर मामले में 'ऐसा ही' नहीं, 'ऐसा भी' हो सकता है। छाबड़ा के लेखन में, खासकर राजनीतिक विषयों से इतर लेखन में एक अद्‌भुत आध्यात्मिक गहराई झलकती है। इसलिए कई लोगों को लगता है, जैसे वे अपनी बात सूत्रों में कह रहे हों। उनके पत्रकारीय लेखन से भी अधिक महत्वपूर्ण भगवान महावीर और जैनत्व के विभिन्न आयामों पर लेखन है, जो उन्हें जैन दर्शन के अद्‌भुत मनीषी के रूप में प्रतिष्ठित करता है। वास्तव में जैन धर्म और आध्यात्मिक विषयों पर अपने लेखन में वे जिस प्रकार और जितने गहरे उतरे हैं, वह किसी गृहस्थ व्यक्ति के लिए आसान नहीं है। उनकी मुग्ध भाव से लिखी दो छोटी पुस्तिकाएं 'धम्मं शरणं' और 'चांदन के बाबा' उन्हें आध्यात्मिक लेखक के रूप में अमर कर देने के लिए काफी है।

26 जुलाई, 1930 को एक संभ्रांत जैन परिवार में जन्मे छाबड़ा भले ही किसी विश्वविद्यालय की डिग्री नहीं ले पाए, लेकिन साहित्य में उनकी शुरू से ही रुचि रही और उन्होंने खूब पढ़ा और गुणा है। युवावस्था में प्रवेश के साथ ही

प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और युवा पत्रकार प्रवीणचंद्र छाबड़ा।

उन्होंने 1946-47 में पहला लेख 'वीरवाणी' पाक्षिक में मातृभाषा हिंदी पर लिखा। दूसरा लेख स्त्रियों में परदा प्रथा के खिलाफ था। 1948 में जब जयपुर में कांग्रेस अधिवेशन हुआ तो एक लेख स्वतंत्रता सेनानी अर्जुनलाल सेठी पर लिखा, जो 'दैनिक जयभूमि' में छपा। उसके बाद इस अखबार के मालिक गुलाबचंद काला ने उन्हें अखबार नियमित आने का प्रस्ताव दिया; इसके साथ ही छाबड़ा की जीवन धारा पत्रकारिता की ओर मुड़ गई जो अब तक अनवरत जारी है। लेकिन पत्रकारिता में कूद पड़ने से उनकी कॉलेज की पढ़ाई छूट गई। उन्हें अंग्रेजी भाषा में हाथ तंग होने का मलाल आज भी है। 1953-54 में उन्होंने खुद अपने थोड़े समय तक निकले साप्ताहिक अखबार 'भारत' का प्रकाशन और संपादन किया, लेकिन व्यवसायी और उद्यमी होना उनके बस की बात कभी नहीं रही। बाद में भी जब कभी उनके सामने खुद का प्रकाशन शुरू करने के लुभावने प्रस्ताव आए तो वे उन्हें स्वीकार नहीं कर सके और अपने को श्रमजीवी पत्रकार ही बनाए रखना श्रेयस्कर समझा।

श्रमजीवी पत्रकार के रूप में छाबड़ा ने खूब पापड़ बेले। 1954 में वे कलकत्ता चले गए, जहां 'दैनिक विश्वामित्र' और दैनिक 'लोकमान्य' के संपादकीय विभागों में काम किया। 1956 में वे पुनः जयपुर आ गए और 'लोकवाणी' के उप संपादक तथा नगर संवाददाता रहे। 1974-75 में 'समाचार भारती' के जयपुर ब्यूरो प्रमुख बने और बाद में चंडीगढ़ और कलकत्ता के भी ब्यूरो प्रमुख रहे। राजस्थान पत्रिका के हरियाणा संस्करण 'हरियाणा पत्रिका' के संस्थापक संपादक भी रहे। पत्रकारिता और राजनीति दोनों में एक साथ सक्रिय रहने पर भी उन्होंने निष्पक्ष पत्रकारिता की, जिसका लाभ पत्रकार जगत, जैन समाज और जयपुर शहर को मिला। निष्पक्ष पत्रकार के रूप में सत्ता की राजनीति में उनका रुतबा हमेशा बना रहा है। सत्ता के राजनेताओं से उनकी नजदीकियों के कारण पत्रकार जगत और जैन समाज तथा अन्य समुदायों के

लोग जरूरत पड़ने पर छाबड़ा की मदद लेते रहे। उन्होंने रचनात्मक सामाजिक कार्यों के लिए भरपूर रुचि से काम किया। यह समझना सबके लिए मुश्किल होता है कि दलीय सीमाओं से परे वे पत्रकार के रूप में सभी राजनीतिक दलों के नेताओं के प्रिय बने रहे और उनका विश्वास जीतते रहे। राजनीति में उनका दखल एक शगल जैसा ही रहा, जिसमें वे पूरी तरह नहीं डूब सके। वे स्वयं मानते हैं कि एक साथ दो नावों में सवार रहने के कारण वे उस तरह कहीं नहीं पहुंच पाए, जैसी दुनिया में लोगों को अपेक्षा होती है।

छाबड़ा राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ के संस्थापक सदस्यों में से हैं और इसके महामंत्री रह चुके हैं। उनके नेतृत्व में पत्रकारों ने बड़ी-बड़ी लड़ाइयां लड़ी हैं। 1964 से 1969 तक वे भारतीय श्रमजीवी पत्रकार महासंघ की कार्यसमिति के सदस्य और सर्वसम्मति से निर्वाचित उपाध्यक्ष रहे हैं। उन्होंने 1963 में विएना में आयोजित पत्रकारों के विश्व सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया, रूस सहित कई भूमध्य सागरीय देशों की यात्रा की और वहां की पत्रकारिता का अध्ययन किया। उनके निश्छल और निष्पक्ष स्वभाव के कारण ही जैन समाज के प्रमुख मुनि देशभूषण जी ने उन्हें दिगंबर जैन समुदाय के अतिशय क्षेत्र चूलगिरी की व्यवस्थापन समिति का संरक्षक बनाया। छाबड़ा के कारण ही जयपुर शहर के बाहर पहाड़ी पर स्थित इस स्थान ने वैभव पाया। वे जैन समाज की अन्य कई सामाजिक और शैक्षणिक संस्थाओं से जुड़े हैं। गांधी के दर्शन से सराबोर छाबड़ा सर्वोदय साहित्य समाज जयपुर के संस्थापक सदस्य रहे। अहिंसा पर उन्होंने एक विशाल ग्रंथ का संपादन किया, जिसका तत्कालीन उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत ने दिल्ली में एक गरिमामय समारोह में विमोचन किया।

सम्मानित करते मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और धर्मपत्नी सुनीता गहलोत।

राजधानी के पत्रकारिता जगत को छाबड़ा के ही सक्रिय प्रयासों से जयपुर में पिंक सिटी प्रेस क्लब मिला। उनकी ही बदौलत सारी प्रशासनिक बाधाएं पार की जा सकीं और क्लब के लिए मौजूदा स्थान तथा भवन राज्य सरकार से मिल सका। क्लब को अस्तित्व में लाने के लिए भिन्न मत वाले लोगों को एक साथ बैठाना, क्लब का संविधान बनवाना, उसे पंजीकृत करवाना और उसके पहले खातों का ऑडिट करवाना.. यह सारा काम एकमात्र उन्हीं के प्रयत्नों से हुआ तथा पत्रकारों को इस क्लब की सौगात मिली, जिसके लिए लिए समूचा पत्रकार जगत उनका सदैव ऋणी रहेगा। 1959 में श्रमजीवी पत्रकारों के लिए सस्ती दरों पर राज्य सरकार से भूमि आवंटन और उन पर मकान बनाने के लिए सस्ते आवास ऋण तथा उसी दौरान सरकारी कोटे में पत्रकारों के लिए स्कूटरों के आरक्षित आवंटन की व्यवस्था छाबड़ा के सरकार में रुतबे के कारण हो सकी।

जैसा कि विजय भंडारी ने कहा है कि छाबड़ा सबसे पहले जयपुरी हैं.. इस नगर के लिए उनका योगदान भी अपूर्व है। राजधानी में सचिवालय के पास चौराहे पर लगी जयपुर के संस्थापक महाराज सवाई जय सिंह की आदमकद प्रतिमा, वहीं कोने पर बिड़ला ऑडिटोरियम सभागार और बिड़ला प्लेनेटेरियम तथा आमेर के रास्ते पर कनक वृंदावन मंदिर के जीर्णोद्धार में उनकी सक्रिय भूमिका रही। जयपुर-आगरा रोड पर बनी सुरंग के लिए पर्यावरण समेत अन्य स्वीकृतियां इस अकेले व्यक्ति की भागदौड़ और सत्ता में बैठे केंद्र के नेताओं से नजदीकियों तथा प्रभाव के कारण संभव हो सकी। केंद्र सरकार से जयपुर शहर को बी-2 का दर्जा दिलवाना हो या राज्य कर्मचारियों के जबरदस्त आंदोलन में हड़ताली कर्मचारी नेताओं और सरकार के बीच सर्वसम्मत समझौता कराना हो, वे सफल रहे। उन पर कर्मचारी नेताओं का भी अडिग भरोसा था; और तत्कालीन

विशाल परिवार के साथ अभिभावक प्रवीणचंद्र छाबड़ा।

मुख्यमंत्रियों का भी। यह भरोसा ही उनकी सबसे बड़ी पूंजी है। यह उस संपदा से बड़ी है यदि वे अपने लिए हो कर रह जाते, जैसा कोई भी व्यक्ति उनकी जगह होता तो सहज ही करता। विपरीत ध्रुवों को साधकर चलने का उनमें सहज कौशल रहा है। कांग्रेस के साथ सभी भिन्न विचारधाराओं वाले राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ छाबड़ा की निकटता लोगों को आश्चर्यजनक लग सकती है। यह उनके पत्रकार होने का अवदान है।

एक बड़े मारवाड़ी सेठ ने छाबड़ा की प्रतिभा देख कर उन्हें कहा था, 'जिण ने बोलणों अर लिखणों आवै, वो दुनिया माथै हकूमत कर सकै।' (जिसे बोलना और लिखना आता है, वह दुनिया पर राज कर सकता है।) ये दोनों कौशल होते हुए भी छाबड़ा का जीवन बताता है कि उनके मन में राज करने की कभी महत्वाकांक्षा नहीं रही है। अपनी विशिष्टता बनाए रखने की जीवेषणा जरूर उनमें रही है, जो उम्र के इस पड़ाव में भी बनी हुई है। लोग उनकी उम्र में आते-आते लोक स्मृति से लोप हो जाते हैं, लेकिन वे अपनी अहमियत जतन से बनाए हुए हैं। छाबड़ा आजादी के बाद बने राजस्थान के जीवंत दस्तावेज हैं। उनसे बात करें तो उनकी स्मृतियां फूट पड़ती हैं। कहा जाता रहा है कि अखबार तत्कालीन इतिहास का कच्चा प्रारूप प्रस्तुत करते हैं। उनकी स्मृतियों में यही कच्चा प्रारूप है, जिसे यदि अकादमिक आधार मिल जाए तो सामंती राजपूताने से आधुनिक राजस्थान के बनने का अद्भुत इतिहास लिखा जा सकता है। हमारा सौभाग्य है कि सत्तर सालों से अधिक की सक्रिय पत्रकारिता और सामाजिक क्षेत्र के कार्यों के गहरे अनुभव रखने वाले भाई साहब का सानिध्य और आशीर्वाद हमें प्राप्त है।

(लेखक दैनिक भास्कर, जयपुर के पूर्व संपादक हैं।)

जयपुरः गांधी सत्याग्रह पुस्तक पर आयोजित संगोष्ठी में शामिल प्रो. पी.के. शर्मा, नरेश दाधीच, गोपाल शर्मा और प्रवीणचंद्र छाबड़ा।

विजय भंडारी

पत्रकारिता के प्रतिमान

गोपाल शर्मा

नजरों वाले चश्मे से झांकती तीक्ष्ण निगाहें, चौड़ा माथा, साफ-सुथरी आधुनिक वेशभूषा, गोरा रंग, मझले कद से कुछ लंबे और सदैव सक्रिय व्यक्तित्व.. जिन्हें कभी खाली बैठे नहीं देखा जा सकता और न जिनकी भाव-भंगिमा कभी निष्क्रिय नजर आई.. ऐसे विजय भंडारी। आदर्श संपादक-सक्रिय संवाददाता! विजय भंडारी यानी समर्पण, सक्रियता, संस्कार, संघर्ष और सफलता। स्वतंत्रता संग्राम के तरुण सिपाही, छात्रनेता और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में जीवन शुरू करने वाले भंडारी नौ दशक की यात्रा पूरी करते समय ऐसे पत्रकार के रूप में मिसाल हैं, जिन पर राजस्थान गर्व कर सकता है।

भंडारी की तरुणाई वाम वायु से प्रेरित थी तो युवावस्था पर आजादी के लिए कांग्रेस के साथ सक्रियता का प्रभाव था, लेकिन पत्रकार भंडारी के लिए राजनीति सिर्फ एक विषय थी; उससे जुड़ी घटनाएं सिर्फ समाचार थे। यहां तक कि कभी कोई वरिष्ठ-कनिष्ठ हवा की गति में जनभावना के साथ बहने की जल्दी दिखाते तो भंडारी खबरों के अनुशासन के लिए ट्रैफिक कंट्रोलर की भूमिका में नजर आते। किसी विषय की व्याख्या करने और निष्कर्ष तक पहुंचने में भंडारी बेजोड़ हैं। वे मर्म तक पहुंचते हैं और भविष्य की दृष्टि लिए होते हैं। घटनाओं, व्यक्तियों और लेखन पर उनकी टिप्पणियां सदैव गंभीर रहीं तथा उदाहरण के रूप में याद की जाती हैं। पत्रकारिता के प्रति निष्ठा के साथ

ईमानदारी और कर्मठता उनके मापदंड हैं। न तो उन्होंने कभी अपने जीवन में इससे समझौता किया और न इन विषयों में किसी को कोई छूट देने को तैयार हुए। अगर कोई पत्रकार इन त्रि-निष्ठाओं में खरा नहीं हो तो तुरंत उनकी नजरों से गिर जाता है; उन्हें बचाव के सामान्य तर्क प्रभावित नहीं कर पाते। भंडारी की कसौटी कुछ ज्यादा कठोर है।

यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि भंडारी नींव के पत्थरों में से एक हैं, जिनकी बुनियाद पर राजस्थान पत्रिका का विशाल समूह खड़ा है। राजस्थान की पत्रकारिता के भीष्म पितामह, पत्रिका के संस्थापक कर्पूरचंद कुलिश ने संपादक का दायित्व छोड़ते समय लिखा था कि भंडारी वास्तविक संस्थापकों में हैं। वे राज्य के उन इने-गिने दुर्लभ पत्रकारों में से हैं, जिन पर एक भी दाग नहीं लगा हुआ है। सत्ता प्रतिष्ठानों की चौखट पर उन्हें कभी हाजिरी लगाते नहीं देखा गया और न अपने किसी काम के लिए किसी की

विजय भंडारी की अस्वस्थता के दौरान कुशलक्षेम लेते मुख्यमंत्री अशोक गहलोत।

मनुहार करते देखा गया। कुलिश के समधी होते हुए भी कुलिश उनके लिए प्रेरणास्रोत और मार्गदर्शक रहे तथा कुलिश की सोच को आगे बढ़ाना ही उनका ध्येय रहा। कुलिश ने 60 वर्ष की उम्र पूरी होने पर पत्रिका को 'नमस्कार' किया तो संपादक की गुरुत्तर जिम्मेदारी का भार भंडारी को ही सौंपा था। भंडारी के संपादक रहते ही दो लोकप्रिय कॉलम का निरंतर प्रकाशन शुरू हुआ जो किसी भी समाचार पत्र के लिए अनूठे विषय थेः 'कड़वा-मीठा सच' और 'आओ गांव चलें'। 'कड़वा-मीठा सच' के पीछे दो नजरिए थे; पहला, नए पत्रकारों को प्रोत्साहित करना और दूसरा, प्रत्यक्ष रूप से समाचार या फीचर की श्रेणी में नहीं आने वाले लेकिन महत्वपूर्ण विषयों को शामिल करना। इस कॉलम की सामग्री आम तौर पर संवाददाता गण भेजते रहते थे, लेकिन 'आओ गांव चलें' के लिए विशेष तौर पर आदर्श शिक्षक-कर्मचारी नेता से पत्रकार बने बिशनसिंह शेखावत को लगाया। शेखावत का गांव-ढाणी तक परिचय था और उन्हें आम आदमी जानते थे। सादगी और सरलता के प्रतीक शेखावत के लिखने से वह कॉलम जन-जन में लोकप्रिय बना। आगे चलकर सभी संस्करणों में अलग-अलग यह कॉलम छपने लगा; हजारों गांवों की तत्कालीन स्थिति पहली बार सामने आई।

मेवाड़ के ख्याति प्राप्त भंडारी परिवार में 14 जून, 1931 को कपासन में जन्मे और ग्राम्य जीवन तथा सामंती परिवेश में पले-बढ़े। वे 14 वर्ष की अल्पायु में स्वतंत्रता आंदोलन की गतिविधियों से जुड़ गए थे। उन्होंने स्थानीय छात्र आंदोलनों का नेतृत्व किया। इसी दौर में गांव और गरीब के दर्द से रूबरू हुए, जिसे वाणी देने के लिए पत्रकारिता को माध्यम रूप में अपनाया। प्रारंभिक वर्षों में राजस्थान के साहित्य पुरोधा जनार्दनराय नागर द्वारा स्थापित राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के प्रकल्प 'जनपद' और साप्ताहिक 'कोलाहल' के माध्यम से इसका श्रीगणेश किया। जनवरी, 1959 में वे जयपुर आ गए और तत्कालीन प्रमुख हिंदी दैनिक 'नवयुग' के संपादकीय विभाग में लगभग दो वर्षों तक कार्य किया। इसके बाद 'राजस्थान पत्रिका' से जुड़ गए तथा आजीवन वहीं के होकर रह गए। भंडारी के लिए पत्रकारिता आजीविका के साथ-साथ

मिशन भी रही, इसलिए समाचारों की गुणवत्ता और श्रेष्ठता को उन्होंने धर्म मान लिया तथा इसी दिशा में निरंतर सचेष्ट रहे। वे मानते हैं कि पत्रकार का काम जनता की भावना को मूलरूप से प्रतिध्वनित करना है। यदि वह कोई समाचार बना रहा है तो उसमें विचार नहीं डाले लेकिन यदि उसे विचार संप्रेषित करने हैं तो वे लेखों-संपादकीयों के माध्यम से होने चाहिए। पत्रकारिता की कुलिश दृष्टि ही भंडारी की रग-रग में समाई है। वे भी समाचार पत्र को कागज की नाव मानकर चलते हैं। यह भी मानते हैं कि एक भी छेद उस कागज की नाव की डुबो सकता है। समाचारों के संदर्भ में वे अमूनन कुलिश की कही बात को ही दोहराते हैं कि यदि कोई समाचार सही है, उसकी भाषा सभ्य है तथा वह राष्ट्रीय दृष्टिकोण के विपरीत नहीं है तो उसे प्रकाशित करने में कोई हर्ज नहीं है और इस संदर्भ में पत्रकार की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की पूरी रक्षा होनी चाहिए। लेकिन वे यह भी मानते हैं कि जिसके बारे में समाचार दिया जा रहा है, उसके पक्ष का भी पर्याप्त ध्यान रखा जाना चाहिए और यदि वह समाचार किसी की छवि को प्रभावित करने वाला है तो उसका पक्ष भी आना चाहिए।

वे तीक्ष्ण दृष्टि वाले पत्रकार हैं। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी और पी.वी. नरसिंह राव की ओमान-जापान यात्राओं के दौरान उन्होंने जितनी गहरी दृष्टि से समाचार संकलित किए, वे साथ गए अन्य पत्रकारों के लिए विषय वस्तु ही नहीं बन पाए। विदेश गए वरिष्ठ पत्रकारों की टोली के सदस्य मात्र थे भंडारी, लेकिन रिपोर्टिंग के जरिए उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की स्थिति पर विशेष प्रकाश डाला। उसमें भारतीय प्रधानमंत्रियों की आलोचना नहीं थी और न भारत की छवि पर टिप्पणी की गई थी, लेकिन उन्होंने

विजया और विजय भंडारीः स्नेह और समर्पण भरा साथ।

भविष्य में सावधानी रखे जाने और स्थिति को मजबूत किए जाने की आवश्यकता को जिस तरह से सामने रखा, वह अनूठा था। उनके समाचारों के आधार पर राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं ने विवरण प्रकाशित किए। राष्ट्रपति जैल सिंह के साथ जयपुर के राजभवन में उनकी भेंट विशिष्टता लिए हुए थी। वह पहली मुलाकात थी, लेकिन भंडारी और उनके साथ गए पत्रिका के निदेशक मिलाप कोठारी से जैल सिंह इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने ऐसे गहरे राजनीतिक रहस्योद्घाटन किए, जिनका दोनों ने किसी से उल्लेख नहीं किया; इसके बावजूद उस दौरान राष्ट्रपति के निकट के अधिकारियों को उतनी गंभीरता लिए उस वार्तालाप पर काफी आश्चर्य हुआ। साक्षात्कार के लिए तय हुआ संक्षिप्त समय काफी लंबा चला और राष्ट्रपति ने अपने सहयोगियों से इस खुशनुमा मुलाकात का जिक्र भी किया।

भंडारी की गूढ़ता तक पहुंचने के लिए विपरीत दिशा में उतनी ही ऊंचाई पर जाकर सोचना होगा। जैसे उन्होंने माणिक्यलाल वर्मा और मोहनलाल सुखाड़िया के अंतर्द्वंद्व तक पहुंचने की कोशिश की; राजस्थान की राजनीति में भैरोंसिंह शेखावत को प्रथम पुरुष माना; 1968 में दौसा से नवलकिशोर शर्मा की जीत को स्वतंत्र पार्टी और राजे-रजवाड़ों के दौर का आखिरी अध्याय

बताया; हरिदेव जोशी और रामनिवास मिर्धा के बीच मुख्यमंत्री पद के चुनाव के लोकतांत्रिक महत्व को इंगित किया और 1942 के दौर में हीरालाल शास्त्री, मिर्जा इस्माइल तथा घनश्यामदास बिड़ला की तिकड़ी के रहस्य को समझा। भारतीय जनता पार्टी का जयपुर में राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ तो वे एक-डेढ़ घंटे के लिए अधिवेशन में गए थे। मैं साथ था; वे घूमते, मिलते और देखते रहे। उसी दौरान उन्होंने एक कागज पर चलते-चलते नोट्स तैयार किए; भाजपा के एजेंडे और कार्यवाही को देखकर उन्हें लग गया था कि वह सबसे बड़े दल के रूप में उभर सकती है।

समाचारों के प्रति भंडारी का समर्पण अद्‌भुत है। उनकी सक्रियता के काल में देश में अनेक घटनाएं आधी रात के काफी बाद घटित हुईं; जिनका कवरेज देश के इने-गिने समाचार पत्रों में ही हो सका। भंडारी ने कर्मठता, समर्पण और सक्रियता का परिचय देकर जिस तरह 'पत्रिका' के अंक निकाले, वे दुर्लभ हैं। 27 मई, 1964 को रात दो बजे टेलीप्रिंटर पर आई दो पंक्तियों 'प्रकाश चला गया' और 'नेहरू का देहावसान' ने विश्व भर में सनसनी फैला दी। भंडारी ने मशीन रुकवाकर एक घंटे में पत्रिका का अतिरिक्त अंक प्रकाशित करवाया। प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के निधन की सूचना 11 जनवरी, 1966 को लगभग उसी समय विस्फोट के रूप में सामने आई। एक मित्र से पता चलाने पर भंडारी तत्काल यू.एन.आई. कार्यालय गए और सुबह 6 बजे पाठकों के हाथों में पत्रिका का अतिरिक्त अंक था। बांग्लादेश के प्रथम राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान की हत्या 15 अगस्त, 1975 को हुई। उस दिन राष्ट्रीय अवकाश था; इसके बाद भी भंडारी ने अंक निकलने की व्यवस्था की। पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रतापसिंह कैरों की हत्या का अतिरिक्तांक प्रकाशित करने के लिए सचिवालय से प्रेस पहुंचने में भंडारी ने जितनी तेज साइकिल चलाई; वैसी नौबत न कभी पहले आई और न कभी बाद में आई। निश्चित रूप से इनका श्रेय 'पत्रिका' को ही मिला, लेकिन भंडारी के मन में पाठकों के प्रति निष्ठा का यह परिणाम था।

भंडारी का जीवन एक सक्रिय संवाददाता, सक्षम संपादक और समर्पित लेखक तक सीमित नहीं है; इस दौरान उन्हें कई बार हलाहल भी पीने पड़े लेकिन उन्होंने कभी मुंह नहीं खोला। 91 वर्ष की उम्र में वे पूर्णतः संतुष्ट हैं..जिंदगी से कोई शिकायत नहीं है..जो कुछ मिला, उसके लिए वे ईश्वर के प्रति कृतज्ञ हैं। अफसोस उन्हें सिर्फ यह है कि वे कुछ कर नहीं पा रहे हैं। उनका कुछ करना यानी लिखना; मर्यादित कर्म से जुड़ा उनका यथार्थ ही उनको सही मायने में परिभाषित करता है।

एक व्यक्तिगत घटना को जाने बिना भंडारी के व्यक्तित्व की संपूर्णता को समझना थोड़ा मुश्किल है। भंडारी से मेरी पहली मुलाकात 1985 में पत्रिका में काम शुरू करने के छह महीने बाद हुई। तब तक मुझे 700 रुपए महीना दिया जाना शुरू कर दिया गया था, लेकिन इससे अतिसाधारण स्थिति में भी परिवार चलाना मुश्किल था। एक दिन भैरोंसिंह शेखावत ने मेरे कामकाज के बारे में पूछा और उन्हें यह सब पता चला तो उन्होंने भंडारी को मेरे बारे में फोन किया। तब तक वे मेरे बारे में जानते नहीं थे, शेखावत का फोन आने पर उन्होंने अपने कक्ष में बुलवाया और किए जाने वाले काम के बारे में पूछताछ की। मैंने बताया तो सुनकर उनका अंदाज डांट भरा था और जीवन भर के लिए चेतावनी भी, कि इस तरह तो सारी जिंदगी काम करते जाइए; पैसे तो कभी बढ़ेंगे नहीं। मैं निराश होकर अपनी बात मन में लिए लौट आया। घटनाओं का दूसरा दौर लगभग दो-ढाई साल बाद शुरू हुआ। वही भंडारी थे; उनकी करुणामयी आंखें और चेहरे पर प्रफुल्लता का भाव। शायद ही कोई साल गया, जब दुगुनी वेतनवृद्धि नहीं मिली हो और दो-तीन सालों में पदोन्नतियां नहीं हुई हों। यह कुलिश-भंडारी के कारण ही संभव हो सका कि देश के विभिन्न हिस्सों में महीनों तक रिपोर्टिंग करने के मौके मिले; ऐसी घटनाओं का कवरेज, जो सदियों में हुआ करती हैं।

यह कहना सही होगा कि भंडारी ने पत्रकारिता के नवागंतुक को एक झटके में ही गुरु मंत्र देकर सक्रिय संवाददाता बना दिया। 1987 में दिवराला सती की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित घटना हुई। स्वाभाविक रूप से राजस्थान पत्रिका की कवरेज ही दुनिया तक सूचनाएं पहुंचाने का सबसे बड़ा माध्यम थी। मुझे पत्रिका में गए दो साल ही हुए थे, मैं इतवारी पत्रिका में कुछ संपादन, पेज बनवाने और रविवारी-इतवारी में छोटा-बड़ा लिखने में रत था। भंडारी ने मुझे दिवराला सती प्रकरण के कवरेज के लिए भेजा। उन्होंने कहा, 'यह ध्यान रखना है जो दिखाई दे, वही लिखना है। जनता की भावना भी उन्हीं की भाषा में सामने आनी चाहिए।' संवाददाता के रूप में यह मेरा पहला और आखिरी गुरु मंत्र बना। हालांकि एक वर्ग में दिवराला कवरेज को महिमामंडन बताकर जबर्दस्त आलोचना हुई। पत्रिका के खिलाफ प्रदर्शन भी हुए, लेकिन राजस्थान और देश के लिए महत्वपूर्ण यह था कि सती होने की घटना की वीभत्सता सामने आए; साथ ही, राजस्थान का शक्तिशाली और गौरवशाली राजपूत समाज किन्हीं अपराधियों की गलती का शिकार होकर अलग-थलग भी नहीं पड़े।

भंडारी से मैंने सीखा कि पाठक

हमारे भगवान हैं और समाचार की प्रतिष्ठा ही भक्ति है। समाचारों की गोपनीयता का महत्व वे बखूबी समझते हैं और समझाते थे। सूपा कन्या कांड और तत्कालीन खनिज मंत्री के भ्रष्टाचार से संबंधित खबरें लिखे जाने के बाद वे कमरा बंद करके उन्हें सुनते-समझते थे और यह निर्देश देते थे कि अत्यंत एक्सक्लुसिव खबरें समाचार पत्र तैयार होने के आखिरी क्षणों में ही देनी चाहिए और तब तक किसी अन्य की जानकारी में नहीं होनी चाहिए। यह उनसे ही सीखा कि बिना पुख्ता प्रमाण के खबरें नहीं होनी चाहिए; इसके कारण जीवन में कभी किसी खबर का खंडन देने की जरूरत नहीं पड़ी। भंडारी का संपूर्ण जीवन निष्पक्ष और उत्कृष्ट पत्रकारिता से आह्लादित रहा है। तीसियों वर्षों तक वे संवाददाता के रूप में सक्रिय रहे; कभी उनके दामन पर आंच नहीं आई। कर्पूरचंद कुलिश कहते थे, 'भाया (भंडारी) मर्यादा वाले पत्रकार हैं।' आजादी के बाद से राजस्थान की घटनाओं के प्रमुख गवाह वरिष्ठ पत्रकार सीताराम झालानी तत्कालीन सक्रिय दशकों के बारे में मानते हैं, 'पत्रकारिता में दो ही बेदाग पत्रकार देखे, पीटीआई के पूर्व ब्यूरो चीफ ए.एस. नारायणन और विजय भंडारी।' पत्रकारिता के प्रति उनकी निष्ठा इस तथ्य पर आधारित रही कि कपासन में ताऊ का द्वादशा छोड़कर जयपुर आ गए क्योंकि मुख्यमंत्री बरकतुल्लाह खान का निधन हो गया और समाचारों के लिए कुलिश को उनके सहयोग की जरूरत थी। पत्रकार के रूप में संसाधन जुटाने के प्रति निर्लिप्त भाव इस कदर रहा कि भूमि आवंटन प्रवीणचंद्र छाबड़ा और मकान का निर्माण झालानी की भूमिका से ही हुआ। भंडारी पत्रकारिता को समर्पित थे.. प्राण पण से जुटे हुए थे। भंडारी के लिए समाचार के सामने सरकार की अहमियत नहीं रही। बरसात के कारण अलवर जल आप्लावित हुआ तो मौके की रिपोर्टिंग के रूप में भंडारी की खबर आज भी प्रेरक है, 'रोम जल रहा है, नीरो बंसी बजा रहा है।'

संवाददाता और संपादक के रूप में भंडारी कभी राजनीतिक दलों की रपटन में नहीं फंसे। उनके पास ऐसे अवसर थे, जो किसी भी नेता को ऊपर उठा या गिरा सकते थे; लेकिन उन्होंने उस शक्ति का कभी दुरुपयोग नहीं किया। अशोक गहलोत के राजनीतिक उदय के दौरान भंडारी के सकारात्मक रवैए से गहलोत

परिवार के साथ आत्मीय क्षणों में विजय भंडारी।

की लोकप्रियता सामने आई; अन्यथा कांग्रेस के सबसे लोकप्रिय नेता होने के बावजूद वे आम जनता की नजरों में कुछ ओझल थे। इसका बड़ा कारण तो यह था कि पत्रिका उस दौरान समाचार पत्रों का पर्यायवाची हो गया था और जब तक उसमें कोई खबर नहीं छपे, तब तक आम पाठकों को उसके बारे में पता नहीं चलता था। गहलोत का विषय कुलिश और भंडारी तक गया था; उन्होंने सहयोगियों की तथ्यात्मक बातों का महत्व समझा और इसका गहलोत को काफी लाभ मिला। चूंकि उस समय मैं राजनीतिक खबरों से जुड़ा हुआ था, इसलिए यह कहना भी गलत नहीं होगा कि मेरी रिपोर्टिंग पर भी उनकी पूरी नजर रहा करती थी क्योंकि मैं भैरोंसिंह शेखावत की सिफारिश पर पत्रिका में आया था। मेरे विचारों के खबरों पर हावी हो जाने के प्रति वे आशंकित थे। संपादक के रूप में उनकी इस तरह की तीक्ष्ण दृष्टि ने राजस्थान में कितने ही संवाददाता-पत्रकार तैयार किए।

समाचार पत्र से निवृत्ति के बाद वे रचनात्मक लेखन क्षेत्र से जुड़े। यह एक वरिष्ठ पत्रकार की दूसरी पारी थी, जो उन्होंने विद्यार्थी भाव से प्रारंभ की और निष्णात लेखक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। 'राजस्थान की राजनीति' पर उनकी पुस्तक पढ़े बिना इस जटिल विषय को तटस्थ ढंग से समझा ही नहीं जा सकता। उम्र के चौथे पड़ाव में वे एक नौजवान रिपोर्टर की तरह वरिष्ठ नेताओं से मिले और तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं को समझा। इसके माध्यम से उन्होंने अनेक राजनीतिक रहस्योद्घाटन किए; सत्ता के गलियारों की भूलभुलैया, राजनीतिक षडयंत्र और सियासती शतरंजी चालों को सामने लेकर आए। राजस्थान के इतिहास के लिए यह कार्य अमर है और इसे हमेशा याद रखा जाएगा। वैसे ही, उन्होंने पारिवारिक संस्मरण 'कैसे भूलूं?' को यादगार बना दिया। पारिवारिक रिश्तों की मधुरता और आत्मीयता में छिपे दर्द को उन्होंने जिस तरह उजागर किया, उसमें संवेदनशील और प्रांजल भाषा ही नहीं है बल्कि आंखों में करुणा के सागर और दिल की धड़कनों के तेज होते जाने को भी महसूस किया जा सकता है। कृतज्ञ संतान, पत्नी के त्याग के प्रति समर्पित पति, पुत्रों-पुत्री और परिजनों के प्रति स्नेह से भरे गृहस्थ तथा मित्रों-सहयोगियों के प्रति सदाशयी-सकारात्मक व्यक्तित्व की झलक मिलती है।

राजस्थान पत्रिका के इतिहास में समाचारों की स्वतंत्रता का स्वर्णिम अध्याय लिखे जाने के पीछे कर्पूरचंद कुलिश की महानता तो है ही; भंडारी का भी यशस्वी योगदान है। वे उस दौरान पत्रकारों और प्रबंधन के बीच की कड़ी थे या मुख्य भूमिका में थे। उनके समय ऐसे समाचार प्रकाशित हुए, जिसे कोई भी संस्थान झेल नहीं सकता और न सरकारों की नाराजगी सहने की बात सोचेगा। निष्पक्ष खबरों की मंदाकिनी

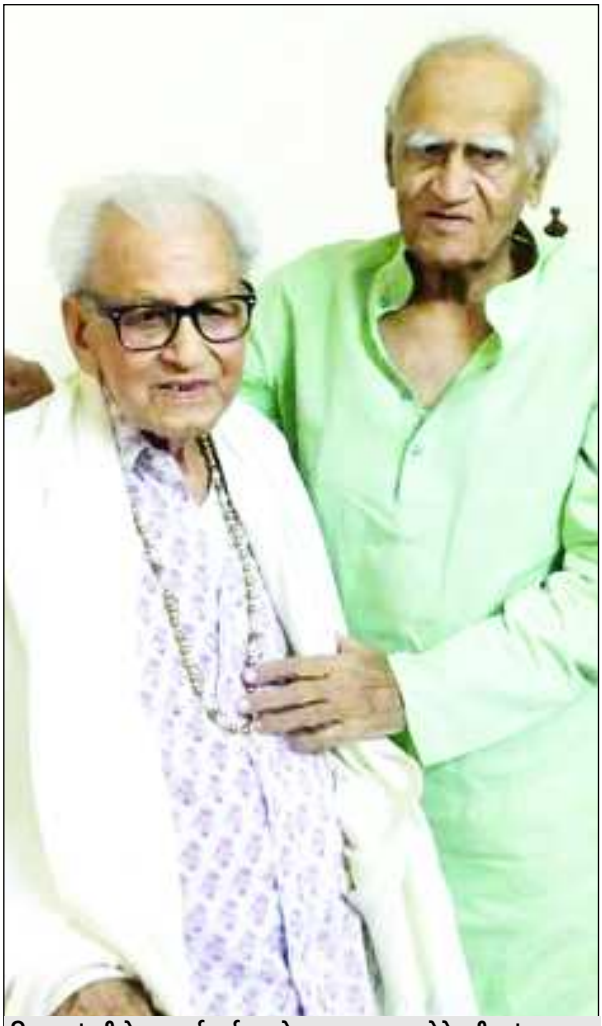

विजय भंडारी के 90 वर्ष पूर्ण करने पर शुभकामना देते प्रवीणचंद्र छाबड़ा।

कल्याणसिंह कोठारी, विजय भंडारी, विनोद शंकर दवे और ओम थानवी।

कुलिश ने ही प्रारंभ की और भंडारी ने अपनी योग्यता, ईमानदारी, अनुभव तथा कर्मठता से इसे लंबे समय तक प्रवाहित किया। आज तो उस तरह की खबरों के बारे में सोचने के स्वप्न आने भी मुश्किल हैं।

(लेखक जयपुर महानगर टाइम्स के संस्थापक संपादक हैं।)

मिलापचंद डंडिया

खोजी पत्रकारिता के पर्याय

संजीव श्रीवास्तव

जब पुराने मित्र गोपाल शर्मा जी ने मुझे फोन किया और मिलापचंद डंडिया जी पर एक लेख लिखने को कहा तो मैंने उनकी यह बात सहर्ष ही मान ली। पांच वरिष्ठ पत्रकारों के अभिनंदन और सम्मान समारोह के इस यज्ञ में मेरा भी कुछ योगदान हो जाए तो मैं अपना सौभाग्य समझूंगा। अस्सी के दशक में जब मैंने अपनी पत्रकारिता की यात्रा प्रारंभ की, तभी से डंडिया जी के स्नेह और आशीर्वाद का मैं विशेष पात्र रहा। मैंने तो इस क्षेत्र में तब नन्हे कदम रखे ही थे, लेकिन वे तब तक पत्रकारिता के स्थापित हस्ताक्षर बन चुके थे।

उनकी लेखन शैली में एक अलग तहजीब, पैनापन, आक्रामकता और धार दिखाई देती थी, जो उनसे पहले और बाद में शायद राजस्थान के किसी पत्रकार में नहीं दिखी है। उनकी लेखन शैली भी उनकी शख्सियत का ही विस्तार है। अधिकांश लोग मेरी बात से सहमत होंगे कि उनकी लेखन शैली में एक खास तरह का बांकपन, स्वाभिमान, तेजी, आक्रामकता, कुछ व्यंग्य और तंज का पुट भी रहता था, जो उनके व्यक्तित्व की ही विशेषताओं का मिश्रण है।

डंडिया जी एक पिता, पति और सखा की भूमिका में भी वैसे ही विलक्षण हैं, जितने विलक्षण वे पत्रकार रहे हैं। डंडिया जी राजस्थान में खोजी पत्रकारिता के जनक भी थे और पर्याय भी रहे हैं। मुझे याद नहीं आता कि कोई और उनकी तरह का कलमकार राजस्थान में हुआ हो, जिसने इतनी बड़ी संख्या में और इतने लंबे समय तक

प्रदेश के रसूखदार लोगों के खिलाफ पुख्ता सबूतों के साथ सिलेसिलेवार रिपोर्टिंग की हो। वे उनमें से भी नहीं हैं, जो एकाध रिपोर्ट करके अपने शिकार को मुक्त कर दें। चाहे वे राजस्थान के कुछ पूर्व मुख्यमंत्री हों, आला अफसर हों, नामचीन व्यवसायी, डॉक्टर, जज या राज्यपाल हों। डंडिया जी ने अपनी लेखनी में हमेशा बड़े लोगों को अपनी कलम के निशाने पर ही रखा। वे एक बार किसी के विरुद्ध मोर्चा खोल देते थे तो फिर किसी की भी नहीं सुनते थे, न किसी की मानते थे। प्रलोभन आदि तो बहुत दूर की बात है।

उनकी लेखनी पर यदा-कदा कोई किसी पूर्वाग्रह का आरोप लगा सकता है, लेकिन तथ्यों और सबूतों के मामले में उनकी कलम को कोई भी कठघरे में नहीं खड़ा कर पाया। डंडिया जी और उनकी कलम दोनों में ही एक प्रकार की जिद या हठ का पुट ही देखने को मिलता है। उनमें एक सकारात्मक तरीके का अहम भी है। बहरहाल, सत्ता और मठाधीशों से

उलझने का जितना सकारात्मक आनंद उन्होंने पत्रकारिता में लिया, वैसा शायद राजस्थान में दूसरा कोई उदाहरण मुझे सहज याद नहीं आ रहा।

मैं डंडिया जी के जीवन वृत्तांत को यहां नहीं लिखना चाहता, लेकिन जो उनके करियर से परिचित हैं, वे सहमत होंगे कि कुछ लोग पत्रकार बनने के लिए ही पैदा होते हैं और डंडिया जी उनमें से ही एक हैं। वैसे एक-दो मर्तबा उन्होंने सरकारी नौकरियां भी कीं, जिनमें बेहतर सुख सुविधाएं, स्थायित्व, अच्छी तनख्वाह आदि आकर्षण थे; लेकिन एक स्वतंत्र ख्याल, अपनी धुन और हेकड़ी में जीने वाले को किसी कायदे-कानून में बंधकर काम करना कहां रास आता!

उन्होंने हिंदी पत्रकारिता से अपना करियर शुरू करके बाद में अंग्रेजी प्रकाशन समूह और संपादकों के बीच पहले अपनी जगह और विश्वसनीयता बनाई, फिर बड़ी ख्याति भी अर्जित की। उनके स्कूप्स, खोजी और विस्फोटक समाचार कई अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों की आवरण कथा बने तथा कई समाचार मुख्य पृष्ठों पर भी छपे।

थोड़ा व्यक्तिशः होने का मोह नहीं त्याग पाने के कारण मेरे प्रति उनके सान्निध्य और स्नेह का भी मैं यहां उल्लेख करना चाहूंगा। राजस्थान के कई चुनावों की रिपोर्टिंग के लिए उनके साथ घूमने का जो मुझे अवसर मिला, उस दौरान मैंने बहुत कुछ सीखा। पत्रकारिता के गुर, अलग-अलग जगह लोगों से जुड़े समीकरणों के साथ किसी शहर और कस्बे के खास व्यंजन और स्वाद की जानकारी भी उनके सौजन्य से ही मुझे मिली। भाभी जी (श्रीमती सुशीला डंडिया) द्वारा दौरों में साथ रखे गए भोजन और बाजले के ठंडे पानी का स्वाद अब तक जुबान पर मौजूद है। डंडिया जी और भाभी जी का हमेशा मुझ पर और हमारे परिवार पर बहुत स्नेह और आशीर्वाद रहा। जयपुर से बाहर रहने पर भी मुंबई और दिल्ली में वे हमारे पास आए। जो थोड़ी बहुत पत्रकारिता में मैंने पहचान बनाई है, उसके लिए उन्होंने हमेशा मेरी पीठ थपथपाई। मेरे प्रति मुक्त भाव से अपनी प्रशंसा और हर्ष को भी व्यक्त किया। डंडिया जी न केवल एक बड़े पत्रकार हैं, बल्कि वे एक बड़े दिल वाले बड़े आदमी हैं।

(लेखक बीबीसी हिंदी के पूर्व भारत संपादक हैं।)

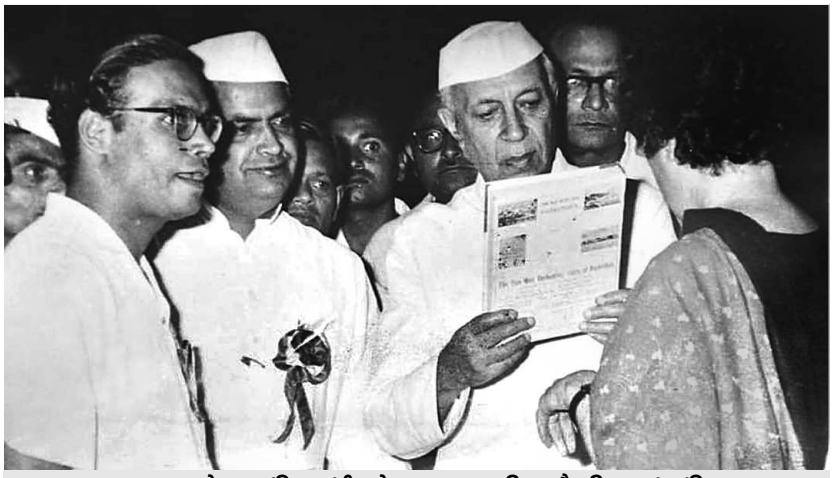

जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी, मोहनलाल सुखाड़िया और मिलापचंद डंडिया।

जयपुर के ख्याति प्राप्त डंडिया परिवार की विरासत बढ़ाने वाले मिलापचंद डंडिया अपने परिवार के साथ।

निर्भीक कर्तव्यनिष्ठा के द्योतक

राजस्थान के वरिष्ठ पत्रकार मिलापचंद डंडिया की पत्रकारिता के सात दशकों और उनकी विशेष सक्रियता के पचास वर्षों का लेखा-जोखा राजस्थान की पत्रकारिता के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण इसलिए क्योंकि डंडिया की इस यात्रा का उल्लेख किए बिना राजस्थान की खोजपूर्ण पत्रकारिता का इतिहास लिखा जाना संभव नहीं है। इने-गिने ऐसे और भी पत्रकार रहे होंगे, लेकिन उस पीढ़ी के चले जाने और उनके बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं हो पाने के कारण राजस्थान की खोजी पत्रकारिता कुछ नामों के इर्द-गिर्द ही सिमटी हुई है। डंडिया ने राजस्थान की पत्रकारिता का हर दौर देखा है और हर मुकाम पर सक्रिय दिखाई दिए हैं। यदि पत्रकार के रूप में डंडिया की खासियत उनका बेबाक लेखन है तो हमेशा सक्रिय रहना उनकी सबसे बड़ी पूंजी रहा है।

मैंने डंडिया को 1985 से देखना शुरू किया। उस समय खोजी पत्रकार के रूप में एक ही नाम चर्चित था विश्वास कुमार का, जो राजस्थान पत्रिका के मुख्य संवाददाता हुआ करते थे। राज्य प्रशासन उनके नाम और खबरों को लेकर सावधान रहा करता था, लेकिन उस दौर में तत्कालीन मुख्य सचिव आनंद मोहन सक्सेना का इस्तीफा महत्वपूर्ण घटना थी और उस खबर के लिए डंडिया ने खासी प्रतिष्ठा अर्जित की थी। डंडिया ने यह खबर मूलतः राजस्थान पत्रिका में लिखी थी और आगे चलकर प्रतिपक्ष के नेता भैरोंसिंह शेखावत ने इसे विधानसभा में मुख्य मुद्दा बनाया तथा राजस्थान में मुख्य सचिव जैसे महत्वपूर्ण पद पर बैठे व्यक्ति को भी इस्तीफा देना पड़ा। डंडिया सुसभ्य एवं प्रतिष्ठित पत्रकार रहे हैं और उन्हें कभी स्वाभिमान से समझौता करते नहीं देखा गया। उन्होंने जो कुछ लिखा, पूरा जोर लगाकर दम से लिखा और किसी विषय को लेकर अगर ठन गई तो बस ठन गई... फिर कभी हथियार नहीं डाले। लगभग हर मुख्यमंत्री से उनके व्यक्तिगत संबंध रहे, लेकिन भैरोंसिंह शेखावत संभवतः उनके सबसे पसंदीदा मुख्यमंत्री रहे और यह उन्होंने अपनी पुस्तक 'मुखौटों के पीछे' में छुपाया भी नहीं है।

डंडिया की एक तिहाई पत्रकारिता का मैं साक्षी हूं। यह कोई योग रहा कि मैंने राजस्थान पत्रिका में जमना शुरू किया, तब तक विश्वास कुमार का पत्रिका से संबंध विच्छेद होना शुरू हो चुका था। डंडिया लगातार सक्रिय रहे। वे चूंकि देश की लब्ध प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में लिख रहे थे, इसलिए राजस्थान पत्रिका की खबरों से उनका मुकाबला तो हो सकता था; लेकिन नित-नूतन विषयों पर गहराई से जाकर आधुनिक तरीके से लिखने वाले किसी वरिष्ठ पत्रकार पर नजर ठहरती तो वे डंडिया ही रहे। उस दौरान नवभारत टाइम्स और टाइम्स ऑफ इंडिया ने पत्रकारों की नई मजबूत खेप भी उतारी, लेकिन उनकी उपस्थिति प्रसार संख्या नहीं होने से एनडीटीवी टाइप थी। हां, कुछ पत्रकारों ने जरूर मजबूती से पैर जमाए और अपनी जगह बनाने में कामयाब हुए। दरअसल, राजस्थान में पत्रकारिता के दौर का क्रमवत विकास हुआ है और डंडिया विकास के हर सोपान पर कुछ-न-कुछ ग्रहण करते हुए आगे बढ़े हैं। वे 70-75 वर्ष की उम्र तक किसी युवा पत्रकार को विधा और

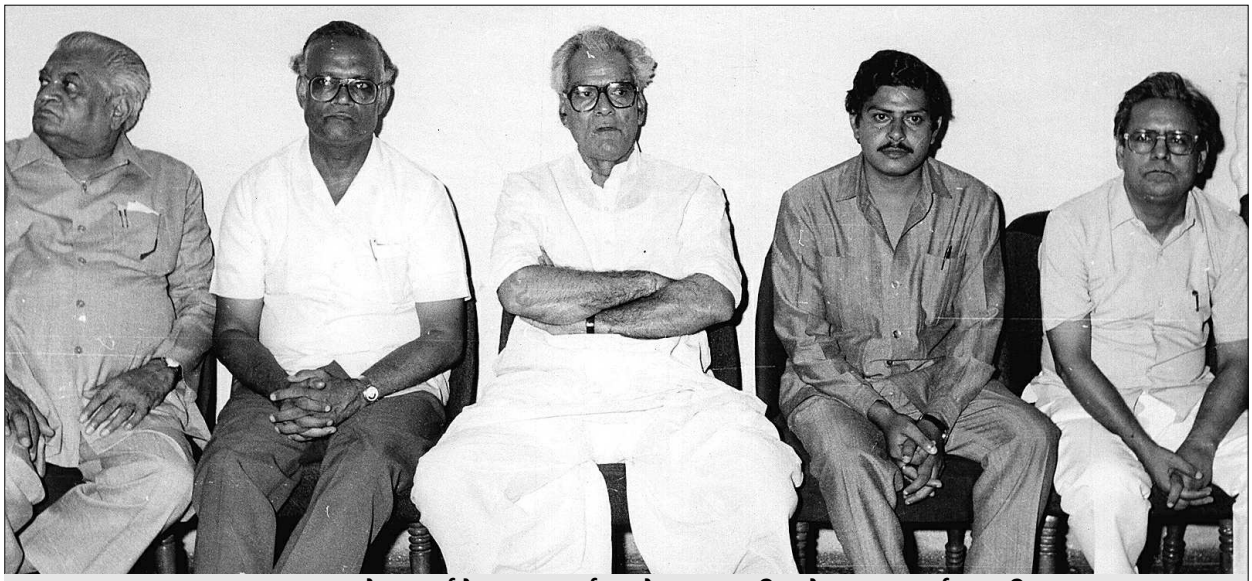

2 अक्टूबर, 1990: गोपाल शर्मा के सम्मान कार्यक्रम में राजस्थान पत्रिका के संस्थापक कर्पूरचंद्र कुलिश, वरिष्ठ पत्रकार मिलाचंद डंडिया, मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत और नवभारत टाइम्स के संपादक राजेन्द्र माथुर।

मिलापचंद डंडिया के 90 वर्ष पूर्ण करने के अवसर पर अभिनंदन..
राजेन्द्र बोड़ा, अनिल लोढ़ा, डॉ. यश गोयल, संजीव श्रीवास्तव, अशोक चतुर्वेदी, गोपाल शर्मा, सनी सेबेस्टीयन, महेशचंद्र शर्मा, विनोद भारद्वाज, डॉ. राजन महान और अनिल चतुर्वेदी।

कौशल के लिहाज से पछाड़ने की स्थिति में दिखाई देते थे तो यह उनकी विकास यात्रा का उज्जवल स्वरूप रहा तथा वे हर दौर में ऐसे ही दिखाई दिए।

खोजी पत्रकारिता के लिहाज से राजस्थान ने दिल्ली का अनुसरण करने की कोशिश की है और राजस्थान विधानसभा में भैरोंसिंह शेखावत को तार्किक ढंग से किसी विषय को प्रस्तुत करता हुआ देखकर पत्रकारों ने भी बहुत कुछ सीखा है। करीब तीन-चार दशक पहले एक ऐसा दौर भी चला जब ऐसी बहुत सी खबरें हुआ करती थीं, जो छपें चाहे किसी समाचार पत्र में, लेकिन उनका स्रोत शेखावत ही हुआ करते थे। खोजी पत्रकारिता ज्यों-ज्यों समृद्ध हुई, इन हालात में परिवर्तन आते रहे। 1990 के बाद से आज तक यह स्थिति बनी हुई है कि अधिकांश महत्वपूर्ण खबरें पत्रकार अपने तरीके और परिश्रम से तैयार करते हैं तथा बाद में राजनेता उन खबरों को उठाते हैं। निजाम के जेवरातों और एम. चेन्ना रेड्डी के बारे में डंडिया की खबरें व्यापक महत्व वाली रहीं। ऐसे ही डंडिया की अत्यंत महत्वपूर्ण खबरों में या कहें कि प्रमुख दो-चार खबरों में सूपा कांड भी है। इसका विषय कांग्रेसी विधायक ब्रजेंद्र सिंह सूपा के परिवार में नवजात कन्याओं को मारा जाना था। डंडिया ने 'रविवार' पत्रिका में इस विषय को प्रमुखता से उठाया था। यह विषय देश भर में काफी चर्चित रहा। संयोग यह रहा कि डंडिया की लिखी इस खबर की पड़ताल करने, तथ्य जुटाने और गहराई में जाने का मौका मुझे मिला। तब तक वह दौर आ चुका था, जब खबरें सिर्फ सूचना देने के लिए नहीं होती थीं। महत्वपूर्ण खबरों को तथ्यों से ओतप्रोत करके इस सलीके से प्रस्तुत करना पड़ता था, जिससे वे अपनी विश्वसनीयता के साथ-साथ सबूत पेश करती चलें। तब तक ज्यादातर वरिष्ठ पत्रकार चुकते जा रहे थे, लेकिन डंडिया तब भी पूरी तरह से जागरूक और सक्रिय थे।

डंडिया ने अपने संस्मरणों में राजनीतिक विश्लेषक के रूप में किसी खबर का जिक्र भी नहीं किया है, वे मुख्यतः भ्रष्टाचार और समाज की कमियां उजागर करने वाले पत्रकार के रूप में केंद्रित रहे तथा पूरे दम-खम से सक्रिय रहे। वे इस मायने में भाग्यशाली रहे कि उन्हें देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में काम करने का मौका मिला, लेकिन यह डंडिया की काबिलियत है कि उन्होंने अपने को उस लायक बनाया। राजस्थान के जैन समाज ने पत्रकारिता की जो सेवा की है, वैसा उदाहरण किसी अन्य राज्य में नहीं मिलता। इस संदर्भ में राजस्थान की घटनाओं को देश से जोड़ने का काम करने वालों में डंडिया अग्रणी हैं। डंडिया और उनकी खबरों के बारे में पढ़ते समय हमें उस दौर में जाना होगा, जब आधुनिक पत्रकारिता का स्वरूप विकसित हो रहा था और साधन सीमित थे; ज्यादातर प्रमुख लोगों के एक-दूसरे से निकट के रिश्ते थे। ऐसे में डंडिया की खबरों के साथ चलना उनके गौरवशाली दौर का स्मरण कराता है और एक सक्रिय पत्रकार की निर्भीक कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देता है, जिसके कारण डंडिया को कई बार नुकसान भी उठाना पड़ा लेकिन वे कर्तव्य पथ से डिगे नहीं।

(गो.श.)

सीताराम झालानी

चलते-फिरते एनसाइक्लोपीडिया

विनोद चतुर्वेदी

सामाजिक सरोकार, अनुशासन, ईमानदारी, आस्था और राजस्थान के लिए समर्पण के पर्याय हैं सीताराम झालानी। सहयोग करना उनके स्वभाव का हिस्सा है और अनुभव-याददाश्त उनकी पूंजी है। किसी खबर विशेष में तथ्यात्मक जानकारी का उल्लेख करना हो अथवा लेख-संपादकीय में अधिकृत आंकड़ों का जिक्र करने की बात हो, पूरी प्रामाणिकता के साथ जिनके 'रेफरेंस' को विषय वस्तु में शामिल किया जा सकता है.. वे हैं सीताराम झालानी। स्वाधीनता संग्राम के दौरान घटित जयपुर रियासत की प्रमुख घटना हो या राजनीतिक-सामाजिक बदलाव का कोई प्रमुखतम घटनाचक्र, उन्हें आज भी मय तारीख-जगह पूरी तरह याद है। यही कारण है कि झालानी को पत्रकार जगत में 'चलते-फिरते एनसाइक्लोपीडिया' की उपमा दी जाती है।

30 अप्रेल, 1934 को जयपुर जिले के बगरू कस्बे में वैश्य व्यापारी परिवार में जन्मे झालानी का पत्रकारिता क्षेत्र में प्रवेश कैसे हुआ, वे स्वयं इसे आज भी आश्चर्य से कम नहीं मानते। वे खुद को 'बिना पढ़ा-लिखा पत्रकार' कहते हैं। गांव में चौथी कक्षा से आगे पढ़ाई की व्यवस्था नहीं होने के कारण उनके भाई चौथी कक्षा पास करने के बाद पुश्तैनी परचून की दुकान पर बैठने लगे तो झालानी के पास भी यही विकल्प था। लेकिन पढ़ने-लिखने की इच्छा बचपन से थी। यही लगन उन्हें बगरू से जयपुर शहर खींच लाई। 89 वर्ष में अपनी स्मृतियों को तरोताजा

करते हुए झालानी उस दौर के समाचार पत्रों की पैनी धार को बयां करने लग जाते हैं। उनके गांव में नियमित तौर पर कोई अखबार नहीं पहुंचता था, कभी-कभार 'लोकवाणी' जरूर पहुंचता था। लेकिन इसमें अपने गृह क्षेत्र बगरू की खबर नहीं दिखाई पड़ने पर उन्हें निराशा होती थी। इसी भाव ने 'भीतर के पत्रकार' को जगाया और उन्होंने लोकवाणी में समाचार भेजना शुरू किया। जब खबरें छपने लगी तो यह सिलसिला तेजी से आगे बढ़ा।

बगरू से जयपुर आने के बाद झालानी सर्वप्रथम श्री नारायण चतुर्वेदी के समाचार पत्र 'अमर ज्योति' से सक्रिय रूप से जुड़े। 1954 में वे प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रकाशन 'कांग्रेस-संदेश' में कार्य करने लगे। उसी वर्ष जब मोहनलाल सुखाड़िया राजस्थान के मुख्यमंत्री बन गए तो झालानी ने मुखपत्र के रूप में एक अखबार शुरू करने की इच्छा व्यक्त की। इस क्रम में 22 फरवरी, 1955 से 'दैनिक नवयुग' का प्रकाशन शुरू हुआ, लेकिन कुछ ही सालों में इसका प्रकाशन बंद हो गया।

उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत के साथ सीताराम झालानीः प्रफुल्लता भरे क्षण।

अखबार से जुड़े सभी पत्रकारों ने कई-कई साल बेरोजगारी का दंश झेला। इन विपरीत हालात से लंबा मुकाबला करने के बाद झालानी ने 1966 से हिंदुस्तान समाचार एजेंसी में काम किया। 1983 तक इस समाचार एजेंसी का भी नवयुग जैसा हाल हो गया। इसके बंद होने से तनख्वाह भी डूब गई। इस दरम्यान बेरोजगारी के समय कर्पूरचंद्र कुलिश ने राजस्थान पत्रिका में आने का प्रस्ताव दिया, लेकिन तब तक झालानी का मन नौकरियों से ऊब चुका था। साथ ही, मन-मस्तिष्क के अंदरखाने राजस्थान के लिए कुछ नया और रचनात्मक करने का विचार चल रहा था। इस तरह 1989 में 'राजस्थान वार्षिकी' का प्रकाशन शुरू हुआ। झालानी बताते हैंः

'तीन महीने बाद जब मैं अपने बेटे के साथ कुलिशजी के पास पहुंचा तब वे इतने अल्प समय में इस तरह के नए विचार को फलीभूत देखकर चकित रह गए। राजस्थान वार्षिकी को हमने ऑफसेट में छपवाने के लिए उनसे मदद मांगी। इस पर कुलिशजी ने तुरंत अरावली प्रेस, दिल्ली को फोन किया और घर का काम बताते हुए मुनाफा नहीं लेने का निर्देश दिया। राजस्थान वार्षिकी प्रतियोगी परीक्षाओं, सिविल सेवा परीक्षाओं के अभ्यर्थियों के लिए ऐसी अनूठी रेफरेंस बुक के रूप में सामने आई, जिसके सहारे हजारों बेरोजगार कंपीटिशन में सफल होकर आज विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएं दे रहे हैं। लेकिन राजस्थान के लिए इस नायाब संदर्भ ग्रंथ को आर्थिक विषमताओं के कारण आगे बढ़ा पाना संभव नहीं हुआ। राज्य सरकार के उदासीन रवैये ने भी इसमें बड़ी भूमिका निभाई और आखिरकार भारी मन से प्रकाशन बंद करना पड़ गया।'

बगरू ग्राम पंचायत के सरपंच, नगरपालिका के अध्यक्ष सहित विभिन्न पदों पर रहकर जनसेवा को अपना धर्म मानने वाले सीताराम झालानी उम्र के आखिरी पड़ाव में भी खुद को सक्रिय बनाए हुए हैं। यह उनकी जीवटता का प्रमाण है कि शारीरिक अस्वस्थता के बाद भी वे आज भी घर पर आठ-दस

सीताराम झालानी को सम्मानित करतीं राज्यपाल प्रतिभा पाटील।

अखबार मंगवाकर बारीकी से एक-एक अखबार को पढ़कर उनमें से महत्वपूर्ण कटिंग्स निकालते हैं, उनका रेफरेंस तैयार करते हैं। शास्त्री नगर स्थित ओंकार श्री अपार्टमेंट में उनके निवास से ज्यादा परिसर में स्थापित कार्यालय इस कलमनवीस के श्रम साध्य से भरी अलमारियां इसकी गवाह हैं कि पत्रकार कभी थकता नहीं, रुकता नहीं.. वह हमेशा 'चरैवेति-चरैवेति' का अनुसरण करता आगे बढ़ता जाता है।

मौजूदा दौर में पत्रकारिता और अखबार मालिकों की विशुद्ध व्यापारिक सोच इन बुजुर्गवार कलमनवीस को नैराश्य भाव में ले जाती है। उद्वेलित होकर झालानी कहते हैं, 'आज पत्रकारों की स्थिति बहुत विचित्र हो गई है। अखबार इंडस्ट्री और उसमें कार्यरत पत्रकार इस उद्योग के उत्पाद का सेल्समैन हो गया है। अहंकार की पराकाष्ठा पार करते हुए वे समझते हैं कि सरकार उनके ही दम पर चल रही है और गिरेगी भी उनके दम पर। आज जिस तरह से बड़े-बड़े स्कैंडल में ख्यातनाम पत्रकारों के नाम सामने आने लगे हैं, उससे तो खुद को पत्रकार कहने में भी संकोच होने लगा है।'

मूल्यों से भटकती जा रही पत्रकारिता में सिद्धांत और वचनबद्धता की बातें जिस तरह गौण हो गई हैं, उससे झालानी बहुत असहज महसूस करते हैं। वे इस बात से चिंतित हैं कि नए पत्रकार 'कॉपी-पेस्ट' का शॉर्टकट अपना रहे हैं और गंभीर अध्ययन के बजाए 'गूगल सर्च' की फौरी तकनीक पर आश्रित हो रहे हैं। समाचार पत्र की साख का उदाहरण देते हुए झालानी कहते हैं, 'देश का प्रतिष्ठित अखबार हुआ है 'आज'। जो प्रतिष्ठा डेढ़ सौ साल में अंग्रेजी समाचार पत्र 'द हिंदू' की रही है, हिंदी में 'आज' को वही महत्व दिया जाता है। इसके संपादक थे बाबूराव विष्णु पराड़कर। वे स्वयं पत्रकारिता के प्रतिमान थे। उन शिखर संपादक ने आज से 80 साल पहले ही यह बता दिया था कि आने वाले समय में अखबारों का स्वरूप बदलेगा, अखबारों के आकार बढ़ जाएंगे, साज-सज्जा बेहतर होगी, पाठक वर्ग भी बढ़ेगा और मुनाफा भी.. लेकिन तब उन अखबारों में संपादक की आत्मा कहीं नहीं होगी। मौजूदा दौर में जब अखबार और पत्रकारिता को देखता हूं तो पराड़कर के शब्द स्मृति पटल पर तैरते हुए नजर आते हैं।'

सिद्धांतवादी पत्रकारों और अखबारों का क्या महत्व रहा है और

उनसे सत्ता प्रतिष्ठान किस हद तक भयभीत रहते थे, इस संदर्भ में झालानी 1951 में शुरू हुए प्रदेश के पुराने समाचार पत्र 'राष्ट्रदूत' के संस्थापक पं. हजारीलाल शर्मा का भी जिक्र करना नहीं भूलते। उनकी कद-काठी, बुलंद आवाज और और कलम की ताकत उन्हें दूसरों से अलग पायदान पर खड़ा करती थी। झालानी कहते हैं कलकत्ता में कमाने-खाने गए हजारीलाल शर्मा ने सत्ता-प्रतिष्ठानों को अपनी धमक का अहसास करवाने के लिए जयपुर से राष्ट्रदूत समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू किया। कर्पूरचंद कुलिश ने भी सीआईडी में सरकारी बाबू की नौकरी छोड़कर राष्ट्रदूत में बतौर रिपोर्टर काम किया। मूलतः जयपुर जिले की कोटपूतली तहसील के गांव कांसली के निवासी शर्मा देश के पहले आम चुनाव में कोटपूतली से स्वतंत्र प्रत्याशी के रूप में निर्विरोध विधायक चुन लिए गए। इस तरह उस दौर में पत्रकारों का महत्व स्थापित करने में राष्ट्रदूत ने सजग भूमिका निभाई।

पिंक सिटी प्रेस क्लब में वर्षों तक निर्बाध गति से मुख्य निर्वाचन अधिकारी के रूप में चुनाव संपन्न करवा चुके झालानी क्लब के मौजूदा हालात से निराश हैं। वे कहते हैं, 'देश-दुनिया के पत्रकारों को पत्रकारिता की जुबानी जाना, लेकिन आज वो सब कहां! पत्रकारों के संगठन बौने हो गए हैं। प्रेस क्लब भी उद्देश्य से भटकता नजर आ रहा है।'

जीवन के 88 बसंत पूरे चुके झालानी इस पड़ाव पर कोई खास चाह नहीं रखते, सिर्फ दो बातों को छोड़कर। वे पत्रकार जगत की त्रिमूर्ति कर्पूरचंद कुलिश, डोरेलाल अग्रवाल और लाभचंद छजलानी पर वृहद त्रदी लिखने की तमन्ना रखते हैं। उनका कहना है, 'ये तीनों ऐसी शख्सियत हैं, जिन्होंने फर्श से अर्श तक का सफर

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से सम्मान प्राप्त करते हुए।

अखबारी दुनिया में तय किया है। इन्होंने पत्रकारिता को जो पहचान दी है, वह अकल्पनीय है। युवा पीढ़ी को इनके संघर्ष से प्रेरणा लेनी चाहिए।'

इसके अलावा झालानी को राज्य सरकार से ऐसे संस्थान की अपेक्षा है, जहां राजस्थान से संबंधित हर पुस्तक उपलब्ध हो। वे कहते हैं, 'मेरे जैसे बहुत से लोग हैं, जिनके पास राजस्थान पर अथाह सामग्री है। हम दुनिया से जाने से पहले अपनी इस ज्ञान पूंजी को उस संदर्भ संस्थान को दे जाएं तो इससे ज्यादा सुकून की बात और क्या होगी! राज्य सरकार ऐसा कुछ कर सके तो राजस्थान को विश्व पटल पर अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।'

सामाजिक सरोकारों से लेकर पत्रकारों के घरों की चिंता करने वाले झालानी के सहयोग से अनेक युवा न केवल पैरों पर खड़े हुए, बल्कि न्यायाधीश और मुख्य सचिव के पदों तक पहुंचे। अपने सक्रियता काल में झालानी ने सदैव ध्यान रखा कि किन साथियों की क्या मदद करके उनके काम को आसान बनाया जा सकता है। पत्रकारों को घर बनाने के लिए प्रेरित करने से लेकर समाचार पत्रों की सहायता करने और पत्रकारों के परिवारों तक सहायता पहुंचाने में माध्यम की भूमिका निभाने में वे सदैव आगे रहे।

90 वर्ष पूर्ण करने के निकट पहुंच रहे झालानी घुटनों के दर्द और लगभग एक साल से निरंतर अस्वस्थता के बाद भी कई घंटों तक अध्ययन और समाचार पत्र पठन से अलग नहीं हुए हैं। अब भी उनकी चिंता रहती है कि किसी भी समाचार पत्र में कोई गलती प्रकाशित नहीं हो। वे समाचार पत्र से सम्पर्क करके उसको ध्यान भी दिलवाते हैं।

(लेखक जयपुर महानगर टाइम्स के समाचार संपादक हैं)

श्याम आचार्य

द्रोणाचार्य के साथ दो कदम

महेशचंद्र शर्मा

वास्तव में श्याम जी भाई साहब यानी श्यामसुंदर आचार्य पत्रकारिता के द्रोणाचार्य थे। उन्होंने न केवल स्वयं राजस्थान की पत्रकारिता में विशिष्ट योगदान दिया बल्कि दर्जनों ऐसे पत्रकारों को तराशा, जिन्होंने पत्रकारिता की विभिन्न विधाओं में कई आयाम स्थापित किए हैं। उन्होंने पत्रकारों के साथ-साथ कई लेखकों को भी गढ़ने का काम किया। मेरा भी परम सौभाग्य रहा कि उनका स्नेहसिक्त मार्गदर्शन जीवनपर्यंत मिला।

पश्चिम बंगाल में 'श्यामदा' के नाम से मशहूर इस शख्सियत का न सिर्फ पत्रकारिता में, बल्कि साहित्य के क्षेत्र में भी पूरा दखल रहा है। उनका काव्य संग्रह 'अंतर्दृष्टि' प्रकाशित हुआ, जो उनके जीवन दर्शन का एक आईना है। इसमें उनके संघर्ष, अनुभूतियों, भावनाओं, कल्पनाओं और यथार्थ का चित्रण है। सिर्फ यही नहीं, बड़े राजनीतिज्ञों और अफसरों के हास-परिहास तथा व्यंग्य से जुड़ी स्मृतियों का विशिष्ट संग्रह 'तेरा तुझको अर्पण' अपने आप में एक अनूठा प्रयास है। संभव है कि आने वाले दिनों में उनकी आत्मजा सीमा उनकी कुछ अन्य रचनाओं को छांटकर कोई और पुस्तक प्रकाशित करा दें। लंबे अर्से तक संपादक रहने के बावजूद उन्होंने विभिन्न समाचार पत्रों में कई कॉलम निरंतर लिखे। राष्ट्रदूत में 'कुतुब मीनार से', दैनिक नवज्योति में 'सचिवालय के कोने से', दैनिक भास्कर में 'ऑफ द रिकॉर्ड', दैनिक जलते दीप में

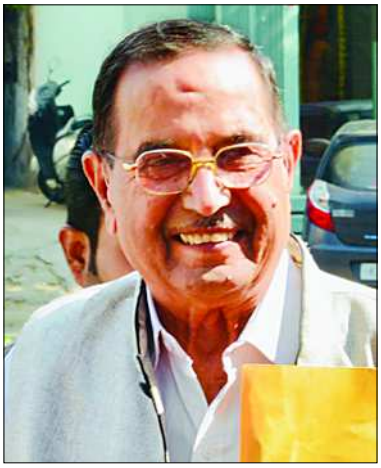

'बतरस' जैसे उनके कॉलम काफी लोकप्रिय रहे। पत्रकारिता में दिए योगदान पर उन्हें माणक पुरस्कार, तिलक पत्रकारिता पुरस्कार, झाबरमल शर्मा पुरस्कार जैसे कई बड़े पत्रकारिता सम्मानों से नवाजा गया।

आचार्य के कुछ निकटवर्ती लोग ही उनकी एक विशेष विधा से भी परिचित थे। उन्हें अनेक गायकों के गाए पुराने गाने और शायरों की गजलें और प्रसिद्ध कवियों की कविताओं को सस्वर सुनाने का शौक था। अस्सी साल की उम्र के बावजूद उनकी स्मरणशक्ति गजब की थी। राजस्थानी कहावतों और मुहावरों के प्रयोग में भी वे सिद्धहस्त थे। नेताओं और अपने निकट संबंधियों के बोलने के अंदाज की मिमिक्री का प्रस्तुतिकरण उनके हास्य-व्यंग्य में पटु होने का प्रमाण था। अपनी मृत्यु से एक माह पूर्व तक उनका यह क्रम जारी रहा।

सहज, मृदु और स्नेहिल स्वभाव की वजह से आचार्य सबके प्रिय थे। कोई भी व्यक्ति जीवन में उनसे एक बार मिल लेता तो वह उन्हें कभी नहीं भूल

पाता था। फिर निरभिमानी और शालीन व्यक्तित्व के तो कहने ही क्या? लगभग छह फुटा कद, हृष्ट-पुष्ट काया, सादा और ईमानदार जीवन हर किसी को अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। वे जितने अपने स्नेहिल लोगों में प्रिय थे, उतने ही अपने विरोधियों के बीच भी लोकप्रिय रहे। हताश और निराश व्यक्ति में फिर से उम्मीद जगाकर उसे नई ऊर्जा से भर देते थे। अपनी टीम का विपरीत समय में मनोबल बढ़ाने में उनका कोई सानी नहीं था। उनके संपादकीय काल में जयपुर नवभारत टाइम्स में 1989-90 के दौरान छह माह की तालाबंदी हुई थी। उस दौरान आचार्य ने निराश और चिंतित अपने सहयोगियों को नियमित कर्तव्य में जुटाए रखा। निराशा और चिंता के भावों को वे अपने हास्य-व्यंग्य के किस्सों से हल्का कर दिया करते थे। उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा की वजह से ही अनेक पत्रकारों ने सुदीर्घ और यशस्वी यात्रा का सुयोग पाया।

7 जुलाई, 1938 को जैसलमेर में जन्मे आचार्य की विद्यालयी शिक्षा जैसलमेर में हुई। श्रम विभाग में गेम्स सुपरवाइजर और अकाउंटेंट पद पर काम किया। लेकिन वहां घपलेबाजी से परेशान होकर उन्होंने नौकरी छोड़ दी। हिंदुस्तान समाचार एजेंसी में 1956 से पत्रकारिता की शुरुआत की। शुरुआत जयपुर से अपराध से संबंधित समाचारों के संकलन से हुई। नीम का थाना में चोरों के एक गिरोह की गिरफ्तारी का एक्सक्लूसिव समाचार देने पर उनकी पहचान बनी। हल्दीघाटी के पांच सौवीं जयंती समारोह को विशिष्ट तरीके से कवर किया। मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया के कार्यकाल में हुए गोलीकांड में कुल मृतकों की संख्या जानने के लिए कर्फ्यूग्रस्त क्षेत्र में वे वेश बदलकर हिम्मत के साथ कवरेज करने पहुंचे। नौकरी करते हुए ही उन्होंने स्नातक तक अपनी पढ़ाई पूरी की।

उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी से बापूराव लेले सम्मान ग्रहण करते श्याम आचार्य।

हिंदुस्तान समाचार के कार्यकाल के दौरान ही उनका कोलकाता में तबादला हुआ। वहां उन्होंने बांग्ला भाषा सीखी। बाद में इसी समाचार एजेंसी में उन्होंने जयपुर और दिल्ली में ब्यूरो प्रमुख का दायित्व भी वहन किया। उप महाप्रबंधक एवं संपादक पद का निर्वहन भी किया। युद्ध संवाददाता के रूप में भी उन्होंने अपने जौहर दिखाए। 1962 में भारत-चीन, 1965 में पश्चिम बंगाल की सीमा पर भारत-पाक युद्ध और 1971 में बाड़मेर में भारत-पाक युद्ध का कवरेज किया। शहीद सागरमल गोपा पर लेख, कहानी, फीचर और मोनोग्राफ भी लिखे। उनका काव्य संग्रह 'अंतर्दृष्टि' उनके जीवन पर बहुत कुछ प्रकाश डालता है। राजस्थान के राजनीतिक इतिहास में राजनेताओं और अफसरों के विभिन्न अवसरों पर कहे-सुने प्रसंगों को लेकर की गई रचना 'तेरा तुझको अर्पण' के जरिए उन्होंने पाठकों को मुस्कुराने, गुदगुदाने और हंसने के लिए मजबूर किया।

करीब पांच दशक तक उन्होंने हिंदुस्तान समाचार, नवभारत टाइम्स, जनसत्ता और दैनिक नवज्योति में संपादक पद के दायित्वों का निर्वहन किया। उनमें काम करने की अद्भुत क्षमता थी। रोज सुबह दस बजे से रात ग्यारह बजे तक वे युवा पत्रकारों की तरह अपना दायित्व वहन करते रहे। संपादक पद के दायित्व निर्वहन के साथ-साथ विशेष समाचारों, कॉलम, समसामयिक विषयों पर उनकी कलम निरंतर चलती रहती। संवाददाताओं की रोज होने वाली बैठकों में वे अक्सर नियमित समाचार संकलन करने के साथ उनसे जुड़े माहौल और विशिष्ट कोण से रिपोर्टिंग करने पर लगातार जोर देते रहते। वे मार्गदर्शन किया करते, 'पत्रकारिता ऐसा क्षेत्र है, जहां खुद को ही अपनी राह बनानी होती है। संवाददाता को अपनी बीट, उससे जुड़े महकमों के कामों, संबंधित अधिकारियों या समाचार स्रोतों से बेहतर संबंध बनाने जरूरी होते हैं। इसके लिए जरूरी यह है कि हम ऐसा व्यवहार रखें ताकि स्रोत से संबंध विच्छेद नहीं हो। स्रोत को यह अहसास नहीं होना चाहिए कि पत्रकार उससे कोई लाभ लेने का प्रयास कर रहा है'।

वे अपने काल की और वर्तमान पत्रकारिता के क्षेत्र में आए बदलावों को बताते। मिशन और व्यावसायिक दृष्टिकोण के बावजूद बीच का रास्ता निकालते हुए पत्रकारिता धर्म का

पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री सिद्धार्थशंकर राय से रूबरू श्याम आचार्य।

निर्वहन करने को प्रेरित करते रहते। खोजपूर्ण रिपोर्टिंग के गुर सिखाते। संवाददाताओं को सदैव अपने आंख, कान और दिमाग खुला रखने तथा जनता के सुख-दुख की खबरों को अधिक तवज्जो देने की सलाह दिया करते। एक्सक्लूसिव खबरों को लाने के समसामयिक विषय स्रोत बताते, उनको प्रस्तुत करने में मार्गदर्शन भी करते। वे अक्सर कहा करते थे, 'पत्रकारिता तो ऐसा लोटा है, जिसे हर रोज मांजना होता है.. तभी हम इसकी चमक को बरकरार रखते हुए खुद चमकेंगे।' उनका मानना था, 'शब्द ब्रह्म होता है। इस ब्रह्म की हमें सदैव साधना करनी चाहिए। अखबार हमारे लिए श्रीमद्भागवत है। इसके हर अध्याय का निरंतर पाठ करने और नई-नई सूचनाओं तथा विचारों को ग्रहण कर हमें सत्य की ओर बढ़ाना चाहिए। हमारी भावनाएं सर्व जन कल्याण और उनको न्याय दिलाने की होनी चाहिए, तभी हम लोकतंत्र के इस चौथे स्तंभ को मजबूत कर पाएंगे।'

भाषा के प्रति वे हमेशा संवेदनशील बने रहे। मौजूदा युग में हिंदी के अखबारों में युवा वर्ग के लिए शुरू किए गए विशेष परिशिष्टों में अंग्रेजी शीर्षक लिखने, खिचड़ी भाषा का प्रयोग उन्हें नहीं सुहाता था। वे समाचारों में सरल और बोलचाल की भाषा के इस्तेमाल करने की पैरवी करते रहे। युवा पीढ़ी में भाषा के अल्पज्ञान को लेकर उन्हें काफी कोफ्त होती और चिंतित भी रहते थे। पत्रकारों के ईमानदार और चरित्रवान बनने पर आचार्य सदैव जोर देते। कर्तव्यनिष्ठा से मेहनत के साथ काम करते रहने की सलाह देते। वे न सिर्फ संवाददाताओं की मीटिंग लेते, बल्कि विभिन्न डेस्कों पर काम करने वाले उपसंपादकों की भी बैठक लिया करते। डेस्क कार्य के अतिरिक्त उन्हें अपने रुचिकर विषयों पर लेख या अन्य रचनाएं लिखने के लिए भी प्रेरित किया करते थे। क्षेत्र चाहे खेल का हो, वाणिज्य का हो या व्यापार और व्यवसाय का.. संबंधित विषय से जुड़े प्रतिवेदन, रिपोर्ट्स आदि सुलभ कराने में वे पीछे नहीं रहते। प्रादेशिक डेस्क के प्रति वे काफी सतर्क रहते थे। वे सदैव क्षेत्रीय पत्रकारिता के सशक्त पैरोकार रहे। वहीं जिला स्तर से लेकर कस्बे, गांव ढाणी के संवाददाताओं से अपना निरंतर संपर्क बनाए जाने के साथ उन्हें समय-समय पर आवश्यक निर्देश देना नहीं भूलते।

पत्रकारिता के आरंभिक दिनों में राष्ट्रदूत समाचार पत्र में रिपोर्टिंग करते समय मैंने अपने कई मित्र-सहयोगियों से आचार्य का नाम बड़े सम्मान के साथ कई बार सुना था। लेकिन उनसे मिलने का संयोग नई दिल्ली स्थित जनसत्ता कार्यालय में वर्ष 1981 दौरान ही हो पाया। इस इत्तेफाक से पूर्व हमारी बात दूरभाष पर ही हुआ करती थी, जब वे दिल्ली में राष्ट्रदूत के विशेष संवाददाता के रूप में कार्यरत थे। जब कभी दिल्ली स्थित कार्यालय में टीपी ऑपरेटर नहीं आ पाता था या देर रात उन्हें कोई समाचार दूरभाष के जरिए लिखाना होता था, तब उनकी दरकार रहती थी कि महेश शर्मा से बात कराइए। मैंने उनकी खबरों और कॉलम को दूरभाष से लिखकर समाचार बनाने और स्तंभ लिखने की कला सीखी। इसी प्रेरणा से मैं दैनिक नवज्योति में अपने कार्यकाल में 'खामोश खबर' और 'विधानसभा के गलियारे' स्तंभ लिख पाया।

एक बात और। 2000 में जब मेरे दिल की बाई पास

अस्पताल में लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार ग्रहण करते श्याम आचार्य। उपस्थित वीर सक्सेना, मिलापचंद डंडिया, वशिष्ठ कुमार, फारूख आफरीदी, महेशचंद्र शर्मा, लक्ष्मण बोलिया, एस.एस. बिस्सा, अरूण जोशी, अभय जोशी, मुकेश चौधरी, शैलेश आचार्य, जितेन्द्र शर्मा, मूमल राजवी।

सर्जरी हुई तो मुझे चिकित्सकों ने दुपहिया वाहन चलाने के लिए मना किया। ऐसे में मुझे दफ्तर जाने में जब परेशानी हुई तो वे संपादक होने के बावजूद रोज मुझे अपने घर से अपनी कार से लाते और फिर घर छोड़ते। यह उनके बड़प्पन का एक बड़ा उदाहरण है। उनका जीवन सादा और ईमानदारी भरा था। पांच दशक तक संपादक पद के निर्वहन के बावजूद मानसरोवर आवास योजना में उनके पास अपना मात्र 7 गुणा 15 मीटर का आवास था। वह भी तेरह साल की किस्तों में। हमारे पारिवारिक संबंध रहे। हमारी थोड़ी-सी भी तकलीफ सुनकर वे अपना खाना बीच में छोड़कर मदद के लिए दौड़ पड़ते थे। यह किसी बड़े ओहदे तक पहुंचे सहृदय, परदुख कातर इंसान का ही साक्षात प्रमाण है। भले ही आधी रात हो, कैसी भी परिस्थितियां हों, उनकी मदद की भावना से उनके सहयोगी ही नहीं बल्कि पड़ोसी और जान-पहचान वाले भी कायल रहे हैं। उनके परिवार के सदस्यों में भी यह विशिष्ट गुण रहा है।

अस्वस्थता से पूर्व आचार्य के जीवन के अंतिम तेरह वर्ष बड़े दारूण कष्टों में व्यतीत हुए। बारह वर्ष पूर्व बड़े पुत्र भारतभूषण और कुछ दिनों बाद छोटे भाई को पक्षाघात हुआ। कुछ समय बाद ही भाई घनश्याम आचार्य की मृत्यु और फिर धर्मपत्नी शांति देवी का निधन हो गया। लंबे अर्से तक अस्वस्थता से घिरे भारत भूषण भी चल बसे। अपने जवान बेटे की मौत का असीम कष्ट भी भोगा। दूसरा छोटा पुत्र शैलेष भी अस्वस्थता का शिकार हो गया। अपनी मृत्यु से छह माह पूर्व तक वे खुद गंभीर रोग से जूझते रहे। अंत में 11 मई, 2019 को उन्होंने अपनी देह त्याग दी। अस्वस्थता के दौरान उनसे अस्पताल में मिलने आए पूर्व भारतीय प्रशासनिक अधिकारी डॉ. डी.आर. मेहता ने उनसे पूछा कि अच्छे व्यक्तियों को कष्ट क्यों होता है? आचार्य का दार्शनिक जवाब था, 'इसका उत्तर तो भगवान बुद्ध और महावीर ही दे सकते हैं या आप बता दें।' अस्वस्थता के दौरान वे किस पीड़ादायक स्थिति में थे, इसे 'अंतर्दृष्टि' की इन पंक्तियों से आंका जा सकता हैः

प्राण अब इस देहरी को छोड़ रे!
रोग की गठरी बनी जो,
पीड़ की नगरी बनी जो
मोह में ही नित उलझकर,
क्षीण कृश ठठरी बनी जो
फिर भी तू इसमें बसा है
मोह बंधन तोड़ रे!

(लेखक दैनिक नवज्योति, जयपुर के पूर्व संपादक हैं)

महानगर.. वह चुनौतीपूर्ण दौर

23 नवम्बर, 1997 को जयपुर के बिड़ला सभागार में महानगर टाइम्स की बुनियाद रखी गई। लोकार्पण समारोह में तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष पी.ए. संगमा, मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत, देश के ख्यातनाम पत्रकार प्रभाष जोशी, विधानसभा अध्यक्ष शांतिलाल चपलोत, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अशोक गहलोत और प्रदेश भाजपा अध्यक्ष रघुवीर सिंह कौशल मंचासीन अतिथि थे। बिना किसी धन-संपत्ति या आश्वासन के समाचार पत्र की शुरुआत करने जा रहे संस्थापक गोपाल शर्मा ने विश्वास व्यक्त किया कि देव-दुर्लभ साथियों के सहयोग और समर्पण भाव से पत्रकारिता क्षेत्र में नया अध्याय रचने का प्रयास करेंगे। मुख्यमंत्री शेखावत ने कम पूंजी को लेकर चिंता जताई। संगमा ने भी एक समाचार पत्र शुरू करने में आए व्यवधान के बारे में बताया। प्रभाष जोशी का कहना था कि उन्होंने कई बार ऐसा प्रयास किया, लेकिन सफल नहीं हो सके। इस तरह के माहौल के बीच राज्य के पहले 'टेबुलाइड' समाचार पत्र के रूप में महानगर टाइम्स की शुरुआत हुई। पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाशसिंह बादल की माताजी की बरसी में शामिल होने के कारण कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके अटलबिहारी वाजपेयी, देश के विद्वान राजनीतिज्ञ डॉ. मुरली मनोहर जोशी, पूर्व मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर, राजस्थान पत्रिका के संस्थापक कर्पूरचंद कुलिश और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शीर्ष कार्यकर्ता दादाभाई गिरिराज शास्त्री जैसे मूर्धन्य व्यक्तियों का भरपूर आशीर्वाद अखबार के साथ था। लीक से हटकर कुछ नया करने के पत्रकार साथियों के

महानगर टाइम्स पढ़ते श्वेताम्बर तेरापंथ के दसवें यशस्वी आचार्य महाप्रज्ञ।

जुनून और अखबार के अन्य सहयोगी स्टाफ ने बिना अपने भविष्य की चिंता किए राजस्थान पत्रिका और दैनिक भास्कर जैसे स्थापित मीडिया संस्थानों को छोड़कर महानगर टाइम्स को नई ऊंचाइयां देने के लिए खुद को पूर्ण मनोयोग से समर्पित कर दिया।

महानगर ने सिर्फ दो सिद्धांत रखे.. किसी से झुकेंगे नहीं और समाचार पत्र के कार्यालय में आने वाले किसी भी दुखी-पीड़ित को निराश नहीं लौटने देंगे। अखबार शुरू होने के महज 22 दिन बाद ही शास्त्री नगर कब्रिस्तान खाली करवाने को लेकर 15 दिसम्बर, 1997 को हुए गोलीकांड में 6 मुस्लिमों की मौत की घटना पहली चुनौती के रूप में सामने आई। तीन दिन तक कड़ाके की सर्दी के बीच महानगर रिपोर्टर्स के तथ्यात्मक और सटीक कवरेज ने बड़े समाचार पत्र समूहों को सोचने पर विवश कर दिया। आलम यह था कि कर्फ्यू के सन्नाटे के बीच रात 1.30 बजे जब एक समाचार पत्र के प्रबंधन से जुड़े वरिष्ठ अधिकारी मौके पर आए तो उनका कोई प्रतिनिधि वहां नहीं था, लेकिन 'महानगर' के जुझारू संवाददाता और फोटोग्राफर ने उन्हें घटना के तथ्यात्मक विवरण से अवगत करवाया। जिस समय

आतंकवादी संगठनों का विवरण समाचार पत्रों की प्रमुख खबरों का हिस्सा नहीं हुआ करता था, 'स्टूडेंट इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया' (सिमी) के रामगंज स्थित कार्यालय का खुलासा करके महानगर ने सजग प्रहरी की भूमिका का निर्वहन किया। आगे चलकर इस संगठन पर प्रतिबंध लगने के बाद यह इंडियन मुजाहिदीन (आईएम) के परिवर्तित रूप में सामने आया। इसी तरह, जयपुर के लिए गंभीर चुनौती बन चुके बांग्लादेशी घुसपैठियों की राष्ट्र विरोधी आपराधिक गतिविधियों से पुलिस-प्रशासन को जागरूक करने के लिए महानगर ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी। लगातार दो-तीन साल तक समाचारों की सीरीज चलाकर रेलवे स्टेशन के करीब गोपालबाड़ी कालवाड़ स्कीम की करोड़ों रुपए की सरकारी भूमि पर कब्जा जमाए बैठे घुसपैठियों को बेदखल करवाने में महानगर ने एक बार फिर से अपने राष्ट्रीय दृष्टिकोण को पुष्ट किया। इसी क्रम में अंतरराष्ट्रीय आतंककारी और बम बनाने में महारत रखने वाले अब्दुल करीम टुंडा के बारे में सर्वप्रथम महानगर ने रहस्योद्घाटन किया। आगे चलकर इस कुख्यात आतंकवादी के विदेश में पकड़े जाने के बाद देश-दुनिया को उसके घातक मंसूबों का पता चल पाया। उसके बारे में विभिन्न टीवी चैनल्स और समाचार पत्रों ने तथ्यात्मक जानकारी महानगर कार्यालय से जुटाई।

24 मार्च, 1999 को जयपुर के एसएमएस स्टेडियम में भारत-पाक के बीच क्रिकेट मैच होने जा रहा था। इसके लिए स्टेडियम की क्षमता से 16 हजार अधिक टिकट छपवाए जाने और इससे किसी बड़ी अनहोनी की आशंका का समाचार महानगर ने 20 मार्च को ही प्रकाशित कर दिया। इस पर विधानसभा में विशेषाधिकार हनन की कार्यवाही का भय दिखाया गया।

23 अक्टूबर, 2003: उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत अपने जन्मदिन पर महानगर टाइम्स कार्यालय में गोपाल शर्मा को आशीर्वाद देते।

तत्कालीन विधानसभा अध्यक्ष परसराम मदेरणा के सामने संबंधित मंत्री और गोपाल शर्मा ने अपने पक्ष रखे। माननीय अध्यक्ष ने समाचार पत्र की सजगता की तारीफ करके मंत्री को अधिकारियों द्वारा दिए गए गलत तथ्यों को लेकर कार्रवाई करने का निर्णय सुनाया।

जयपुर में तिब्बती लड़की के साथ हुई बलात्कार की घटना पर गोपाल शर्मा के 'भूल जाओ ऐ तिब्बती लड़की' शीर्षक से लिखे गए संपादकीय ने किंकर्तव्यविमूढ़ पुलिस को जहां इस शर्मनाक कृत्य के लिए अपराध बोध करवाया; वहीं, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की सख्त पहल पर अगले दिन अपराधी गिरफ्तार किए गए। इसी तरह एक कथित पत्रकार द्वारा दुष्कर्म की घटना को अंजाम देने के बाद राज्य सरकार के एक मंत्री द्वारा आरोपी को बचाए जाने के लिए अपने साथी विधि मंत्री को मुकदमा वापस लेने के लिए सिफारिशी पत्र लिखने जैसे शर्मनाक कृत्य का महानगर ने भंडाफोड़ किया। तब जाकर मुख्यमंत्री स्तर पर आगे की प्रस्तावित कार्यवाही को मुल्तवी किया गया और आरोपी को अपने किए की सजा भुगतनी पड़ी। ऐसे ही, राज्य सरकार के कुछ मंत्रियों द्वारा एक बाहुबली से रिश्वत लिए जाने के तथ्यात्मक प्रमाण सामने आने के बाद जब स्वयं को प्रभावी पत्रकारिता का पैरोकार मानने वाले समाचार पत्रों ने चुप्पी साध ली, तब महानगर ने परिणाम की चिंता किए बिना अपनी आवाज बुलंद की।

सामाजिक सरोकारों को सदैव वरीयता देने वाले महानगर ने साल 2000 में शुरू किए गए 'ऑपरेशन पिंक' के दौरान सरकार से सीधी टक्कर लेकर कलम की ताकत का अहसास करवाया। उस वक्त जब बड़े समाचार पत्रों में बुलडोलरों को माला पहनाने की फोटो छप रही थी, महानगर इसके विरोध में मुखर रूप से सामने आया।

अखबार के सभी साथियों की आपात बैठक करके गोपाल शर्मा ने निर्देशित किया कि सरकार के अन्यायपूर्ण और भेदभाव पर आधारित तुगलकी अभियान का डटकर प्रतिकार करना है। उसी दौरान पत्रकार विमलेश शर्मा ने ऑपरेशन पिंक में उजाड़े गए सोडाला के एक डेयरी बूथ संचालक के आत्महत्या कर लेने की जानकारी दी और महानगर के संवाददाता पूरे शहर में कटिबद्ध होकर सक्रिय हो गए। गोपाल शर्मा के संपादकीय 'आंखें खोलिए गहलोत साहब' ने ऑपरेशन की अगुवाई कर रहे अफसरों को पैर पीछे खींचने पर विवश कर दिया। अखबार की सजग प्रहरी की भूमिका के बाद जयपुर की जनता सड़कों पर उमड़ पड़ी और लोगों में भरे आक्रोश को सरकार नजरअंदाज नहीं कर सकी। महानगर की इस भूमिका ने शहर के सभी सामाजिक, स्वयंसेवी संगठनों और राजनीतिक दलों को इतना संगठित कर दिया कि सरकारी डायनासोर फिर कभी किसी गरीब मजलूम का आशियाना नहीं उजाड़ पाए।

पाकिस्तानी सेना और घुसपैठियों के साथ कारगिल में हुए युद्ध के दौरान महानगर एक अलग भूमिका में नजर आया। देश के लिए सर्वोच्च बलिदान करने वाले अमर शहीदों की स्मृतियों को अक्षुण्ण रखने के लिए महानगर ने जयपुर के प्रमुख नागरिकों के साथ अभियान चलाया। कारगिल शहीदों के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग से समर्पण निधि एकत्रित की गई। 30 अप्रेल, 2000 को बिड़ला सभागार में महानगर टाइम्स की ओर से आयोजित 'कारगिल शहीद समर्पण समारोह' एक ऐसा अनूठा एवं अद्वितीय आयोजन बन गया, जिसमें हर जयपुरवासी ने खुद शहीद परिवारों के गर्व की अनुभूति महसूस की। तत्कालीन रक्षा मंत्री जसवंत सिंह, राज्यपाल अंशुमान सिंह, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, नेता प्रतिपक्ष भैरोंसिंह शेखावत, केंद्रीय मंत्री सुभाष महरिया, राज्य सैनिक कल्याण मंत्री डॉ. चंद्रभान की उपस्थिति में राजस्थान के सभी 71 शहीद परिवारों को 51-51 हजार की एफ.डी. समर्पित की गई। दुधमुंहे बच्चों को लेकर जब वीरांगनाएं सम्मान ग्रहण करने पहुंचीं तो जनसमूह करीब दो घंटे तक तालियों की गड़गड़ाहट से उनका अभिनंदन करता रहा।

उसी दौरान कारगिल में सैकड़ों भारतीय जवानों की शहादत के गुनहगार पाकिस्तानी राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ की जयपुर यात्रा पर जब सरकार स्वागत में पलक पांवड़े बिछाए हुए थी, तब भी महानगर ने राष्ट्रधर्म को वरीयता दी। गोपाल शर्मा ने आक्रोश भरा संपादकीय 'मुशर्रफ मुर्दाबाद' लिखकर शेष संपादकीय कॉलम को खाली छोड़कर अपने पत्रकारिता धर्म का निर्वहन करते हुए विरोध दर्ज करवाया। महानगर के आह्वान पर जयपुर आधे दिन तक बंद रहा।

आपदा पीड़ितों को संबल देने में महानगर ने अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया। गुजरात में 2001 में आए महाविनाशकारी भूकंप के दौरान जयपुर के प्रमुख समाजसेवियों, व्यापारिक संगठनों के नेताओं और चिकित्सकों की टीम को साथ लेकर राहत सामग्री जुटाई गई। 18 ट्रकों में उपभोग की सामग्री एकत्रित की गई; इनमें से 11 ट्रकों को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने रामनिवास बाग से रवाना किया, 7 ट्रकों में भरी राहत सामग्री को पीड़ितों तक भेजने के लिए महानगर के मालवीय नगर इंडस्ट्रियल एरिया स्थित कार्यालय पर राज्यपाल अंशुमान सिंह आए। जिस समय गुजरात में जबर्दस्त भूकंप से धरती थरथरा रही थी, ऐसे समय में महानगर की पहल पर जयपुर के जांबाजों ने अपनी जान पर खेलकर न केवल कैंप लगाकर राहत सामग्री का वितरण किया बल्कि मलबे में दफन हुईं लाशें तक बाहर निकालकर मानवीयता का परिचय दिया।

सीतापुरा इंडस्ट्रियल एरिया में 2009 में आईओसी के तेल गोदाम में लगी भीषण आग ऐसी ही बड़ी दुर्घटना

थी। उस दिन मौत सामने खड़ी थी और कई किलोमीटर का इलाका खाली करवाया हुआ था। जिला कलेक्टर और पुलिस के तमाम आला अधिकारी किसी को भी घटनास्थल की ओर नहीं जाने दे रहे थे। ऐसी भीषणतम परिस्थिति में महानगर के रिपोर्टर विकास शर्मा और संदीप देशपांडे मौके पर खबर के लिए जूझ रहे थे। आग का एक गोला विकास शर्मा के ठीक पास आकर गिरा, लेकिन देवयोग से कोई अनहोनी नहीं हुई।

'किससे करें गुहार' शीर्षक से प्रकाशित खबरों से सैकड़ों दीन-दुखियों को संबल देने में महानगर सदैव अग्रणी रहा। ट्रेन से आ रहे बारां जिले के किशनगंज इलाके के सहरिया आदिवासी परिवार के एक मजदूर के शव को जयपुर से करीब 700 किमी दूर पहुंचाने की व्यवस्था के लिए पीड़ित परिजनों ने महानगर कार्यालय में संपर्क किया। ऐसे में मानवीय धर्म निभाते हुए शव को एंबुलेंस के जरिए गंतव्य तक पहुंचाया गया। इसी तरह सरपंच चुनाव में उपजी रंजिश के चलते एक गरीब मजदूर की हत्या के बाद शव को रेल पटरी पर रखकर उसे आत्महत्या का रूप देने के मामले में स्थानीय पुलिस से लेकर एएसपी तक की जांच में उसे आत्महत्या ही बताया गया। लेकिन जब मृतक की बेवा और छोटे बच्चों ने महानगर आकर अपनी पीड़ा बताई तो घटनास्थल पर जाकर उसकी गंभीरता से पड़ताल की गई। विषय का छिद्रान्वेषण करने के बाद जब तथ्य सामने आए तो आला अधिकारी भी दंग रह गए। आखिरकार दोषी दबंग व्यक्ति के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया और उसे गिरफ्तार भी करना पड़ा। दुष्कर्म के मामले को उजागर करने के कारण एक राज्य मंत्री को इस्तीफा देना पड़ा।

समय की पदचाप पहचानते हुए भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं के

सटीक पूर्वानुमान महानगर को अन्य समाचार पत्रों से अलग पायदान पर खड़ा करते हैं। जिस समय नरेन्द्र मोदी के राष्ट्रीय क्षितिज पर उभरकर आने की बात आम चर्चा में नहीं थी, उस दौरान महानगर ने 2002 में लिखा कि भाजपा की राजनीति मोदी के नेतृत्व में करवट ले रही है। गोधरा नरसंहार की पहली खबर महानगर में छपी। 2001 में मनमोहन सिंह के आगामी प्रधानमंत्री उम्मीदवार बनने संबंधी आकलन, 2004 में सोनिया गांधी की प्रधानमंत्री बनने को लेकर असमंजस की स्थिति, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे कल्याण सिंह द्वारा भाजपा छोड़कर क्षेत्रीय दल बनाने, अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप के उभरकर आने, नितिन गडकरी के भाजपा अध्यक्ष बनने जैसे कितने ही आश्चर्यचकित करने वाले आकलन और विश्लेषण खरे साबित हुए। 1998 से 2018 तक के राजस्थान विधानसभा चुनावों को लेकर किए गए आकलन हमेशा सटीक रहे।

देश के क्रांतिकारी परिवारों को पहली बार जयपुर में बुलाकर अभिनंदन, कारगिल-पुलवामा के शहीद परिवारों का सम्मान, महात्मा गांधी की डेढ़ सौवीं जयंती, जलियांवाला बाग नरसंहार के शताब्दी वर्ष पर आयोजन.. महानगर विश्व में एकमात्र ऐसा समाचार पत्र रहा, जिसने विस्मृत कर दिए गए राष्ट्र के गौरवों को आदरपूर्ण सम्मान प्रदान किया। प्रभु की कृपा से खोले के हनुमानजी मंदिर के नव स्वरूप में महानगर टाइम्स की गिलहरी भूमिका भी रही। गोपाल शर्मा ही सरकार और मंदिर प्रशासन के बीच समन्वयक रहे। यह विषय उन्होंने ही तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के समक्ष रखा, जिसकी उन्होंने तत्क्षण स्वीकृति दी। जयपुर में 'राजपथ' के स्थान पर 'जनपथ' का नामकरण भी महानगर की प्रेरणा है। 24 मार्च, 2019 को स्टेच्यू सर्किल स्थित होटल रॉयल हवेली में महानगर द्वारा आयोजित किए गए 'गोविंदोत्सव' में छोटी काशी की धर्मपरायण जनता अपने आराध्य देव के रंग में सराबोर नजर आई।

यह जानकर आश्चर्य होगा कि आज देश का नेतृत्व संभाल रहे नरेन्द्र

हॉकर बंधुओं से निरंतर पारिवारिक संपर्क महानगर टाइम्स की परंपरा।

मोदी, पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत, जगद्गुरु शंकराचार्य वासुदेवानंद सरस्वती, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और पूर्व राज्यपाल अंशुमान सिंह जैसे लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्तित्व महानगर के लालकोठी और मालवीय नगर इंडस्ट्रियल एरिया स्थित कार्यालय के पुराने भवनों की साधारण-सी कुर्सियों पर बैठ चुके हैं। वह काफी संघर्षपूर्ण दौर रहा। घने जंगल और गहरे नाले के समीप कार्यालय में काम करते समय सांप-गोहरे आना आम बात थी। एकाधिक बार झालाना अभ्यारण्य से बाहर निकलकर बघेरों तक के अंदर आ जाने की घटनाओं से स्थिति को समझा जा सकता है। इन हालात के बीच एक प्रभावी समाचार पत्र ने महानगर की टीम को तोड़ने के लिए मोटे प्रलोभन दिए गए, लेकिन महानगर की निरंतरता पर कोई असर नहीं पड़ा। एक अन्य प्रमुख समाचार पत्र ने सांध्यकालीन दैनिक निकालने की योजना बनाई, लेकिन विचार त्याग देना पड़ा।

पत्रकारिता के बदलते दौर में संपादक गोपाल शर्मा के आत्मज जिज्ञासु शर्मा सिम्बायोसिस, पुणे से एमबीए करके और ऐश्वर्य शर्मा ब्रिटेन से प्रबंधन में मास्टर डिग्री करके महानगर टाइम्स से जुड़े। अपनी कार्यकुशलता और आधुनिक सोच से दोनों ने अखबार को नया स्वरूप और दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसी दौरान सांध्यकालीन दैनिक के रूप में 17 साल की यात्रा पूरी करके 25 सितम्बर, 2014 से महानगर टाइम्स प्रातःकालीन स्वरूप में सामने आया। नए कलेवर और नए अंदाज में सहकार मार्ग पर नए भवन में काम आगे बढ़ा, लेकिन संकल्प और मिशन वही रहा।

विनोद चतुर्वेदी

महानगर टाइम्स का लोकार्पण

23 नवंबर, 1997 को महानगर टाइम्स का लोकार्पण करते लोकसभा अध्यक्ष पी.ए. संगमा, मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत, वरिष्ठ पत्रकार प्रभाष जोशी, राजस्थान कांग्रेस अध्यक्ष अशोक गहलोत और गोपाल शर्मा।

बिड़ला ऑडिटोरियम में आयोजित समारोह में विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित लोग शामिल हुए। सामने की ओर जगदीप धनखड़ और घनश्याम तिवाड़ी।

23 नवंबर, 1997

निवेदन

अंधियारा होने से पहले खबरों की रोशनी लेकर उपस्थित हो रहा है सायंकालीन दैनिक जयपुर महानगर टाइम्स। पत्रकारिता के फलक पर छाए कुहासे और शोर के प्रदूषित माहौल में गोधूलि के पवित्र वातावरण का अहसास कराने के संकल्प के साथ। एक ऐसे अखबार का स्वप्न साकार करने का प्रयत्न किया जा रहा है जो विश्वप्रसिद्ध गुलाबी नगर का जागरूक प्रहरी हो तथा जयपुर की आवाज बन जाए। लोग स्याही से छपे हरफों में अपनी भावना को मुखरित होता देखें तथा जनता को लगे कि यह उनका अपना अखबार है।

समाचार पत्रों की कड़ी प्रतिस्पर्धा के दौर में बड़े पूंजीपतियों के अलावा अन्य किसी का अस्तित्व बनाये रख पाना मुश्किल हो गया है। इसके बावजूद हर तूफान से टकरा जाने का साहस जुटाकर अखबार निकालने का बीड़ा उठाया है।

'महानगर टाइम्स' व्यावसायिक सोच का प्रतिफल या लाभ कमाने के उद्देश्य से शुरू किया गया धंधा नहीं है। इसके पीछे सोच है- निष्पक्ष, राष्ट्रीय और विश्वसनीय अखबार निकालने का। पत्रकारिता के पेशे को निष्पक्ष बनाए रखने की पक्षधर टीम ने जयपुर की जनता पर पूरा भरोसा करके एक सम्पूर्ण व जवाबदेह अखबार निकालने का बीड़ा उठाया है। इस कोशिश में न तो किसी जोखिम की परवाह है और न आने वाली चुनौतियों का कोई भय है। जयपुर की जनता की आवाज को मुखर तरीके से बुलंद करने की तमन्ना है और हर दुःखी की पीड़ा में सहारा बनने की लालसा है। कोई पीड़ित या दुःखी अखबार के दफ्तर की सीढ़ियों पर चढ़ेगा तो उसे लगेगा कि वह अपने सहयोगियों के पास जा रहा है। प्रकाशनों का शुरू होना और बंद होना सिर्फ पैसे पर निर्भर नहीं है। अम्बानी और डालमिया के अखबार नहीं चल पाए तथा जैन ग्रुप के अखबार भी बंद होते रहे हैं। जनभावना की अभिव्यक्ति के बूते पर ही 'इण्डियन एक्सप्रेस' आपातकाल की चुनौती से टक्कर सका था। बस एक ही संकल्प है कि अखबार की कलम को न तो कोई खरीद सके, न झुका सके। जयपुर के लोगों की भावना को ध्यान में रखकर महानगर टाइम्स आकार ले रहा है तथा यह यहां के लाखों लोगों की आवाज बन जाए यही कामना है।

हमारी कोशिश रहेगी कि गुलाबी नगर की जनता को स्वर मिले, उसका आत्मसम्मान कायम हो और इन्सान की कीमत समझी जाए। अत्याचार के खिलाफ लोग जागरूक हों और एक दूसरे की पीड़ा को महसूस करें। महानगर के रूप में करवट लेता गुलाबी नगर प्रगति-पथ पर अग्रसर रहे और कोई टेढ़ी आंख करके इसकी ओर नहीं देख सके। जनता से जुटाए गए तेल से हम यह दिया जलाने का प्रयत्न कर रहे हैं जो टिमटिमाता हुआ भी सतत् रोशनी देगा। हम आपके भरोसे को कायम रखेंगे। इस अखबार में आपको न तो परायेपन का अहसास होगा और न घमंड का। यह आपका अपना अखबार होगा। हमारे विनम्र प्रयास को आपकी शुभकामनाओं की हमेशा आवश्यकता रहेगी।

— गोपाल शर्मा

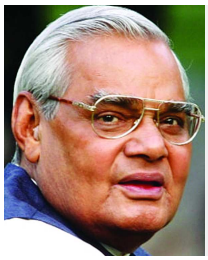

मुझे जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि टेबुलॉयड सांध्यकालीन दैनिक के रूप में जयपुर महानगर टाइम्स प्रारंभ हो रहा है। इसकी सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

–अटलबिहारी वाजपेयी

लोकार्पण समारोह बना संकल्प दिवस

सफलता की कामना : संगमा

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि गोपाल शर्मा और उनके साथी मिलकर जयपुर में एक बड़ा अखबार शुरू कर रहे हैं और इसके लोकार्पण के लिए मुझे जयपुर बुलाया गया है। गोपाल शर्मा को इस महत्वाकांक्षी और साहसिक कार्य के लिए मैं बधाई देता हूं। महत्वाकांक्षी और साहसिक कार्य इसलिए कि अखबार शुरू करना और चलाना कोई आसान काम नहीं है। अखबार की जो विस्तृत परिकल्पना बताई, उसके कारण ही मुझे पूरा संतोष हुआ। मैं इसे गजब की आदर्शवादिता मानता हूं। इसके लिए मैं इन्हें हार्दिक बधाई देना चाहता हूं और इनके सौभाग्य और सफलता की कामना करता हूं।

राजनीति का अपराधीकरण बंद हो : शेखावत

बहुराष्ट्रीय कंपनियों के वर्चस्व के खतरे के प्रति पत्रकारों को सावचेत किया। हमारे प्रेस बचाकर रखना होगा। उन्होंने कहा कि अखबारों से संबद्ध लोग इस दिशा में सावधान नहीं रहे तो पूरे समाज पर बुरा असर पड़ेगा। अखबारों में बड़ी ताकत होती है। उन्हें राजनीति के अपराधीकरण के खिलाफ मोर्चा खोलना चाहिए, तभी यह बुराई समाप्त होगी। लेकिन यह केवल चर्चा कर लेने से नहीं होगा।

समाचार पत्रों में विश्वास : गहलोत

समाचार पत्र लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है। यह तभी मजबूत बन सकता है जब लिखने वालों को पूरी स्वतंत्रता मिले। बड़े समाचार पत्रों के मालिक तक पत्रकारों की आजादी की रक्षा नहीं कर पाते हैं। लिखने वालों की ही विश्वसनीयता से ही समाज को नई राह मिलती है। लोगों का समाचार पत्रों में आज भी पूरा विश्वास कायम है।

चुनौती भरा कार्य : प्रभाष जोशी

राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में देखें, तो क्या गोपाल शर्मा 'दो तोपों' के बीच अपना अखबार निकाल पाएंगे? दोनों अखबारों के बीच व्यापारिकता की होड़ को और तेज करेंगे या यह साबित करेंगे कि सच्ची पत्रकारिता का व्यावसायिकता से कोई लेना-देना नहीं है? सच्ची पत्रकारिता वह है, जो पाठकों के लिए की जाए।

कारगिल शहीद समर्पण समारोह

जसवंत सिंह, जसदेव सिंह, गोपाल शर्मा, अशोक गहलोत, अंशुमान सिंह, भैरोंसिंह शेखावत, सुभाष महरिया और डॉ. चंद्रभान।

कारगिल शहीद की वीर विधवा को सम्मानित करते राज्यपाल अंशुमान सिंह और केन्द्रीय रक्षा मंत्री जसवंत सिंह।

देश का एकमात्र समारोह, जिसमें प्रदेश के सभी शहीद परिवार एक मंच पर उपस्थित हुए।

कैप्टन अमित भारद्वाज के माता-पिता सुशीला-ओ.पी. शर्मा का सम्मान।

- कारगिल के युद्ध में सर्वोच्च बलिदान देकर राजस्थान की गौरवशाली परम्परा को रक्त से सींचने वाले रणबांकुरों के परिजनों के सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह में जयपुर का प्रबुद्ध वर्ग उमड़ पड़ा। खचाखच भरे बिड़ला ऑडिटोरियम में कारगिल युद्ध के सभी 71 शहीदों के परिजन पहली बार एक साथ एकत्रित थे। दुधमुंहें बच्चों को गोद में लेकर आई शहीदों की वीर पत्नियां मंच पर सम्मान ग्रहण करने बढ़ीं तो उपस्थित जनसमूह करीब एक घंटे तक लगातार तालियों की गड़गड़ाहट से उनका अभिनंदन करता रहा।
- महानगर टाइम्स द्वारा आयोजित इस समारोह में केन्द्रीय रक्षा मंत्री जसवंत सिंह, राज्यपाल अंशुमान सिंह, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत, केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्यमंत्री सुभाष महरिया, सैनिक कल्याण मंत्री डॉ. चंद्रभान उपस्थित थे। हर शहीद परिवार को 51 हजार रूपए की एफ.डी. दी गई। धातु पर बना हुआ प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया।

गुजरात भूकंप पीड़ितों के लिए सेवा निधि

'गुजरात हम तुम्हारे साथ हैं' और 'भारत माता की जय' के नारों के बीच राहत सामग्री के काफिले भूकम्प पीड़ितों के लिए रवाना किए गए। काफिले के साथ राहत टोली, चिकित्सक और कार्यकर्ता भी गुजरात गए और भूकंप प्रभावित अडेसर में राहत शिविर लगाया। विभिन्न चरणों में राहत सामग्री रवाना करते राज्यपाल अंशुमान सिंह, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और नेता प्रतिपक्ष भैरोंसिंह शेखावत।

18 ट्रक राहत सामग्री भिजवाई

- 26 जनवरी, 2001 को गुजरात में भीषण भूकंप के तुरंत बाद पीड़ितों की सहायता के लिए महानगर टाइम्स ने जयपुर के प्रबुद्ध नागरिकों के साथ मिलकर सेवा निधि का गठन किया। गोपाल शर्मा को इसका संयोजक बनाया गया। जयपुर के व्यापार मंडल, सामाजिक संगठन और शिक्षण संस्थानों ने इसमें भरपूर सहयोग किया।
- महानगर टाइम्स द्वारा संचालित सेवा निधि का अस्थाई शिविर कोई आरामदेह जगह नहीं थी बल्कि हालात तो ये थे कि सिर ढंकने तक कुछ नहीं था। सेवा निधि के कार्यकर्ताओं ने चारों ओर लकड़ियां डालकर उन्हें दरियों से ढंक दिया और उसी के बीच में रात गुजारते थे और सुबह होते ही गांव में निकल पड़ते थे।
- राहत सामग्री का वितरण काफी कठिन काम था। जहां राहत सामग्री थी वहां लेने वाले नहीं थे और जहां लेने वाले थे वहां तक राहत सामग्री नहीं पहुंची थी।
- जयपुर के हजारों स्कूली छात्र-छात्राओं ने झोली फैलाकर शहर में अनूठा दृश्य उपस्थित कर दिया। ये रैलियां शहर में एक साथ प्रमुख स्थानों से रवाना हुईं तथा शहर के सभी प्रमुख बाजारों से होती हुई अलग-अलग स्थानों पर समाप्त हुईं।

जयपुर के स्वतंत्रता सेनानियों का अभिनंदन

राज्यपाल राम नाईक के साथ स्वतंत्रता सेनानी गोविंदनारायण खादीवाले, अमर नारायण माथुर, लक्ष्मीनारायण झरवाल और लक्ष्मीचंद बजाज।

- भारत छोड़ो दिवस की स्मृति में चैम्बर कॉमर्स भवन में जयपुर के सभी जीवित स्वतंत्रता सेनानियों का नागरिक अभिनंदन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि राज्यपाल राम नाईक थे।
- इस अवसर पर स्वतंत्रता सेनानी लक्ष्मीनारायण बजाज, अमरनारायण माथुर, लक्ष्मीनारायण झरवाल, गोविंदनारायण खादीवाले और भंवरलाल खिलौनेवाले को साफा पहनाकर और शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के सान्निध्य में शहीद महावीर सिंह स्मृति कार्यक्रम।

- अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद के 84वें बलिदान दिवस पर जनपथ स्थित अमर जवान ज्योति पर स्वातंत्र्य समर की स्मृतियां फिर से ताजा हो गईं। स्वतंत्रता सेनानी सांवरलाल भारती, लक्ष्मीचंद बजाज, पं. रामकिशन का शॉल, माला एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया।

प्रसिद्ध क्रांतिकारी अर्जुनलाल सेठी के पुत्र प्रकाश सेठी, शहीद अमित भारद्वाज के पिता ओ.पी. शर्मा को सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता महानगर टाइम्स के संपादक गोपाल शर्मा ने की।

महावीर सिंह के स्मरण के साथ शहीद क्रांतिकारी परिवारों का सम्मान

- क्रांतिवीर महावीर सिंह के पौत्र असीम राठौर, शहीद अमित भारद्वाज के पिता ओ.पी. शर्मा, तात्या टोपे के प्रपौत्र सुभाष टोपे, बाल गंगाधर तिलक के प्रपौत्र शैलेश तिलक, भगत सिंह के भांजे जगमोहन सिंह, चंद्रशेखर आजाद के सहदौहित्र गणेशशंकर मिश्र, सुखदेव के प्रपौत्र अनुज थापर, केसरीसिंह बारहठ की पौत्री राज्यलक्ष्मी साधना, अर्जुनलाल सेठी के पुत्र प्रकाश सेठी, उधम सिंह के परिवार से खुशीनंद सिंह, क्रांतिवीर दुर्गा सिंह के परिवार से विजयसिंह सिसोदिया, शहीद मेजर योगेश अग्रवाल के पिता अजय अग्रवाल, हिम्मत सिंह के पिता किशोर सिंह, शहीद अभय पारीक के पिता कल्याण सिंह पारीक का सम्मान किया गया।

सर्वसमाज का प्रखर शंखनाद
पुलवामा शहीदों के परिजनों का सम्मान

पुलवामा शहीदों के परिजनों का सम्मान

- महाशिवरात्रि, 2019 की पूर्व संध्या पर रामलीला मैदान में आयोजित सामाजिक समरसता सम्मेलन में हजारों नागरिकों की सहभागिता।
- मातृशक्ति की विशाल कलश यात्रा, तिरंगा यात्रा, पुलवामा और जयपुर के सभी शहीद परिवारों का सम्मान, राष्ट्ररक्षा शक्ति संवर्धन गायत्री महायज्ञ, वेद पाठों की पवित्र ऋचाओं से वातावरण गुंजायमान।
- प्रमुख क्रांतिकारी परिवारों के सदस्य, काशी विश्वनाथ मंदिर-जयपुर गोविंददेव मंदिर के महंतों सहित विभिन्न समाजों के गणमान्य नागरिक शामिल।

शहीद अमित भारद्वाज और शहीद योगेश अग्रवाल के पिताश्री का आशीर्वाद।

शहीद अशफाकउल्ला खान के पौत्र के नेतृत्व में निकली तिरंगा यात्रा।

युगपुरुष स्मृति समारोह

जलियांवाला बाग बलिदान स्मृति शताब्दी समारोह पर परिजनों का अभिनंदन

माइकल ओ'डायर की हत्या कर जलियांवाला बाग नरसंहार का बदला लेने वाले अमर शहीद उधम सिंह के परिजनों को सम्मानित करते अतिथिगण।

राजस्थान के सभी स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान

राजस्थान के वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानियों को मंचासीन अतिथियों ने उनके पास जाकर स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती और जलियांवाला बाग बलिदान की 100वीं बरसी पर बिड़ला सभागार में आयोजित युगपुरुष स्मृति समारोह में देश की आजादी की लड़ाई में शामिल हुए प्रदेश के स्वतंत्रता सेनानियों के साथ ही जलियांवाला बाग के नरसंहार में शहीद हुए आंदोलनकारियों के परिजनों को सम्मानित किया गया।
- समारोह में 'गांधीः जयपुर सत्याग्रह' पुस्तक का विमोचन भी किया गया। पुस्तक से जयपुर से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के गहरे आत्मीय संबंधों और सत्याग्रह आंदोलन के अध्याय का रहस्योद्घाटन हुआ। समारोह में जयपुर के सभी स्कूल-कॉलेजों के श्रेष्ठतम छात्र प्रतिनिधि भी शामिल हुए।

गोविंदोत्सव में जयपुर के नवरत्नों का अभिनंदन

खिलाड़ी गोपाल सैनी, चिंतक सत्यव्रत सामवेदी, प्रचारक धनप्रकाश त्यागी, पुलिस अफसर बी.एल. सोनी, पूर्व राज्यपाल एन.एल. टिबरेवाल, महंत अंजन कुमार गोस्वामी, देवर्षि कलानाथ शास्त्री, व्यापार महासंघ अध्यक्ष सुभाष गोयल, विज्ञापन जगत के पुरोधा रूपचंद माहेश्वरी और शहीद अमित भारद्वाज के पिता ओ.पी. शर्मा।

गोविंदोत्सव कार्यक्रम में उपस्थित विराट जनसमूह।

जब तोप मुकाबिल थी

खींचो न कमानों को न तलवार निकालो
जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो

–अकबर इलाहाबादी

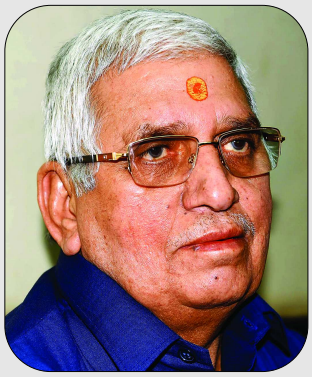

सत्य पारीक

यह शेर जंग-ए-आजादी के दौर की तस्वीर पेश करता है, जिसमें हमारे अखबार ब्रिटिश हुकूमत की तोपों से टकरा जाने का माद्दा रखते थे। इन अखबारों के पीछे वे जांबाज देशभक्त प्रेरणा बने, जिन्होंने भारत को आजाद करवाने के लिए चल रहे संग्राम में मोर्चा संभाल रखा था। उनके लेख इतने उद्वेलित करने वाले होते कि मानो कमान से तीर निकल रहे हों। वीरों का प्रदेश राजस्थान भी इस दौर में अछूता नहीं रहा। अधिकांश राजा-महाराजाओं ने ब्रिटिश हुकूमत के साथ संधि कर ली थी, जिसके कारण यहां की जनता का विरोध प्रमुख रूप से राजशाही और सामंतवाद से ही रहा। ब्रिटिश फौज ने स्थानीय शासकों की मदद लेकर स्वतंत्रता संग्राम को हिंसा से कुचलने का प्रयास किया। लेकिन यहां के कलमवीरों ने अपनी कलम से सामंतों को ही जो जख्म दिए, वे आगे चलकर नासूर बनते गए। उनकी कलम के वार तलवार की धार से ज्यादा असरदार होते थे। आजादी की लड़ाई दोनों मोर्चों पर लड़ी गई थी; सत्याग्रह आंदोलन के जरिए हमारे युवा नेता सड़क पर लड़ रहे थे, दूसरी तरफ उनके विचारों को तीखे तेवर के साथ प्रकाशित करके देशवासियों को आजादी के महासमर में आगे आने के लिए प्रोत्साहित करने वाले कलमवीर भी कम नहीं थे। वे खुद खबर लिखते, उसे छपवाते और बांटते, जन-जन तक जंगे-आजादी का संदेश पहुंचाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ते।

आजादी के बाद इन कलम के सिपाहियों में से कई विधायक, सांसद और मुख्यमंत्री तक बने। आजादी की लड़ाई में मारवाड़ क्षेत्र के हरावल दस्ते के योद्धा जयनारायण व्यास ने 'अखंड भारत' और 'तरुण राजस्थान' नामक अखबारों को हथियार बनाया। ब्रिटिश हुकूमत और सामंतशाही के खिलाफ वैचारिक लड़ाई लड़ते हुए वे सात बार जेल गए। उसी कलम को हथियार बनाकर वे राजस्थान के मुख्यमंत्री बने। हरिदेव जोशी ने 'लोकवाणी' समाचार पत्र से आजादी की भावना को स्वर दिया और उन्हें जेल यात्रा करनी पड़ी। उसी दौरान वे कांग्रेस से जुड़े और बाद में राजनीति के सोपान चढ़ते हुए मुख्यमंत्री पद तक पहुंचे। राजस्थान में विलय से पहले कुछ वर्षों तक स्वतंत्र राज्य रहे अजमेर के मुख्यमंत्री हरिभाऊ उपाध्याय चुने गए, जिन्होंने 'औदुम्बर' और 'मालव मयूर' नाम के समाचार पत्रों का संपादन किया तथा महात्मा गांधी और गणेशशंकर विद्यार्थी के पत्रों में सहयोगी बने।

राजस्थान में पत्रकारिता के जरिए आजादी की अलख जगाने वाले योद्धाओं की समृद्ध परंपरा रही। उन्होंने हर तरह के खतरे उठाकर कर्तव्य को बखूबी अंजाम दिया। गौरीशंकर उपाध्याय का 'सेवक' अखबार कौन भूल सकता है, जिसने डूंगरपुर में

राजशाही को चुनौती दी! उपाध्याय कई बार जेल गए, सार्वजनिक स्थानों पर उनकी पिटाई की गई, लेकिन आजादी की अलख जगाने का काम उन्होंने नहीं छोड़ा। चंद्रगुप्त वार्ष्णेय सरकारी नौकरी छोड़कर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े और आजीवन कलम को हथियार बनाए रखा। गांधी-इरविन समझौते के भंग होने के कारणों का उन्होंने जिस गहराई से विश्लेषण किया, उसकी प्रशंसा स्वयं महात्मा गांधी ने हस्तलिखित पत्र के जरिए की। इसके बाद वार्ष्णेय को दो साल तक नजरबंद रखा गया। अचलेश्वर प्रसाद 'मामा' ने 1937 तक आजादी की लड़ाई में कलम के योगदान के चलते पांच वर्ष जेल यातना सही। 1942 के आंदोलन में भाग लेने के लिए उन्हें पुनः दो साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। क्रांतिकारी पत्रकार भूपेंद्रनाथ त्रिवेदी ने मध्यप्रदेश और राजस्थान के आदिवासियों की व्यथा चित्रित करने का दंड भुगता; उनके साथ उनकी पत्नी को भी जेल में डाल दिया गया। जब वे छूटकर बाहर आए तो उनका इकलौता बेटा गायब हो चुका था, जिसका कभी पता नहीं चला। जगदीश प्रसाद 'दीपक' ने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ने की भावना से साप्ताहिक पत्र 'मीरां' निकाला। इस पत्र पर प्रतिबंध लगाया गया, मशीनें तोड़ी गईं, कागज और ब्लॉक जला दिए गए, हर जगह छापे मारे गए और जगदीश प्रसाद को जेल भेज दिया।

शेखावाटी के नीमकाथाना में जन्मे रामनारायण चौधरी ने मेरवाड़ा को कर्मस्थली बनाया। वे अर्जुनलाल सेठी के क्रांतिकारी दल में शामिल हुए, बाद में केसरीसिंह बारहठ और विजयसिंह पथिक के संपर्क में आकर 'तरुण राजस्थान' के संपादन कार्य में जुड़े। उनके तीखे तीर जैसे लेखों ने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ जनविद्रोह की नींव को मजबूत किया। इसके लिए उन्हें बार-बार जेल यातनाएं सहन करनी पड़ीं। जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने गांधी साहित्य पर अस्सी हजार पन्नों की सामग्री गुजराती से हिंदी-अंग्रेजी में अनूदित की। आजादी के बाद उन्होंने 'नया राजस्थान' नाम से अखबार शुरू किया। उनके सामने सरकारी पद के कई प्रस्ताव आए, लेकिन पत्रकारिता ही उनका पहला कर्म बना रहा। 'मारवाड़ अलख' अखबार के संपादक रहे देवीचंद्र सागरमल 1942 से 1946 तक स्वतंत्रता संग्राम में जेल गए। उसके बाद उन्होंने 'मारवाड़ संदेश' अखबार निकाला। 'दैनिक नवज्योति' के दुर्गाप्रसाद प्रसाद को 'कप्तान' का उपनाम आजादी के आंदोलन में अपने दल की कमान संभालने की वजह से मिला। इनके परिवार के लगभग हर सदस्य ने आजादी के आंदोलन में भाग लिया। सुभाषचंद्र बोस के संपर्क में रहे हजारीलाल शर्मा ने 'राष्ट्रदूत' निकाला। स्वतंत्रता सेनानी हनुमानप्रसाद प्रभाकर ने उदयपुर में पत्रकारिता के प्रतिमान स्थापित किए। 'उस्ताद' नाम से विख्यात पत्रकार गणेशीलाल व्यास की ओजस्वी वाणी और प्रखर लेखनी से मारवाड़ में आजादी की जनभावना का ज्वार खड़ा हुआ। गणेश जोशी 'मनवंतर' ने 'कल की दुनिया' साप्ताहिक अखबार का संपादन करते हुए जेल यात्रा की। घीसूलाल पंड्या छात्र जीवन में जेल गए और बाद में अजमेर में पत्रकारिता शुरू की। जयपुर के हीराचंद जिंदा ने जयपुर में पत्रकारिता आजादी की लड़ाई से जुड़ने के लिए ही की। उन्होंने छह अखबारों का संपादन किया और छह बार जेल गए; हर बार एक अखबार में ज्वलंत लेख लिखना, उसके कारण गिरफ्तार होना, फिर जेल से बाहर आने के बाद दूसरे अखबार में जुट जाना.. यह सिलसिला जारी रहा और पूरा जीवन आजादी तथा पत्रकारिता को समर्पित कर दिया। जोधपुर बम कांड के प्रमुख सूत्रधार हरमल सिंह भी पत्रकार थे। 'ब्लिट्ज', 'न्यू एज' के संपादक रहे हरिकृष्ण व्यास भी आंदोलनों के दौरान जेल गए। युगलकिशोर चतुर्वेदी ने 1934 से 1948 तक भरतपुर प्रजा परिषद में रहते हुए जेल यात्राएं कीं और बाद में 'राष्ट्रदूत' में पत्रकारिता की।

जगन्नाथ कक्कड़ ने तो पत्रकारिता आजादी की लड़ाई के लिए ही अपनाई। अंग्रेजों और सामंतों के खिलाफ लिखने के लिए वे बाहर कम और जेल में ज्यादा रहे। कुंजबिहारी मोदी ने पत्रकारिता के जरिए आजादी की लड़ाई की मशाल जलाई और अलवर में आजादी के आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने 'अलवर पत्रिका' नामक अखबार निकाला, जिसके चलते उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। पंडित अभिन्न हरि ने पहले खंडवा और बाद में कोटा के मांगरोल में आकर 'कर्मवीर' नामक अखबार शुरू किया। आजादी के लेख लिखने के कारण उन्हें जेल की सजा सुनाई गई। बाद में उन्होंने प्रजामंडल की स्थापना की और 1941 तक उसके अध्यक्ष रहे। केसरलाल अजमेरा ने भी आजादी की लड़ाई लड़ी। 'नेशनल हेराल्ड' अखबार में काम करते हुए वे अपने लेखों से लोगों में देशभक्ति का जोश भरते रहे। कनकमल अग्रवाल 'मधुकर' ने कई अखबारों की कमान संभाली, बाद में 'नवजीवन' नामक अखबार निकाला। स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के लिए मधुकर को 19 माह की जेल हुई। पूर्णचंद्र जैन ने अपने क्रांतिकारी विचारों के चलते प्रजामंडल के आंदोलन में सक्रिय होकर सरकारी नौकरी छोड़ दी और आंदोलन में शरीक हो गए। बाद में कई बड़े अखबारों में बड़ी जिम्मेदारियों को निभाया। प्रेमबहादुर सक्सेना का आजादी की जंग लड़ने का अंदाज

निराला था। वे अपना हस्तलिखित साप्ताहिक लेख निकालते और चौराहों-चौपालों पर उसे एक व्यक्ति से पढ़वाते, जिससे जनता के बीच अच्छा प्रचार-प्रसार होता। कई बार उन्हें ही नहीं, उनके श्रोताओं को भी जेल की हवा खानी पड़ी।

जीवन के 99 बसंत देखने वाले राजेंद्र कुमार 'अजेय' ने पत्रकारिता के साथ आजादी की लड़ाई लड़ी। राजेश्वरनारायण सिन्हा ने आजादी की लड़ाई लड़ी और पत्रकारिता में बाबू राजेंद्र प्रसाद का साथ दिया, उनके साथ जेल भी गए। बाद में जब राजेंद्र प्रसाद राष्ट्रपति चुन लिए गए तो सिन्हा जयपुर आ गए और 'लोकवाणी' तथा 'राष्ट्रदूत' में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दौसा क्षेत्र के प्रमुख कांग्रेस नेता रामकरण जोशी ने तीखे तेवर वाले साप्ताहिक समाचार पत्र 'सुराज्य' का प्रकाशन किया; उन्हें भी जेल यातनाएं सहनी पड़ीं। प्रियतमलाल कामदार ने जयपुर में 'वीर भूमि', 'मान सूर्योदय' और 'प्रचार' समाचार पत्र निकाले तथा ब्रिटिश हुकूमत की नाराजगी झेली। काशीनाथ गुप्त ने 1945 में नवयुग प्रेस की स्थापना की और अंग्रेजों और सामंतशाही के खिलाफ लेख लिखे, जिसके चलते उन्हें प्रताड़ना मिली। सिद्धराज ढड्ढा ने 'लोकवाणी' का प्रकाशन शुरू किया। उन्होंने 1942 में जवाहरलाल नेहरू के निर्देश पर सीनेट हॉल पर तिरंगा फहराया और दो साल जेल रहे। कानमल ढड्ढा ने भी 'लोकवाणी' के जरिए आजादी की अलख जगाई। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू के साथ दौरे किए और आजादी के सिपाही बने। जोधपुर में दूसरे बम कांड को अंजाम देने वाले श्यामसुंदर व्यास ने रिहाई के बाद 'लोकजीवन' समाचार पत्र में कार्य करते हुए संघर्ष जारी रखा। उनके प्रमुख सहयोगी की भूमिका में सूरज प्रकाश 'पापा' रहे; बम कांड में उन्हें भी जेल हुई। बाद में उन्होंने 'रोशनी' नामक अखबार का संपादन किया। जयपुर में सूचना भवन के पास स्वतंत्रता सेनानियों पर म्यूजियम बनाए जाने के पीछे इन्हीं की प्रेरणा थी।

भरतपुर में सत्यभक्त के नाम से विख्यात 'सतयुग' के संपादक मक्खनलाल गुप्ता की निर्भीक लेखनी ने उन्हें क्रांतिकारी पत्रकार के रूप में पहचान दिलवाई। उनके साथी शंकरलाल वर्मा विजयसिंह पथिक के संपर्क में रहे और जेल भी गए। समर्थदान मनीषी पत्रकारिता के युगपुरुष थे, उन्हें 'मनीषी' की उपमा स्वयं दयानंद सरस्वती ने दी थी। बीसवीं सदी के शुरूआती दशक में वे अपने लेखों के जरिए जनता की आवाज बन गए। श्यामलाल वर्मा ने राजस्थान का पहला दैनिक 'जयपुर समाचार' निकाला। इस पर प्रतिबंध लग गया और वर्मा को जेल भेज दिया गया। जेल से छूटकर वे दुबारा अखबार के काम में जुट गए। भरतपुर प्रजामंडल के आंदोलन में भाग लेकर कई बार गिरफ्तार होने वाले सांवलप्रसाद चतुर्वेदी ने 'नवयुग संदेश' और 'कर्मभूमि' का संपादन किया। महान क्रांतिकारी सागरमल गोपा ने 'जैसलमेर का गुंडा शासन' नामक किताब लिखी, जिसके कारण उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। उन्हें पकड़कर जेल में जिंदा जला दिया गया। शोभालाल गुप्त युवावस्था में विजयसिंह पथिक के साथ बिजौलिया आ गए और 'तरुण राजस्थान' में काम करने लगे। बिजौलिया किसान आंदोलन में सक्रिय भागीदारी और लेखों के जरिए आंदोलन के लिए समर्थन जुटाने के कारण उन्हें गिरफ्तार करके बेरहमी से पीटा गया। बाद में उन्होंने दिल्ली में भी साप्ताहिक पत्र निकाला। शंभुनाथ अरोड़ा 'पुष्प' चंद्रशेखर आजाद के सहयोगी रहे; उन्होंने अजमेर-जयपुर में दैनिक नवज्योति के लिए कार्य किया। पिंक सिटी प्रेस क्लब के संविधान का हिंदी अनुवाद भी किया। पचेरी के ताड़केश्वर शर्मा के 'ग्राम' समाचार पत्र ने शेखावाटी में किसान आंदोलन को प्रखर रूप दिया। 1934 में उन्होंने भरतपुर में आंदोलन किया तो उन्हें जेल भेज दिया गया। वासुदेव शर्मा ने 'राजस्थान टाइम्स' में स्थानीय शासन के विरोध में व्यंग्यात्मक लेख लिखे। इसके प्रकाशन पर 1944 में निषेधाज्ञा लगा दी गई। छात्र जीवन से ही भरतपुर प्रजा परिषद के आंदोलन से जुड़कर अनेक बार जेल गए विद्याव्रत शास्त्री ने 'नवयुग संदेश' के माध्यम से आजादी की मांग को स्वर दिए। काकोरी कांड में जेल गए याज्ञवल्क्य गुरु ने रिहा होने के बाद अजमेर से उर्दू और हिंदी में अखबार निकाला।

आजादी की लड़ाई में कलम का योगदान अतुलनीय है। तलवार के वार को तलवार के वार से काटा जा सकता है, लेकिन कलम के वार को काटने के लिए कई तथ्य सामने लाने पड़ते हैं और उससे तेज धार से कलम चलानी पड़ती है। मरुधरा के कलमवीरों ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ जो लिखा, उसके चलते आज उनका नाम मान-सम्मान के साथ लिया जाता है। हमें यह नहीं भुलाना चाहिए कि राजस्थान के कलमवीर स्वतंत्रता सेनानियों ने जितने व्यापक स्तर पर मशाल जलाए रखी, उतना बहुत कम राज्यों में हुआ। इनमें से कितने ही पत्रकार जेल गए और जेल की यातनाएं सही। उनके लिखे हुए गीत भी स्वतंत्रता संग्राम में जन-जन की वाणी से मुखरित हुए। उस समय पत्रकारिता करने के पीछे किसी भी तरह के व्यवसाय की भावना नहीं थी बल्कि उन्हें देश को स्वतंत्र करवाना था।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार-लेखक हैं)

संवाददाताओं का सुनहरा सफर

आशुतोष तिवारी

विश्वास कुमार

कभी रिपोर्टिंग का पर्याय थे विश्वास कुमार। इने-गिने अखबारों और सीमित पाठक वर्ग के दौर में उन्होंने 'स्टार रिपोर्टर' के रूप में ख्याति प्राप्त की। आपातकाल के दौरान अलवर राजपरिवार के प्रताप सिंह की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मृत्यु की रिपोर्टिंग में उनकी प्रमुख भूमिका रही। प्रेस सेंसरशिप के बावजूद उनकी विस्तृत कवरेज से कई सनसनीखेज तथ्य सामने आए। जगन्नाथ पहाड़िया के मुख्यमंत्रित्व काल में पत्रिका संवाददाता के रूप में उन्होंने तत्कालीन खाद्य मंत्री का एक बयान प्रकाशित किया, जिससे चीनी की कालाबाजारी बढ़ने की स्थिति बन गई। खाद्य मंत्री अपने बयान से मुकर गए और कांग्रेस ने पत्रिका के विरुद्ध प्रदर्शन शुरू कर दिया। लेकिन कुमार ने पीछा नहीं छोड़ा और अंततः मंत्री को स्वीकार करना पड़ा कि यह खबर उन्होंने ही दी थी।

संजीव श्रीवास्तव

कार्य, कुशलता और सर्वप्रिय व्यवहार के श्रेष्ठतम उदाहरण हैं संजीव श्रीवास्तव। वे राजस्थान से निकलकर अंग्रेजी के पत्रकारों में चोटी पर पहुंचे। शुरुआती दौर में इंडियन एक्सप्रेस के लिए की गई उनकी रिपोर्टिंग ने पत्रकारिता क्षेत्र के दिग्गजों का ध्यान आकर्षित किया। 1994 में बीबीसी से जुड़े और लंदन में रहकर काम करने लगे। उन्हें बीबीसी का मुंबई में पहला ब्यूरो स्थापित करने का श्रेय है। 2006 में उन्हें बीबीसी हिंदी का भारत संपादक नियुक्त करके रेडियो और ऑनलाइन सेवाओं का दायित्व सौंपा गया। बीबीसी से अलग होने के बाद वे सहारा इंडिया समूह से जुड़े। फर्स्टपोस्ट, दूरदर्शन, फोकस टी.वी. जैसे मीडिया संस्थानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विविध क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्तित्वों के सहज इंटरव्यू ने श्रीवास्तव की खास पहचान बनी।

ओम थानवी

राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित ओम थानवी ने चार दशक से अधिक के पत्रकारिता जीवन में प्रभावशाली लेखक, प्रखर वक्ता और प्रबुद्ध विचारक की ख्याति अर्जित की है। 1980 के दशक में सऊदी अरब के शेख द्वारा दुर्लभ गोडावण पक्षियों के शिकार और उस पर सट्टा खेले जाने से जुड़ी उनकी खोजपूर्ण रिपोर्ट तस्वीरों के साथ छपी तो भारत सरकार ने संज्ञान लेकर शिकार रोकने के निर्देश दिए। भरतपुर राजघराने से संबंधित डीग विधायक मान सिंह की हत्या से जुड़े कई तथ्य उनकी खबरों से उजागर हुए। जनसत्ता संपादक के रूप में थानवी ने इस प्रतिष्ठित समाचार पत्र की विरासत को और समृद्ध किया। 2019 में हरिदेव जोशी पत्रकारिता विश्वविद्यालय की पुनः स्थापना हुई तो वे पहले कुलपति नियुक्त हुए। उनकी पुस्तक 'मुअनजोदड़ो' इतिहास लेखन और विचारधाराओं के संघर्ष को रोचक ढंग से करता एक जीवंत दस्तावेज है।

राजेन्द्र बोड़ा

सादगी, सरलता, सिद्धता और सद्व्यवहार के लिए विख्यात राजेंद्र बोड़ा जागरूक और सक्रिय पत्रकार रहे हैं। आपातकाल के दौरान इंदिरा गांधी के आदेश पर जयगढ़ किले में जयपुर राजघराने के गुप्त खजाने की तलाश शुरू हुई तो सरकारी ब्रीफिंग नहीं किए जाने के बावजूद बोड़ा ने प्रक्रिया से जुड़े तथ्यों का सिलसिलेवार प्रामाणिक ब्योरा तैयार किया। उस दौरान उनकी रिपोर्टिंग खोजपूर्ण पत्रकारिता के क्षेत्र के लिए मिसाल बनी। दूरदर्शन के राजस्थानी समाचार बुलेटिन की शुरुआत भी उन्हीं के समाचार वाचन से हुई। पत्रकारों के हितों के लिए सजग रहने वाले बोड़ा ने पिंक सिटी प्रेस क्लब की स्थापना और जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के गठन में विशेष भूमिका निभाई।

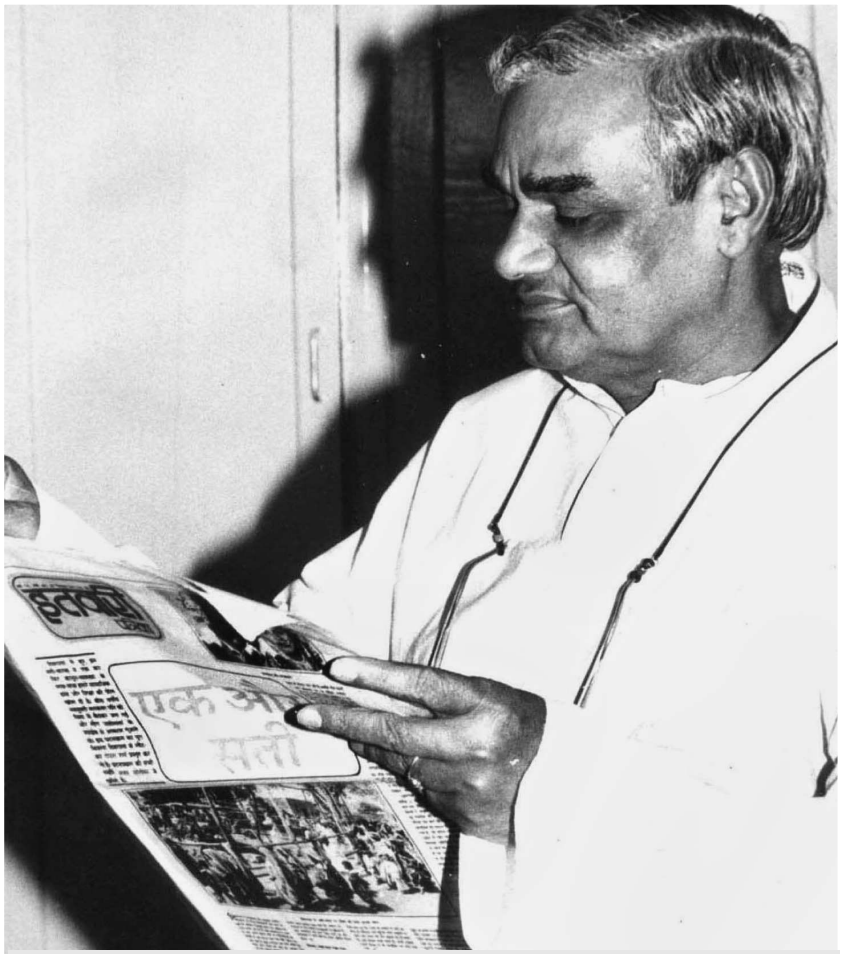

दिवराला सती प्रकरण पर राजस्थान की रिपोर्टिंग पढ़ते अटलबिहारी वाजपेयी।

यशवंत व्यास

प्रयोग उनकी पहचान है, व्यंग्य में वेदना का स्वर उन्हें विशिष्ट बनाता है.. रचनात्मकता में रमे हुए वे अपने समय के बनते-बिगड़ते प्रतिमानों की प्रतिध्वनि बन गए हैं। भाषा और विषयवस्तु की ताजगी को लेकर अति सजग यशवंत व्यास ने पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में खास मुकाम बनाया है। अपना अलग कहन विकसित करते हुए सामग्री की सारगर्भिता बनाए रखने की जद्दोजहद उनके लेखन को धारदार बनाती है। अनेक राष्ट्रीय समाचार पत्रों का संपादन, विभिन्न मीडिया उपक्रमों में संस्थापक-सलाहकार की भूमिका, बारह से अधिक प्रकाशित पुस्तकें, अनुवादित और संपादित रचनाएं उनके पोर्टफोलियो में दर्ज हैं। उनके यादगार प्रयोगों में शामिल 'अहा जिंदगी' अपनी तरह की अकेली हिंदी पत्रिका के रूप में नई संभावनाओं के लिए प्रेरणा बनी।

विजय त्रिवेदी

गूढ़ उपमाओं, तीखे शब्दों और वाक्यों की नाटकीयता के बिना गंभीर विषयों की गहराई में जाकर सूक्ष्म विश्लेषण करने की कला में विजय त्रिवेदी पारंगत हैं। कठिन प्रश्नों को मुस्कुराते हुए सौम्य आवाज में रखकर नेताओं को असमंजस में डाल देते हैं। राजनीतिक रिपोर्टिंग, संसदीय कवरेज और शीर्ष राजनेताओं के साक्षात्कार में उनकी दक्षता सुविज्ञ रही है। प्रिंट से टीवी के सफर में कामयाब होने वाले पत्रकारों में उनका नाम प्रमुखता से लिया जाता है। शुरुआती दौर में वे स्थानीय समाचार पत्रों से जुड़े रहे। इसके बाद लगभग 17 वर्षों तक एनडीटीवी के लिए काम किया और सलाहकार संपादक बने। उन्होंने अनेक लोकप्रिय टी.वी. कार्यक्रमों का संचालन और 'हार नहीं मानूंगा', 'यदा यदा हि योगी', 'संघम् शरणं गच्छामि' जैसी चर्चित पुस्तकों का लेखन किया।

ओम सैनी

क्रांतिकारी स्वभाव के ओम सैनी पत्रकारिता में उसी जुनून के साथ सक्रिय हुए। एक तरफ वे धनाढ्य अखबार मालिकों के खिलाफ आवाज उठाते रहे और दूसरी तरफ आम आदमी की आवाज बुलंद करते रहे। 'माया' के संवाददाता के रूप में उनकी खबरें राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित हुईं। नहीं झुकने वाले युवा नेता और पत्रकार के रूप में राजस्थान पत्रिका, इतवारी पत्रिका, दिनमान, माया, दैनिक भास्कर, ईवनिंग प्लस आदि संस्थानों से होते हुए खुद के साप्ताहिक अखबार 'खबरनवीस' जैसे प्रयोगों तक उनकी यात्रा नए आयाम लेती रही।

नारायण बारेठ

संकल्प, कर्मठता और निरंतरता हो तो कोई व्यक्ति कहां से कहां पहुंच सकता है, इसकी सशक्त मिसाल नारायण बारेठ हैं। लंबे समय तक बीबीसी से जुड़े रहे बारेठ ने संवाददाता के रूप में राजस्थान से जुड़े विषयों को राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय विमर्श से जोड़ने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उनके मार्गदर्शन और प्रेरणा से युवा पत्रकारों की पौध तैयार हुई। प्रिंट और टी.वी. के दौर में रेडियो के महत्व को भी बनाए रखने के प्रति वे सचेष्ट रहे हैं। उन्हें हरिदेव जोशी पत्रकारिता विश्वविद्यालय में प्रोफेसर नियुक्त किया गया। वर्तमान में राजस्थान के सूचना आयुक्त के पद पर हैं।

प्रतुल सिन्हा

जे.पी. आंदोलन की प्रेरणा से पत्रकारिता क्षेत्र में आए प्रतुल सिन्हा सिद्धांतवादी पत्रकार के रूप में विख्यात हुए। उनके स्वर में बगावत बनी रही। जब वे राजस्थान में सक्रिय हुए तो वह बुजुर्ग और युवा नेताओं के बीच शीतयुद्ध का शुरुआती दौर था। उस दौरान सिन्हा ने राजनीतिक रिपोर्टिंग में अपनी अलग साख बनाई। वे दैनिक जागरण, ईवनिंग प्लस, इंडिया टी.वी., दैनिक भास्कर आदि संस्थानों में कार्यरत रहे। सनसनी फैलाने की ललक को पत्रकार का अवगुण मानने वाले सिन्हा ने पुख्ता प्रमाणों के साथ खबर देने की परंपरा को निरंतर सशक्त किया।

ईश मधु तलवार

जितने विशिष्ट, उतने विनम्र.. जितने कोमल, उतने बेबाक.. देश की हिंदी पत्रकारिता और साहित्यकार मंडली में चर्चित शख्सियत.. आजीवन कलम के सच्चे पैरोकार.. ईश मधु तलवार! कथाकार, नाटककार, उपन्यासकार और व्यंग्यकार के रूप में भी उन्होंने विशिष्ट छाप छोड़ी। वे एकाधिक बार पिंक सिटी प्रेस क्लब के अध्यक्ष रहे, श्रमजीवी पत्रकार संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का दायित्व संभाला, राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ के महासचिव चुने गए। उनके असामयिक निधन से पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में खालीपन पैदा हो गया।

आभा शर्मा

अंग्रेजी साहित्य में पी.एच.डी. आभा शर्मा ने सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की समाचार शाखा से पत्रकारिता की शुरुआत की। इसके बाद लंबे समय तक 'डेक्कन हेराल्ड' से जुड़ी रहीं। हिंदी और अंग्रेजी में समान रूप से सिद्धहस्त शर्मा ने बीबीसी सहित अनेक पत्र-पत्रिकाओं के लिए दोनों भाषाओं में रिपोर्टिंग की। कानूनी रूप से अपने बाल विवाह को रद्द करने वाली पहली महिला जोधपुर की लक्ष्मी पर उनकी रिपोर्ट को काफी ख्याति मिली। इसे एक केस स्टडी के रूप में मानवाधिकार और लैंगिक अध्ययन विषय के तहत सीबीएसई की 11वीं कक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया।

श्रीपालसिंह शक्तावत

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध डटे रहे हैं श्रीपाल शक्तावत। लड़कियों की खरीद-फरोख्त, भ्रूण हत्या, बलात्कार जैसे वीभत्स अपराधों से जुड़ी उनकी रिपोर्टिंग ने समाज में गहरी छाप छोड़ी है। 1990 के दशक में उन्होंने 'माया' पत्रिका के राजस्थान संवाददाता के रूप में काम किया। नई सदी के साथ नई राह अपनाई और टी.वी. पत्रकारिता में चले गए। पत्रिका टी.वी. के प्रधान संवाददाता रहे और अनेक चैनलों के ब्यूरो प्रमुख के रूप में काम किया। इंडिया टुडे/आज तक के लिए विशेष संवाददाता की भूमिका के बाद समाचार 18 राजस्थान की कमान संभाली।

वीर सक्सेना

कविता से बनी पहचान की बदौलत समाचारों की दुनिया में आगे बढ़े वीर सक्सेना ने पत्रकार का रोमांचक जीवन जिया। उनके हिस्से में प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और रेडियो तीनों क्षेत्रों का अनुभव आया। जयपुर की गलियों से निकलकर लंबी यात्रा तय करते हुए करियर स्थापित करने पेरिस पहुंचे, लेकिन कर्पूरचंद्र कुलिश की पुकार वापस खींच लाई। ऑल इंडिया रेडियो के लिए 'आज सुबह' कार्यक्रम बनाया। कुछ समय विदेश में रहकर भारत लौटने के बाद राजस्थान पत्रिका से जुड़े और संपादक पद तक पहुंचकर सेवानिवृत्त हुए।

भुवनेश जैन

सामान्य पत्रकार से पत्रकारिता का नेतृत्व करने तक की भूमिका आसान नहीं होती है, लेकिन इस भूमिका में भुवनेश जैन का नाम शीर्ष पर है। राजस्थान पत्रिका में करीब चार दशक से सक्रिय भुवनेश जैन ने सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों पर फीचर लेखन से अपना कॅरियर शुरू किया और विगत दो दशक से वे प्रवाह नामक कॉलम लिख रहे हैं, जिसमें लगातार राजनीतिक व प्रशासनिक खामियों को उजागर करते हैं। इस कॉलम की खूबी यह है कि वे किसी पर व्यक्तिगत प्रहार करने के बजाय व्यवस्था पर कुछ इस तरह टिप्पणी करते हैं कि सरकार किसी भी दल की हो, वह उससे प्रभावित होती है।

सनी सेबेस्टीयन

राजस्थान को कर्मक्षेत्र बनाने वाले मूलतः केरल निवासी सनी सेबेस्टीयन लगभग चार दशकों से सकारात्मक पत्रकारिता के पर्याय बने। जब पत्रिका समूह ने अंग्रेजी में पत्रिका शुरू की तो सेबेस्टीयन भी टीम में शामिल हुए। कुछ समय बाद वे 'द हिंदू' से जुड़े। सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों, विरासत, आंदोलन, सतत विकास, पर्यावरण और वन्य जीवन सहित रेगिस्तानी क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं पर रिपोर्टिंग का विषद अनुभव उनके पास है। वे हरिदेव जोशी पत्रकारिता और दूरसंचार विश्वविद्यालय के प्रथम कुलपति बने।

गुलाब बत्रा

पांच दशक से अधिक सक्रिय रहे गुलाब बत्रा राजस्थान के पत्रकारिता इतिहास के गंभीर अध्येता और विश्लेषक हैं। उन्होंने प्रदेश की सभी प्रमुख समाचार एजेंसियों का अनुभव लिया; उनके मजबूत होने, निष्क्रिय कर दिए जाने और पुनः स्थापित होने के दौर के साक्षी रहे। वे देश भर में सबसे कम उम्र के ब्यूरो प्रमुख बने। प्रेस कौंसिल ऑफ इंडिया में राजस्थान के पहले सदस्य नियुक्त हुए। नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट्स इंडिया (एनयूजेआई) के राष्ट्रीय महासचिव, उपाध्यक्ष और सचिव चुने गए। जर्नलिस्ट्स असोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के संस्थापक सदस्यों में रहे।

रोहित परिहार

इंडिया टुडे में करीब तीन दशक से जयपुर में सक्रिय रोहित परिहार ने राजनीतिक पत्रकारिता से जुड़ी कई एक्सक्लूसिव खबरें देकर अपनी विशिष्टता कायम की। राजस्थान में ऐसा कोई राजनीतिक मुद्दा नहीं रहा, जिस पर उन्होंने कलम नहीं चलाई हो और गहराई में नहीं गए हों। सम्पर्क, व्यवहार और प्रस्तुतिकरण की क्षमता उनकी विशेषता रही। परिहार ने राजस्थान से जुड़े गंभीर मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित स्टोरीज में बदला। राज्य में होने वाले राजनीतिक या प्रशासनिक बदलावों पर परिहार की टिप्पणी पाठकों के लिए बहुत रोचक होती है।

यश गोयल

बहुमुखी व्यक्तित्व है यश गोयल का। वे पत्रकार होने के साथ-साथ जैव-प्रौद्योगिकी वैज्ञानिक भी हैं। उनकी प्रमुख पहचान साहित्यकार-आलोचक के रूप में है, लेकिन वे अमेरिकी विश्वविद्यालयों में जाकर रेगिस्तानी पेड़ों का क्लोन भी तैयार कर चुके हैं। उनके साथ प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया का 30 वर्षों का अनुभव जुड़ा हुआ है। उन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की है। फ्रांत्ज काफ्का और जारोस्लाव सीफर्ट जैसे प्रतिष्ठित लेखकों की साहित्यिक कृतियों का अनुवाद भी किया।

डॉ. मीना शर्मा

महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों से जुड़े विषयों पर यादगार रिपोर्टिंग करने वाली डॉ. मीना शर्मा नारी शक्ति पुरस्कार पाने वाली राजस्थान की पहली महिला पत्रकार हैं। उन्हें यह सम्मान 2016 में राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी द्वारा दिया गया था। टी.वी. पत्रकार के रूप में भ्रूण हत्या पर रिपोर्टिंग करके उन्होंने सामाजिक चेतना जागृत करने में अविस्मरणीय योगदान दिया है। महिलाओं की प्रेरणादायक जीवन यात्रा पर आधारित 'आधी आबादी पूरा सच' भी सफल कार्यक्रम रहा। उनकी इस सकारात्मक पहल से आमजन के सामने आई देश की सफल महिलाओं को भारत सरकार ने गणतंत्र दिवस समारोह में विशेष मेहमान बनाया।

पद्मसिंह भाटी

दैनिक नवज्योति के मुख्य संवाददाता के रूप में और दशकों तक संवाददाता सम्मेलनों में विशिष्ट भूमिका निभा चुके पद्मसिंह भाटी अपने अंदर राजस्थान की राजनीति का अनूठा अध्याय समेटे हैं। उनकी चुटकी भरी बातों और कटाक्ष से भरे सवालों ने कितने ही राजनेताओं को निरुत्तर किया है। वे राजनेताओं को सीधा जवाब देने पर मजबूर करने वाले और पत्रकारों के हितों के लिए संघर्ष करने वाले वरिष्ठ पत्रकार के रूप में लोकप्रिय हैं। वे श्रमजीवी पत्रकार संघ के प्रदेश अध्यक्ष सहित कई संस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभाते रहे हैं।

गोविंद चतुर्वेदी

रिपोर्टिंग और राजनीतिक टिप्पणीकार के रूप में गोविंद चतुर्वेदी की लगभग तीन-चार दशकों तक सक्रिय और कर्मठ भूमिका रही है। 1990-2000 के अत्यंत सक्रिय दशक में उन्होंने जयपुर की पत्रकारिता को शुचितापूर्ण बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सरलता और ईमानदारीपूर्ण व्यवहार ने उन्हें भीड़ से अलग बनाया। मुख्यमंत्री के सलाहकार के रूप में महत्वपूर्ण सेवाएं देने के बावजूद उन्होंने अपने को निष्कलंकित बनाए रखा। 'ज्यों की त्यों चादर' छोड़कर वे फिर पत्रकारिता में सक्रिय हो गए।

जितेंद्रसिंह शेखावत

प्रतिष्ठित और यशस्वी पिता बिशनसिंह शेखावत को देख-पढ़कर पत्रकारिता में रुचि लेने वाले जितेंद्रसिंह शेखावत जयपुर की ऐतिहासिक पत्रकारिता के पर्याय माने जाते हैं। सरलता, सादगी, ईमानदारी, कर्मठता और विश्वसनीयता उन्हें अलग मुकाम पर खड़ा करती है। जयपुर के इतिहास से जुड़े अनेक अनजान तथ्यों को उजागर करने का उन्हें श्रेय है। सज्जनता के कारण बहुत-से लोग उन्हें आदर्श के रूप में देखते हैं। वे कभी अपने वरिष्ठ पत्रकार होने का अहसास तक नहीं होने देते।

संगीता प्रणवेंद्र

राजस्थान की पत्रकारिता में संगीता प्रणवेंद्र इंडिया टीवी की साहसी और बेबाक टीवी जर्नलिस्ट के रूप में अविस्मरणीय भूमिका निभा चुकी हैं। उनके पत्रकारिता जीवन में कुछेक मौके ऐसे भी आए, जब वे अपनी खबरों को लेकर राज्य सरकार से टकरा गईं, लेकिन झुकीं नहीं। उन्होंने ऐसे क्षणों में भी रिपोर्टिंग की, जब उनके जीवन के साथ किसी भी तरह का खतरा हो सकता था। पत्रकारिता के लंबे अनुभव के बाद वे इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन में प्रोफेसर हैं।

संदीपन शर्मा

राजस्थान की खोजपूर्ण पत्रकारिता को अंग्रेजी के प्रमुख राष्ट्रीय समाचार पत्रों टाइम्स ऑफ इंडिया, हिंदुस्तान टाइम्स और इंडियन एक्सप्रेस में अलग तेवर के साथ प्रस्तुत करने में संदीपन शर्मा की महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्होंने राजस्थान से जुड़े कई राष्ट्रीय स्तर के विषयों को उठाया और अपनी पहचान बनाई। इसके बाद वे विभिन्न संस्थानों के संपादन और प्रशासन से जुड़े। लगभग ढाई दशक से निरंतर सक्रिय शर्मा टीवी-9 ग्रुप की अंग्रेजी वेबसाइट न्यूज-9 में सीनियर एग्जीक्यूटिव की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं।

इक्कीसवीं सदी में बदले तेवर

उपेंद्र शर्मा

दो दशकों में राजस्थान में प्रिंट मीडिया के साथ पहले टी.वी. और फिर डिजिटल मीडिया ने विशेष पहचान बनाई है। जो युवा 20 वर्ष पहले प्रशिक्षु पत्रकारों के रूप में पत्रकारिता में आए थे, वे अब विभिन्न समाचार माध्यमों में शीर्ष पदों पर पहुंच गए हैं। इस दौरान राजस्थान में सैकड़ों युवाओं को पत्रकारिता में न केवल सम्मानित रोजगार मिला, बल्कि उनके जीवन में पत्रकारिता से जुड़े प्रभाव और ग्लैमर का भी प्रवेश हुआ।

मैंने जब अगस्त, 2001 में राजस्थान पत्रिका से प्रशिक्षु पत्रकार का अपना करियर शुरू किया, तब नई सदी के नए रंग-ढंग में पत्रकारिता भी संक्रमण काल से गुजर रही थी। कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल तेजी से पत्रकारिता के स्वरूप को प्रभावित कर रहे थे और समाचार पत्रों पर मार्केटिंग तथा सर्कुलेशन विभागों का जबरदस्त दबाव बढ़ गया था। ऐसे में नई पीढ़ी के पत्रकारों को पुराने पत्रकारों के आदर्श का भी पालन करना था और नए दौर से कदमताल भी मिलानी थी। राजस्थान में उसी दौरान तीन-चार टीवी चैनल शुरू हुए और इतने ही सांध्यकालीन अखबार भी प्रकाशित होने लगे। साथ ही, दैनिक भास्कर जैसे बड़े समूह का राजस्थान में प्रभाव जमना शुरू हो गया था। इससे पहले के दशक में राजस्थान में एक ही मुख्य अखबार राजस्थान पत्रिका होता था और दूसरे समाचार पत्र उससे बेहद पीछे होते थे; लेकिन 2000 के बाद यह स्थिति पूर्णतः बदल चुकी थी और राजस्थान में भी दिल्ली, उत्तरप्रदेश, बिहार और मध्यप्रदेश की तर्ज पर मीडिया और पत्रकारों के बीच जबरदस्त प्रतियोगिता का माहौल बन गया था। किसी रिपोर्टर से एक खबर मिस हो जाने पर उसका वेतन काटने और निलंबन जैसी गतिविधियां भी राजस्थान की पत्रकारिता में शुरू हो गई थीं। इससे खबरों को लेकर गलाकाट प्रतियोगिता और आगे रहने की जबरदस्त ललक पत्रकारों के बीच पैदा हुई। विज्ञापन छूटने या प्रतियां कम होने की जिम्मेदारियां भी सीधे तौर पर संपादकों-पत्रकारों पर आने लगी थीं।

राजस्थान में स्थापित अखबारों और टी.वी. चैनलों में जो बदलाव आए, वे मुख्यतः तकनीक को लेकर हुए। आज से 20 वर्ष पहले किसी भी अखबार में रिपोर्टर स्वयं अपनी खबरें टाइप नहीं करते थे। टाइप करने वाले कार्मिकों का एक पूरा विभाग अलग होता था, जो रिपोर्टर की हाथ से लिखी खबरों को टाइप किया करता था। इंटरनेट का प्रयोग लगभग शून्य था और सोशल मीडिया या डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसी कोई चीज नहीं थी। उस वक्त सामान्यतः किसी भी अखबार या चैनल में संवाददाताओं की मीटिंग भी नहीं होती थी। सबसे तेज गति से नई तकनीक को अपनाने और खबरों को नए कलेवर में प्रस्तुत करने का काम 'दैनिक भास्कर' ने 2000 के आसपास शुरू किया। इसे बाद में सभी समाचार पत्रों ने अपनाया। भास्कर के आने के बाद ही अन्य अखबारों और टी.वी. चैनलों में भी वेतन वृद्धि, नियमित पदोन्नति, संपादकों-पत्रकारों को कार, हवाई यात्रा जैसी कुछ आकर्षक गतिविधियां भी शुरू हुईं। राजस्थान में यह एक

सकारात्मक बदलाव विगत दो दशकों में देखने को मिला है। पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखने के पांच साल के भीतर मुझे हवाई यात्रा, विदेश यात्रा और विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में राजस्थान से बाहर जाने का मौका मिला; यह इस बदले दौर में ही संभव था।

20 वर्ष पहले राजस्थान में टी.वी. चैनल के रूप में 'ई.टी.वी.' का आगमन हुआ और कह सकते हैं कि यह राजस्थान का पहला स्थापित न्यूज चैनल बना। उसके बाद से कई टी.वी. चैनल राजस्थान में आए और अब तक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इससे पहले राजस्थान पत्रिका ने 'पत्रिका टी.वी.' दैनिक नवज्योति ने 'एन.टी.वी.' और दैनिक भास्कर ने 'बी.टी.वी.' के नाम से केबल टी.वी. चैनल भी चलाए थे, लेकिन वे बहुत सफल नहीं हो पाए। बीते 20 वर्षों में ई.टी.वी. के अतिरिक्त 'जी राजस्थान' और 'फर्स्ट इंडिया' सफल चैनल के रूप में कार्य कर रहे हैं। इन टीवी चैनल्स में फर्स्ट इंडिया ने समाचारों की पट्टी चलाने का कल्चर विकसित किया, जिसका दर्शकों में खास क्रेज बना।

इस दौरान पत्रकारिता की लेखन शैली में स्टिंग ऑपरेशन, विशेष पैकेज, ग्राफिक्स, फैक्ट फाइल, टैबल, संपूर्ण प्रथम पेज पर एक ही खबर या विषय का प्रयोग, जैकेट बनाना, थ्री-सी-वन पी (क्राइम, क्रिकेट, सेलिब्रिटी और पॉलिटिक्स) को पीछे धकेलकर स्पोर्ट्स, सोशल इम्पैक्ट और सनसनीखेज खबरों ने ले ली। अखबारों-चैनलों में एडिटोरियल के पीछे रहने वाले मार्केटिंग और सर्कुलेशन विभाग विगत 20 वर्षों में एडिटोरियल पर हावी होने की भूमिका में आ गए हैं।

राजनीति, नौकरशाही, अपराध, मेडिकल, शिक्षा, स्पोर्ट्स, नगरीय विकास ऐसे कार्य क्षेत्र (बीट) हैं, जो विगत 20 वर्षों में राजस्थान की पत्रकारिता में छाए रहे। ज्यादातर पत्रकार इन्हीं बीट्स में कार्य करने के इच्छुक रहे और उन्होंने विशेष नाम भी कमाया। हालांकि ये दो दशक देश भर की पत्रकारिता में नकारात्मक रूप में ज्यादा जाने जाते हैं, फिर भी इस दौरान राजस्थान के पत्रकारों ने पत्रकारिता का स्तर बनाए रखा।

यशवंत व्यास, कल्पेश याज्ञनिक और नवनीत गुर्जर जैसे संपादकों को समसायिक विषयों पर त्वरित टिप्पणियों और विशेष कॉलमों के लिए राजस्थान में खास पहचान मिली। सांस्कृतिक विषयों पर रिपोर्टिंग के लिए इकबाल खान, मधुसूदन आजाद, रामकुमार सिंह, सर्वेश भट्ट, आलोक शर्मा, श्याम माथुर आदि को जाना गया।

विशेष रिपोर्टिंग में राजीव जैन, विमलेश शर्मा, हरीश पाराशर, एल.एल. शर्मा, पुरुषोत्तम वैष्णव, शरत कुमार, संगीता प्रणवेंद्र, संदीपन शर्मा, वीरेंद्र सिंह राठौड़, कुलदीप व्यास, उरुक्रम शर्मा, अश्विनी पारीक, कुलदीप शर्मा, मनु शर्मा, राहुल सिंह, योगेश शर्मा, विशाल शर्मा, मनोज माथुर, भानुप्रताप सिंह, सचिन सैनी, अरविंद सिंह शक्तावत, शशि मोहन, भंवर पुष्पेंद्र सिंह, मनीष भट्टाचार्य, श्वेता शर्मा की उल्लेखनीय भूमिका रही। इन सभी पत्रकारों ने कांग्रेस, भाजपा सहित अन्य दलों की विभिन्न खबरों पर विगत दो-तीन दशकों में अपनी खास पकड़ दिखाई है। इनमें से अधिकतर पत्रकार टी.वी., प्रिंट और डिजिटल तीनों माध्यमों सहित सोशल मीडिया पर भी अपनी गहन राजनीतिक समझ और टिप्पणियों के लिए जाने जाते हैं। अधिकांश सांसद-विधायक यहां तक कि मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री भी इनकी रिपोर्टिंग का लोहा मानते रहे हैं।

अपराध से जुडी खबरों में हरिश्चंद्र सिंह, श्रवण यादव, अमित वाजपेयी, ओमप्रकाश शर्मा, राजकुमार शर्मा, भंवर जांगिड़, मोहम्मद अहमद आदि ने विशेष प्रभाव छोड़ा। प्रशासन-मेडिकल-शिक्षा और नगरीय विकास जैसी बीट्स में मनीष शर्मा, बाबूलाल शर्मा, अजय शर्मा, गिरिराज अग्रवाल, रूपेश श्रोती, राजेश लाहोटी, अभिषेक श्रीवास्तव, मनोज शर्मा, ललित शर्मा, आनंद चौधरी, अनुराग हर्ष, आनंद शर्मा, हरेंद्रसिंह बगवाड़ा, विमल भाटिया, आशीष मेहता, नीरज मेहरा निरंतर सक्रिय रहे।

प्रदीपसिंह शेखावत, जितेंद्रसिंह शेखावत, नर्बदा इंदौरिया, मुकेश माथुर, विजेंद्रसिंह शेखावत, जनार्दन कुलश्रेष्ठ, योगेश सैन, अनिलसिंह चौहान, विनोदसिंह चौहान, श्रवण शर्मा, हीरेन जोशी, राखी हजेला, विकास जैन, सुरेश स्वामी, मीना शर्मा, नरेश शर्मा, राकेश शर्मा, नीरू यादव, योगेश सैन, जे.पी. शर्मा, सुशांत पारीक, दिनेश डांगी, राजेश मीणा, शालिनी अग्रवाल, मुकेश मीणा, रोहित कुमार सोनी, एस.पी. मित्तल, डी.डी. वैष्णव, संजय बोहरा, डॉ. आशीष शर्मा, विनोद मित्तल, आशीष जैन, सुखपाल जाट, मृदुला शर्मा, गोवर्धन चौधरी, शरद शर्मा, गिरिराज अग्रवाल, मुकेश शर्मा, सुधीर शर्मा, संदीप शर्मा, ओमप्रकाश शर्मा, जीनत कैफी, मदन कलाल, महेन्द्र भौमियां, मोहनलाल शर्मा आदि की भी विभिन्न विषयों पर लगातार रिपोर्टिंग से एक अलग पहचान बनी है। राजस्थान के, राज्य के बाहर से आए हुए और विभिन्न जिलों में सक्रिय और भी उल्लेखनीय नाम हैं, जिन्होंने हर तरह के खतरे का मुकाबला करते हुए अपनी भूमिका का निर्वाह किया।

(लेखक जयपुर महानगर टाइम्स के मुख्य संवाददाता हैं।)

जयपुर, अखबार और पत्रकार

राजेश माथुर

जयपुर के समाचार पत्रों और पत्रकारों ने स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पहला पत्र 1856 में प्रकाशित 'रोज-तुल-तालीम था। बाद में 1932 में 'प्रभात' प्रारंभ हुआ। इसे 1938 में दैनिक किया गया। यह जयपुर का पहला दैनिक माना जाता है। लाडलीलाल गोयल के संपादकत्व में प्रकाशित इस दैनिक के संपादकीय विभाग में सुप्रसिद्ध सर्वोदयी नेता सिद्धराज ढड्ढा भी थे। कुछ समय बाद इसे बंद करना पड़ा। सत्यदेव विद्यालंकार के संपादकत्व में यह 1941 में फिर शुरू हुआ, लेकिन अधिक समय नहीं चल सका।

1 सितम्बर, 1940 को गुलाबचंद काला ने पाक्षिक 'जन्मभूमि' शुरू किया। तीन वर्ष बाद इसे दैनिक किया गया। इसके संपादकीय विभाग में राजमल सांघी, प्रवीणचंद्र छाबड़ा और नंदकिशोर पारीक थे। बाद में कुछ अन्य पत्र भी निकले, जिनमें 'जयपुर समाचार' और 'प्रचार' मुख्य हैं। जयपुर की पत्रकारिता हिंदी तक सीमित नहीं रही। अंग्रेजी के भी समाचार पत्र निकले, लेकिन हिंदी भाषी क्षेत्र होने के कारण न तो उनका प्रभाव रहा और न ही वे चल पाए। अंग्रेजी में 'राजस्थान टाइम्स' का प्रकाशन 1944 में प्रारंभ हुआ। वह पाक्षिक था। बाद में 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 'नवज्योति हेराल्ड', 'राजस्थान पत्रिका' शुरू हुए। ये सभी बंद हो गए।

स्वतंत्रता से पूर्व और बाद के कुछ वर्षों में अखबार की आय का साधन मुख्य रूप से वितरण संख्या ही थी। साप्ताहिक पत्र धनाढ्यों की आर्थिक सहायता पर निर्भर रहते थे। विज्ञापन से होने वाली आय बहुत कम थी। अब तो विज्ञापन आय का मुख्य साधन बन गया है और यह वितरण संख्या बढ़ने की वजह से होने वाले घाटे की पूर्ति भी करता है। बीसवीं सदी के पांचवें और छठे दशक में जयपुर में अधिकांश साप्ताहिक पत्र संचालकों की हालत यह थी कि वे इस बात पर नजर टिकाए रखते थे कि कौन-सा प्रवासी राजस्थानी उद्योगपति जयपुर आ रहा है। उद्देश्य एकमात्र यही होता था कि पत्र के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त की जाए।

स्वतंत्रता के बाद राजस्थान की पत्रकारिता में मोड़ आया। 'लोकवाणी' गांधीवादी विचारधारा से चल रहा था। 'राष्ट्रदूत' ने निश्चित ही नई दिशा दी। राष्ट्रदूत में परिवर्तन दिनेश खरे के संपादकत्व में आया। उन्होंने इस अखबार को व्यवस्थित और समाचार मूलक बनाने की कोशिश की। यही स्थिति 'नवयुग' प्रारंभ होने पर थी। पूर्व मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया के वरदहस्त से शुरू इस समाचार पत्र के प्रधान संपादक पूर्व मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी और कोलकाता के 'दैनिक विश्वमित्र' से आए ऋषिकुमार मिश्र संपादक थे। मिश्र ने निश्चय ही पत्रकारिता के उच्च मानदंडों को स्थापित किया। किसी अखबार को सरकार समर्थक होने

ऐतिहासिक विरासत और स्वस्थ्य-निष्पक्ष पत्रकारिता के तेवर संजोए गुलाबी नगर का प्रतीक हवामहल। फोटोः डी.के. सैनी

के बावजूद लोकप्रिय कैसे बनाया जा सकता है, यह अखबार उसकी एक मिसाल था। राष्ट्रदूत, नवयुग और लोकवाणी के अलावा कई अन्य प्रातःकालीन और सांध्य दैनिक थे, लेकिन उनमें से अधिकांश कुछ समय चलने के बाद बंद हो गए। तीनों ही मुख्य पत्रों में संपादकीय विभाग की दशा अच्छी नहीं थी। पत्रकारों को समय पर वेतन नहीं मिलता था। नवयुग और लोकवाणी में तो कई महीनों तक वेतन नहीं मिलता था।

नवयुग को इस बात का श्रेय अवश्य है कि इसने जयपुर को अनेक पत्रकार दिए। सौभागमल जैन, ईश्वरमल बापना राष्ट्रदूत से आए थे, लेकिन नवयुग ने आज के वरिष्ठ पत्रकारों की पूरी खेप दी, जिनमें मैं स्वयं, कैलाश मिश्र, मेघराज श्रीमाली, श्यामनारायण भटनागर, सीताराम झालानी हैं। बाद में विजय भंडारी और वीर सक्सेना भी जुड़ गए। नवयुग 1960 में बंद हो गया। 'राजस्थान पत्रिका' का प्रकाशन जयपुर के पत्रकारीय इतिहास की पहली महत्वपूर्ण घटना

है। कर्पूरचंद कुलिश ने राष्ट्रदूत के संपादकीय विभाग से त्यागपत्र देकर इसकी शुरुआत की थी। उनके साथ हरमल सिंह भी राष्ट्रदूत से त्यागपत्र देकर आए थे। कुलिश संपादक थे और हरमल सिंह प्रबंध संपादक। कुलिश ने रिपोर्टिंग का पक्ष संभाला और हरमल सिंह डेस्क के अधिष्ठाता बने। लक्ष्मीनारायण शर्मा वितरण और विज्ञापन के व्यवस्थापक थे।

राजस्थान पत्रिका को इस बात का श्रेय है कि इसने जयपुर के समाचार पत्र संचालकों के दिमाग में यह बात बैठाई कि अखबार के लिए जितना जरूरी कागज है, उतना ही जरूरी उप संपादक का वेतन भी है। जब राष्ट्रदूत या लोकवाणी में पत्रकार को समय पर वेतन नहीं मिलता तो कुलिश को बड़ी वेदना होती। वे इस बात से अप्रसन्न रहते कि पत्रकारों का वेतन काफी कम है। जब हरमल सिंह पत्रिका छोड़कर फिल्मी कहानियां और पटकथा लेखन के लिए मुंबई चले गए तो कुछ अन्य लोग इससे जुड़ गए थे, जिनमें विजय भंडारी भी हैं। उन दिनों कुलिश ही कहते थे, 'मेरा बस चले तो उपसंपादकों का वेतन राजपत्रित अधिकारी से भी अधिक कर दूं।' उन्होंने अपने यहां सभी को छूट दे रखी थी कि अपनी आय बढ़ाने के लिए लेखन का अन्य कार्य करें। स्वयं कुलिश एक समाचार समिति नाफेन का काम संभालते। प्रबंध संपादक विजय भंडारी यूएनआई में अंशकालिक काम करते थे और मैं आगरा के 'सैनिक' तथा कुछ अन्य पार्टी के लिए काम करता।

जयपुर में 1960 के आसपास एक अन्य दैनिक 'मशाल' की शुरुआत विपिन प्रभाकर ने की। इसके संपादक कैलाश मिश्र एवं प्रबंध संपादक कालूराम गुप्ता थे। यह अखबार भी अच्छा निकला, लेकिन बाद में बंद हो गया। उन्हीं दिनों कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी ने अजमेर के साथ जयपुर से भी 'नवज्योति' शुरू किया। पत्रिका के प्रातःकालीन होने तक राष्ट्रदूत राज्य का प्रमुख दैनिक था। पत्रिका ने सवेरे का अखबार होने के साथ ही अपनी धाक जमा दी और शीघ्र ही पहले स्थान पर आ गया। हालांकि राष्ट्रदूत में कई लोकप्रिय स्तंभ थे। इनमें 'कंटीले फूल' की शुरुआत जयसिंह एस. राठौड़ ने की, जो अपने समय में काफी लोकप्रिय हुआ करता था। यही स्थिति पत्रिका के स्तंभों की थी। कैलाश मिश्र ने 'नागरिक' के नाम से 'नगर परिक्रमा' प्रारंभ किया और 'मंझदार में मिडलची' का प्रवर्तन मैंने किया।

समाचार पत्र पाठकों तक शीघ्रातिशीघ्र पहुंचे, इसके लिए प्रयत्न सबसे पहले राष्ट्रदूत ने किए। अजमेर के लिए उसकी पहली टैक्सी रोजाना सवेरे अखबार लेकर जाती थी। उसके प्रथम पृष्ठ पर रोजाना यह प्रकाशित होता था: 'जयपुर एवं अजमेर में एक साथ वितरण की व्यवस्था।' इसके बाद पत्रिका के प्रातःकालीन होने पर भरतपुर, अजमेर, कोटा और जोधपुर जैसे स्थानों के लिए भी टैक्सी सेवा प्रारंभ की गई। जयपुर के समाचार पत्रों में यह परंपरा थी कि डाक संस्करण दिन के तीन बजे छपना प्रारंभ हो जाया करते थे। उनमें आम तौर पर दो बजे तक के ही समाचार हुआ करते थे। समाचार पत्रों के प्रथम पृष्ठ पर 'डाक संस्करण' अंकित भी किया जाता था। बाद में यह अनुभव किया गया कि यदि वितरण संख्या बढ़ानी है तो कवरेज भी देरी तक देना होगा। तब दिल्ली के अखबारों का राजस्थान पर कब्जा था। जयपुर से प्रकाशित प्रादेशिक समाचार पत्रों की संख्या भी प्रभावकारी नहीं थी।

दिल्ली के स्थानीय संवाददाताओं की भी कुछ ऐसी ही स्थिति थी कि वे स्वयं को किसी राजदूत से कम नहीं समझते थे। इसकी वजह यह थी कि दिल्ली के पत्र प्रतिनिधियों की आर्थिक स्थिति स्थानीय पत्रों के नगर संवाददातों के मुकाबले कहीं अधिक मजबूत थी। स्थानीय पत्र के किसी भी संवाददाता के पास स्कूटर नहीं था, जबकि दिल्ली के कुछ संवाददाताओं के पास कारें थीं। स्थानीय पत्रकारों को उनका यथोचित स्थान दिलाने का श्रेय पत्रिका को ही है। एक स्थिति ऐसी भी आई, जब संवाददाता सम्मेलन में यदि पत्रिका का प्रतिनिधि नहीं होता तो सम्मेलन शुरू ही नहीं होता था। दिल्ली के टाइम्स ऑफ इंडिया के टी.एन. कौल ने पहली बार नई फिएट कार खरीदी। उन्हीं दिनों कुलिश और कुछ अन्य पत्रकारों ने भी स्कूटर लिए। तत्कालीन यातायात मंत्री रामप्रसाद लड्ढा ने पत्रकारों के लिए रिजर्व कोटे से स्कूटरों का आवंटन किया था। तब पत्रकार कोटे में तीन महीनों में चार स्कूटर आया करते थे।

प्रारंभिक दिनों में जयपुर में जो प्रमुख समाचार समितियां थीं, उनमें प्रेस ट्रस्ट और यूनिवर्सल प्रेस सर्विस (दोनों अंग्रेजी) थीं। हिंदी में सिर्फ 'हिंदुस्थान समाचार' थी, लेकिन उसकी टेलीप्रिंटर सर्विस नहीं थी। समाचार पत्रों को रोजाना पैकिट पहुंचाया जाता था। टेलीप्रिंटर सेवा शुरू होने के बाद इसके प्रभारी हरिदत्त पाठक थे। बाद में

'यूएनआई' और 'समाचार भारती' की शुरुआत हुई। समाचार भारती बंद हो गई। कुछ समय बाद 'यूनिवार्ता' और 'भाषा' भी शुरू हुई। आपातकाल में सभी समाचार एजेंसियों का एकीकरण करके हिंदी और अंग्रेजी में 'समाचार' समिति बनाई गई। लेकिन जितना परिश्रम तब होता था, उतना अब नहीं होता।

हिंदुस्थान समाचार एजेंसी यद्यपि समाचार की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं थी, लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के समर्पित कार्यकर्ताओं के सहयोग से संचालित इस समाचार समिति के प्रादेशिक समाचारों की सेवा अन्य समितियों से बेहतर थी। फोटो पत्रकारिता का महत्व तो शुरू से था, लेकिन बाद में यह समाचार पत्रों के लिए अनिवार्यता बन गया। आधुनिक तकनीक आने से पूर्व समाचार पत्रों में फोटो छापना सूर्य की रोशनी पर निर्भर करता था। यदि बादल छा गए तो ब्लॉक बनाने की भी छुट्टी। उस समय की तकनीक के मुताबिक सूर्य के प्रकाश के बिना ब्लॉक बनाना संभव नहीं होता था। प्रेस फोटोग्राफर तो रखे ही नहीं जाते थे। आवश्यक होने पर किसी फोटो स्टूडियो के संचालक की सेवाएं ली जाती थीं। छठे दशक में संवाददाता सम्मेलन विशेष परिस्थितियों में ही बुलाया जाता था और उसकी महत्ता होती थी। उसमें भी कनिष्ठ पत्रकार अपने से बड़ों के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते थे। वरिष्ठ संवाददाता ही विषयपरक प्रश्न पूछा करते थे। वक्ता से संवाददाता की झड़प नहीं होती थी। उन दिनों संवाददाता सम्मेलनों में उपहारों की बहार नहीं रहती थी। तत्कालीन जनसंघ के कार्यालय में जब भैरोंसिंह शेखावत का संवाददाता सम्मेलन होता था तो संघ के कार्यकर्ता और एक तरह से जनसंपर्क अधिकारी विशनदास 'वीर' गिलास में सिंगल चाय तथा क्रीम रोल पत्रकारों को पेश किया करते थे। समाचार पत्रों में पत्रकारों के आंदोलन 1958 और उसके बाद के वर्षों में काफी हुए। पत्रकारों के लिए पहले वेतनमंडल के गठन से पूर्व जयपुर में न तो वेतन निर्धारित था और न वर्गीकरण ही था। एक पद के दो व्यक्तियों के वेतन में असमानता थी। राजस्थान श्रमजीवी पत्रकार संघ में यह परंपरा थी कि अध्यक्ष स्थानीय अखबार से संबद्ध व्यक्ति नहीं बने। इसकी पृष्ठभूमि में यह भावना थी कि स्थानीय पत्रकार मालिकों से संघर्ष नहीं कर सकता। इसलिए सामान्यतया दिल्ली के समाचार पत्रों से ही किसी को अध्यक्ष बनाया जाता था। ईश्वरमल बापना का नाम इस दिशा में अग्रणी है, जिन्होंने पत्रकारों के हितों के लिए आजीवन संघर्ष किया। उनकी जुझारू प्रकृति के कारण उन्हें कोई पत्र अपने यहां नौकरी देना पसंद नहीं करता था। अब श्रमजीवी पत्रकारों के दो संगठन हैं, 'जार' (जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान) और श्रमजीवी पत्रकार संघ।

समाचार पत्रों की साज-सज्जा पर प्रारंभिक वर्षों में कोई ध्यान नहीं दिया जाता था। इस मामले में नवयुग के संपादक आर.के. मिश्र ने कुछ प्रयोग किए; कैलाश मिश्र, सौभागमल जैन और मैंने पृष्ठ सज्जा को नया रूप दिया। उनके निकाले गए अंकों को आज भी जयपुर के अखबार पीछे नहीं छोड़ पाए। कुछ अंकों को श्रेष्ठता के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुका है। पृष्ठ सज्जा के साधन भी सीमित हुआ करते थे। यदि किसी समाचार को डेढ़ या ढाई कॉलम में कंपोज करना होता तो यह नहीं हो पाता था। एक लाइन कंपोज करने के बाद शीशे की 'लेड' लगा करती थी। और यह सिंगल कॉलम ही हुआ करती थी। विज्ञापनों के काम के लिए अवश्य तीन या चार कालम की लेड होती थी, लेकिन वह सीमित मात्रा में होने के कारण समाचारों के काम में नहीं ली जाती थी। समाचार पत्रों के संचालक भी यह पसंद नहीं करते थे कि सामग्री नष्ट की जाए।

उन दिनों जयपुर में पत्रकारों के दो वर्ग थे। पहला अंग्रेजी के पत्रकारों का और दूसरा स्थानीय समाचार पत्रों का। 'नीरोज' अंग्रेजी के पत्रकारों का मिलन स्थल था, जहां तीन रुपए देकर एक सिटिंग में चाहे जितनी चाय पी जा सकती थी। दूसरा स्थान बाबा हरिश्चंद्र चौराहे के कोने पर बनी एक दुकान थी, जिसे चाय घाट कहा जाता था। गुलाबचंद काला, हीरानंद जिंदा और कई अन्य पत्रकार यहां देर रात तक गप लगाया करते थे। बातचीत में सवेरा हो जाना आम बात थी। संपादन, समाचार संकलन और पत्रकारिता की विभिन्न विधाओं को उन्होंने गौरवान्वित किया है। इनमें कर्पूरचंद्र कुलिश के साथ ही सिद्धराज ढड्ढा, जवाहरलाल जैन, राजेंद्र कुमार अजेय, जयसिंह एस. राठौड़, प्रवीणचंद्र छाबड़ा, अमरनाथ चतुर्वेदी, रेवाशंकर शर्मा, कौशलकुमार शर्मा, राजमल संघी, महेश शर्मा, वीरेंद्र द्विवेदी और कई अन्य हैं।

(लेखक दिवंगत वरिष्ठ पत्रकार हैं। उनका यह लेख 23 नवम्बर, 1997 को जयपुर महानगर टाइम्स में प्रकाशित हुआ था)

धोरों की धरती पर पत्रकारिता

गुलाब बत्रा

ब्रिटिश भारत में राजस्थान तिहरी गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। राजा-महाराजा, सामंत-जागीरदार और उनके कारकूनों के शोषण एवं अत्याचार से जनता अभिशप्त थी। प्रदेश की देशी रियासतों के अलावा अजमेर सीधे ब्रिटिश शासन के अधीन था। इसके बावजूद स्वाधीनता आंदोलन के दौरान प्रदेश में लोक शिक्षण और सुधारवादी समाचार पत्रों का रोमांचक इतिहास है। तत्कालीन राजपूताना का कोई भी क्षेत्र पत्रकारिता के प्रभाव से अछूता नहीं रहा। शुरुआती दौर से ही यहां की पत्र-पत्रिकाओं ने जनोन्मुख स्वरूप अपनाया और गरीबों-वंचितों की समस्याओं को स्वर देने का काम किया। उन चुनौतीपूर्ण हालात में भी पत्रकारों ने शासक वर्ग की मुखर आलोचना से गुरेज नहीं किया। यहां तक कि कई रियासतों में राजाओं ने खुद भी पत्रकारिता को बढ़ावा देने में रुचि दिखाई। इन सम्मिलित प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि पूरे प्रदेश में तेजी से प्रबुद्ध पत्रकारों की पौध तैयार होने लगी।

जयपुरः 1856 में जयपुर से हिंदी और उर्दू में 'रोजतुल तालीम' अथवा 'राजपूताना अखबार' का प्रकाशन शुरू हुआ, जिसे राजस्थान का प्राचीनतम अखबार माना जाता है। (1849 में भरतपुर रियासत द्वारा हिंदी-उर्दू में 'मजहरूल सरूर' मासिक पत्र के प्रकाशन का उल्लेख मिलता है, लेकिन इसकी प्रति उपलब्ध नहीं है।) राजकीय पाठशाला के प्रधानाध्यापक कन्हैयालाल ने 24 सितम्बर, 1856 को इसका प्रवेशांक प्रकाशित करते हुए एक अक्टूबर से साप्ताहिक पत्र के प्रकाशन की घोषणा की। सार्वजनिक पुस्तकालय में इस पत्र का 31वां अंक उपलब्ध है, जिस पर सोमवार, 20 अप्रेल, 1857 अंकित है। रामचरण व्याकुल के प्राच्य विद्या संग्रहालय में आठ पृष्ठीय इस साप्ताहिक के अंक सुरक्षित हैं और अपनी तथ्यात्मकता के कारण देखने योग्य है। इस पत्र में भरतपुर के संवाददाता द्वारा अतिवृष्टि से संबंधित समाचार भी प्रकाशित हुआ है। इससे तत्कालीन पत्रकारिता के माहौल की पुष्टि होती है। पूर्व जनसंपर्क निदेशक डॉ. मनोहर प्रभाकर के अनुसार, 'रोजतुल तालीम-राजपूताना अखबार में प्रकाशित सामग्री की वैविध्यपूर्ण बानगी यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि जो लोग राजस्थान में पत्रकारिता का प्रादुर्भाव सरकारी राजपत्रों और गजटों से मानते हैं, वे निश्चय ही भ्रांति के शिकार हैं।'

रोजतुल तालीम-राजपूताना अखबार की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए बाबू महेंद्रनाथ सेन के संपादन में 1878 में 'जयपुर गजट' का प्रकाशन किया गया। शास्त्री बालचंद शर्मा ने 1883 में मासिक पत्र 'मार्तंड' निकाला। जयपुर से 1902 में प्रकाशित पाक्षिक 'समालोचक' के संपादन को लेकर पं. चंद्रधर शर्मा गुलेरी और जवाहरलाल जैन वैद्य के नाम पर विवाद रहा है, लेकिन यह साहित्यिक पत्र था। इन्हीं दिनों

भूरामल मुशरफ द्वारा प्रारंभ 'बालक' भी कुछ अर्से बाद बंद हो गया। सरकार समर्थक केसरलाल अजमेरा का अंग्रेजी साप्ताहिक 'राजपूताना हेराल्ड' भी नहीं चल पाया। लाडलीनारायण गोयल ने 1933 में 'प्रभात' का प्रकाशन किया, जो कुछ समय बाद बंद हो गया। सत्यदेव विद्यालंकार ने 1941 में और बाबा नरसिंहदास ने 1950 में इसे पुनः आरंभ किया। गोयल ने सूर्यनारायण चतुर्वेदी के साथ 1942 में 'जय ध्वनि' साप्ताहिक का प्रकाशन किया। गुलाबचंद काला ने 1940 में पाक्षिक 'जयभूमि' की शुरुआत की, जो 1945 में साप्ताहिक और 1946 में दैनिक बना। श्यामलाल वर्मा का 'जयपुर समाचार' (1942) कई बाधाओं के बाद 'राजस्थान समाचार' के रूप में परिवर्तित हुआ। 1945 से 'लोकवाणी' का प्रकाशन राजस्थान में पत्रकारिता के आधुनिक युग का श्रीगणेश माना जाता है।

अजमेरः पत्रकारिता की दृष्टि से अजमेर का विशेष स्थान है, जहां से प्रकाशित पत्रों ने समाज सुधार के साथ स्वाधीनता के जन आंदोलन को ताकत दी। 'जगलाभ चिंतक' (1861) के प्रकाशन के साथ इसके उर्दू संस्करण 'खैरख्वाह खल्क' को मिशनरियों के प्रचार पाक्षिक का दर्जा मिला। इसी वर्ष 'जगहित कारक' साप्ताहिक और 1882 में 'राजपूताना गजट' ने जनाश्रित पत्रकारिता का सूत्रपात किया, जिसके संपादक मौलवी मुराद अली थे। हिंदी-उर्दू में प्रकाशित इस पत्र का दायित्व मुराद अली की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी मोती बेगम ने 1885 से 1912 तक संभाला। स्वामी दयानंद सरस्वती से प्रेरित मनीषी समर्थनदान ने 1889 में 'राजस्थान समाचार' साप्ताहिक से नए युग का शुभारंभ किया। बीच में यह अर्द्ध साप्ताहिक और 1912 में दैनिक बना। 1894 में प्रकाशित 'राजस्थान पत्रिका' जयपुर के दीवान कांतिचंद्र मुखर्जी के कोपभाजन की शिकार हुई। मानहानि के मामले में प्रिंटिंग प्रेस नीलाम हो गई। आगामी वर्षों में 'जैन गजट' (1889), 'पुष्कर-प्रदीप अजमेर' (1890), 'अनाथरक्षक' (1902), 'परोपकार' (1909) 'आर्य मार्तंड' आदि पत्र निकले। वर्धा से प्रकाशित 'राजस्थान केसरी' के संपादक मंडल ने 1919 में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना के बाद 1922 में 'नवीन राजस्थान' साप्ताहिक का प्रकाशिन किया। इन पत्रों ने बिजोलिया के किसान आंदोलन को देशव्यापी प्रसिद्धि दी। नवीन राजस्थान पर लगी प्रवेश निषेधाज्ञा से बचने के लिए नाम बदलकर 'तरुण राजस्थान' किया गया। 1936 में 'दैनिक नवज्योति' का प्रकाशन ब्रिटिश शासन की आंख में खटक गया और बार-बार जमानतें मांगी गईं। पं. जियालाल बिगुल का 'राजपूताना गजट' (1884) भी नहीं चल पाया। इसी प्रकार 'मेरवाड़ा गजट' (1918) त्रिभाषी का प्रकाशन किया गया। 'राजस्थान संदेश', 'दरबार', 'यंग राजस्थान' और 'रेलवेमेन' सरीखे पत्रों में राष्ट्रवादी स्वर प्रमुख रहा। ऋषिदत्त मेहता द्वारा ब्यावर से संचालित 'राजस्थान साप्ताहिक' का संपादन कवि जगदीशप्रसाद दीपक ने किया। इस पर प्रतिबंध लग जाने के बाद उन्होंने 'रियासती' का संपादन किया। 'मीरा' पत्रिका से उन्होंने रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत सहित अनेक लेखकों को उजागर किया। वे हरिभाऊ उपाध्याय के पत्र 'त्यागभूमि', 'दैनिक विश्वमित्र', 'विजय' आदि पत्रों से भी जुड़े रहे। ब्यावर से 'तरुण राजस्थान' और राजस्थानी भाषा में 'अग्निबाण' पत्र निकाले गए।

जोधपुरः 1866 में उर्दू में 'मुहिबे मारवाड़' और हिंदी में 'मरुधर मित्र' नामक दो कॉलम वाले समाचार पत्र का प्रकाशन आरंभ हुआ। इसी साल 'मारवाड़ गजट' भी शुरू किया गया। हिंदी-उर्दू में रियासत से जुड़े समाचारों का प्रकाशन किया जाता था। वर्ष 1918 में पाक्षिक 'युगांतर' और जोधपुर के 'प्रचार विभाग' ने युद्ध समाचार का प्रकाशन किया। स्वतंत्रता सेनानी अचलेश्वर प्रसाद 'मामा' ने 1940 में 'प्रजासेवक' का प्रकाशन किया। उन्होंने जोधपुर महाराजा की अवांछनीय गतिविधियों के समाचार प्रकाशन के कारण राजकोप भोगा। 'साप्ताहिक पताका' भी नहीं चल पाई। साहित्यिक पत्रिका 'भारत मार्तंड' भी निकाली गई। 'मारवाड़ समाचार', 'हिंदू संदेश', 'अखंड', सुमनेश जोशी के दैनिक 'रियासती' (बाद में साप्ताहिक) जैसे समाचार पत्र शासन के कोपभाजक बने। जोधपुर से साहित्यिक पत्रिकाओं 'प्रेरणा', 'लहर', 'मतवाला', 'झरना', 'नवनिर्माण', 'मारवाड़ी' का प्रकाशन किया गया। जयनारायण व्यास ने 'तरुण राजस्थान' के बाद 'लोकराज', बंसीधर पुरोहित ने 'आग', 'अंगारे' और 'ज्वाला', उगमसी मोदी ने 'ललकार', श्यामसुंदर व्यास ने 'लोकजीवन', सूरजप्रकाश पापा ने

‘रोशनी’ पत्र निकाला।

उदयपुरः राजकीय संरक्षण में पं. बंशीधर वाजपेयी शास्त्री ने 1879 में महाराणा सज्जन सिंह के नाम पर ‘सज्जन कीर्ति सुधाकर’ नामक पत्र निकाला। 1884 में महाराणा की मृत्यु के पश्चात यह पत्र बंद हो गया। हालांकि यह पत्र 1869 में ‘उदयपुर’ गजट नाम से प्रकाशित किया गया था। कनक मधुकर ने अजमेर से ‘नवजीवन’ पत्र निकाला, लेकिन जेल यात्रा के पश्चात 1944 में उदयपुर से इसका प्रकाशन आरंभ किया। चंद्रेश व्यास ने ‘पंद्रह अगस्त’ निकाला। नंद चतुर्वेदी के संपादकत्व में प्रकाशित ‘बिंदु’ उच्च कोटि का पत्र होते हुए भी आर्थिक संकट से जूझ नहीं पाया। जनार्दनराय नागर ने ‘वसुंधरा’ का प्रकाशन किया। उदयपुर से ‘क्रांति’ और ‘अरावली’ पत्र भी निकले। भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रेरणा से 1881 में नाथद्वारा से पं. मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या के संपादकत्व में प्रकाशित ‘विद्यार्थी सम्मिलित हरिश्चंद्र पत्रिका’ और ‘मोहन चंद्रिका’ को प्रदेश की प्रथम साहित्यिक पत्रिका माना गया। नाथद्वारा से 1883 में वल्लभ कुल संप्रदाय के मासिक ‘सद्कर्म स्मारक-सद्धर्म प्रचारक’ का प्रकाशन आरंभ हुआ।

कोटाः स्वतंत्रता आंदोलन में ‘लोकसेवक’, ‘दीनबंधु’, ‘अधिकार’, ‘धरती के लाल’, ‘जनवाणी’, ‘चंबल’, ‘किसान संदेश’ इत्यादि पत्र स्वराज्य के संदेशवाहक बने। हीरालाल जैन ने साप्ताहिक ‘जय हिंद’ का प्रकाशन किया। बीकानेर रियासत के खिलाफ समाचार प्रकाशित करने पर कोटा के शासकों के तीन बार प्रहार से दीनबंधु पत्र बंद हो गया। कोटा रियासत में व्याप्त भ्रष्टाचार पर आभिन्न हरि और ताड़केश्वर शर्मा ने आगरा से ‘गणेश’ का प्रकाशन किया, लेकिन उसे बंद करवा दिया गया। तब दोनों ने ‘अग्रसर’ निकाला। उसकी भी वही गति हुई। ‘भारतेंदु साहित्यिक’ पत्र भी निकला। इंद्रदत्त स्वाधीन ने ‘जनवाणी’ का संपादन किया।

बूंदीः महाराजा की छत्रछाया में 1890 में हिंदी पाक्षिक समाचार पत्र ‘सर्वहित’ का प्रकाशन आरंभ हुआ। इसे रामप्रताप शर्मा, लज्जाराम शर्मा के संपादकीयों, लघु टिप्पणियों, कविताओं, उपन्यास-पुस्तक समीक्षाओं से भी विभूषित किया गया। बूंदी रियासत के दीवान के पौत्र और रियासत के प्रधान सेनापति नित्यानंद मेहता के पुत्र ऋषिदत्त मेहता के साप्ताहिक ‘राजस्थान’ ने अंग्रेजी सरकार से खुली टक्कर ली।

राज्य के दमन के विरोध में स्तीफे

अध्यापक रामकरण जी का साहस

हिंडोन और दौसा में लाठी चार्ज

हिंडोन से समाचार प्राप्त हुये हैं कि यहां १२ मार्च को जयपुर दिवस के दिन जनता पर बूढ़े और बच्चे का भेदभाव रखे बिना लाठी चार्ज किया गया। जिसके फलस्वरूप १०-१२ बरस के बच्चे से लेकर ६०-७० साल के बूढ़ों तक के गहरी चोटें आईं। एक आदमी का हाथ की हड्डी टूट गई, एक का हाथ उतर गया है एक के कंधे की हड्डी टूट जाने का सन्देह किया जाता है। लगभग ६०-७० आदमियों की राज्य के अस्पताल में मरहम पट्टी की गई।

उस दिन हिंडोन में लगभग २॥ बजे श्री चन्द्रशेखरजी तथा श्री टीकाराम जी पालीवाल जी ने एक सभा की। आप भाषण देने को ही थे कि आप गिरफ्तार कर लिये गये। आप की गिरफ्तारी के बाद जनता ने ५०-६० की टोलियां बनाकर फेरी लगानी और हड़ताल करानी शुरू की। जैसे ही टोलियां थाने के पास पहुंची तो पुलिस इन्हें आगे बढ़ने से रोका और इनके न मानने पर लाठी चार्ज कर दिया जिसमें लगभग २०० आदमी घायल हुए।

दौसा में

इसी प्रकार जलूस निकालने का प्रयत्न करते समय स्थानीय मिडिल स्कूल के छात्रों को साथियों से पिटवाया गया। पुलिस के इस रवैय्ये के विरोध में यहां के अध्यापक, मास्टर रामकरणजी शर्मा ने अपनी नौकरी से १४ ता० को स्तीफा दे दिया। १४ ता० को यहां मुकम्मल हड़ताल रही। और जब जिला मजिस्ट्रेट और थानेदार ने जनता को आश्वासन दिलाया कि पुलिस की ओर से ऐसी बेजा हरकतें भविष्य में न होंगी तब कहीं उन्होंने हड़ताल खोली। उसी दिन शाम को श्रीराम करण जी व वीरेन्द्रजी को गिरफ्तार करके जयपुर भेज दिया गया।

झुंझुनूं में स्वामी पुरुसुखदास जी ने भी अपने पद से स्तीफा दे दिया है।

बीकानेरः स्वतंत्रता आंदोलन की अलख जगाने में ‘ललकार’, ‘सेनानी’, ‘लोकमत’, ‘गणराज्य’ इत्यादि साप्ताहिकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। साहित्यिक लेखन में ‘नई चेतना’ का योगदान रहा तो ‘मुकुल पत्रिका’ ने बालोपयोगी रूप लिया। जानकीप्रसाद बगरहट्टा कलम के जादूगर थे। ‘बॉम्बे क्रानिकल’ के सह संपादक रहे बगरहट्टा ने जयपुर के ‘द न्यू लीडर’ तथा बीकानेर के साप्ताहिक ‘गणराज्य’ का संपादन किया। गंगादास कौशिक ने 1939 से 1946 तक विभिन्न समाचार पत्रों में पूरी हिम्मत के साथ समाचार प्रेषण किया और जेल यात्रा भी की। कौशिक औरं दाऊदयाल आचार्य ने बहावलपुर के दीवान तथा महाराजा की गुप्त चर्चा को उजागर करके पाकिस्तान से सौदा नहीं होने दिया।

अलवरः धुन के धनी कुंजबिहारी लाल मोदी ने 1943 में ‘अलवर पत्रिका’ का प्रकाशन किया। इससे पहले वे स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रहे। अलवर रियासत में खादी तथा गांधी टोपी धारण करने वाले वे प्रथम व्यक्ति थे। उनके पुत्र सुभाष मोदी ने जयपुर में राजस्थान समाचार प्रचार सहकारी समिति लि. बनाई। अलवर प्रजामंडल का मुखपत्र ‘स्वतंत्र भारत’ भी लोकप्रिय हुआ।

बांसवाड़ाः जनजातीय अंचल में स्वाधीनता संग्राम

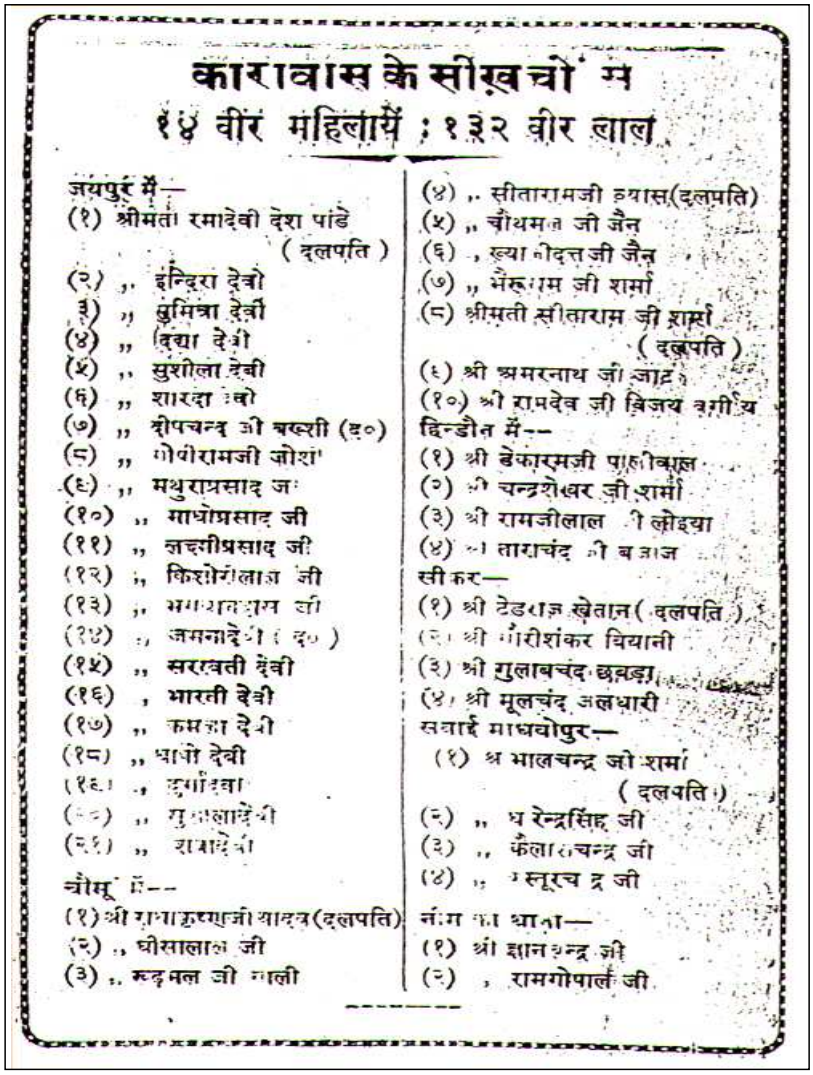

कारावास के सीखचों में

१४ वीर महिलायें ; १३२ वीर लाल

जयपुर में—
(१) श्रीमती रमादेवी देश पांडे (दलपति)
(२) ,, इन्दिरा देवी
(३) ,, सुमित्रा देवी
(४) ,, [illegible] देवी
(५) ,, सुशीला देवी
(६) ,, शारदा देवी
(७) ,, दीपचन्द जी बख्शी (द०)
(८) ,, [illegible]रामजी जोशी
(९) ,, मथुराप्रसाद जी
(१०) ,, माधोप्रसाद जी
(११) ,, जद्दनीप्रसाद जी
(१२) ,, किशोरीलाल जी
(१३) ,, [illegible] जी
(१४) ,, [illegible] (द०)
(१५) ,, सरस्वती देवी
(१६) ,, भारती देवी
(१७) ,, कमला देवी
(१८) ,, [illegible] देवी
(१९) ,, दुर्गा देवी
(२०) ,, [illegible] देवी
(२१) ,, [illegible]

चौमूं में—
(१) श्री [illegible] जी यादव (दलपति)
(२) ,, घीसालाल जी
(३) ,, रूड़मल जी [illegible]

(४) ,, सीतारामजी व्यास (दलपति)
(५) ,, चौथमल जी जैन
(६) ,, [illegible]दत्त जी जैन
(७) ,, भैरूराम जी शर्मा
(८) श्रीमती सीताराम जी शर्मा (दलपति)
(९) श्री अमरनाथ जी जाट
(१०) श्री रामदेव जी विजयवर्गीय

हिन्डौन में—
(१) श्री [illegible] पालीवाल
(२) श्री चन्द्रशेखर जी शर्मा
(३) श्री रामजीलाल जी लोइया
(४) श्री ताराचंद जी बजाज

सीकर—
(१) श्री टेडराज खेतान (दलपति)
(२) श्री गौरीशंकर [illegible]
(३) श्री गुलाबचंद छाबड़ा
(४) श्री मूलचंद [illegible]

सवाई माधोपुर—
(१) श्री भालचन्द्र जी शर्मा (दलपति)
(२) ,, [illegible]रेन्द्रसिंह जी
(३) ,, कैलाशचन्द्र जी
(४) ,, [illegible] जी

[illegible]—
(१) श्री ज्ञानचन्द्र जी
(२) ,, रामगोपाल जी

की अलख जगाने वाले भूपेंद्रनाथ त्रिवेदी ने प्रेस स्थापित करके 'संग्राम' पत्र शुरू किया, लेकिन शासन-प्रशासन के दमनचक्र में दंपती गिरफ्तार हुए और छापाखाना बर्बाद हो गया। वे पुत्र सुख से भी वंचित हो गए।

भरतपुर: 1849 में प्रदेश के पहले समाचार पत्र 'मजहरूल सरूर' (हिंदी-उर्दू) का दर्जा प्राप्त हुआ। इसी श्रृंखला में भरतपुर रियासत ने 'भारत वीर' के प्रकाशन में सहयोग देकर नारी चेतना, समाज सुधार और जनजागरण में योगदान दिया। 1911 में 'भरतपुर गजट' का प्रकाशन शुरू हुआ। संक्रमण काल में पं. सांवलप्रसाद चतुर्वेदी ने 'कर्मभूमि' का संपादन किया। उनके पुत्र आदित्येंद्र चतुर्वेदी को मूर्धन्य पत्रकारों में जाना जाता है। वर्ष 1944 में 'नवयुग संदेश' का भी श्रीगणेश हुआ। युगलकिशोर चतुर्वेदी, काशीनाथ गुप्ता, मोहनलाल मधुकर इससे जुड़े रहे। मधुकर के निधन के बाद यह बंद है।

धौलपुर: स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले 1914 में 'धौलपुर गजट' का प्रकाशन हुआ। बाद में कोई समाचार पत्र प्रकाशित नहीं हुआ। 1948 में 'सावधान' साप्ताहिक का प्रकाशन आर.एस. नेरिया ने किया। इस पत्र के बंद होने पर चौधरी देवीलाल और बाबा युगलदास ने साप्ताहिक 'दाल रोटी' की शुरुआत की। इसके बंद होने के पांच वर्ष बाद जून, 1965 में बलवंत त्यागी ने 'धौलपुर समाचार' साप्ताहिक निकाला। इसी अवधि में 'प्रभात' शुरू हुआ। 1958 में 'पीस एटम' के सात-आठ अंक निकले। 1961 में 'किसान दूत और 'उदयभानु' (1965 से दैनिक) प्रकाशित हुए। महेश भार्गव ने 1962 में 'धौलपुर टाइम्स' निकाला, जो आठ वर्ष चला। इसके पश्चात भी पत्रों के प्रकाशन का सिलसिला चलता रहा।

भीलवाड़ा: भीलवाड़ा में 'लोकजीवन' का प्रकाशन प्रारंभ किया गया। इस पत्र में जिला स्तर के समाचारों को ग्रामीण अंचल तक पहुंचाने का प्रयास हुआ। पिलानी से 'भवनवाणी' सहित अन्य नगरों से साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में साहित्यिक लेखन को प्रोत्साहित करते हुए जनजागरण किया।

स्वाधीनता से पहले के दौर में समाचार पत्र प्रकाशित करना और इन पत्रों के लिए समाचार एकत्रित तथा प्रेषित करना जोखिम भरा कार्य था। ऐसे संवाददाताओं की गतिविधियों पर नजर रखी जाती थी और उनके शारीरिक, सामाजिक उत्पीड़न सहित परिवारजनों को परेशान किया जाता था। इसके बावजूद ये सभी कलम के धनी स्वाधीनता संग्राम की अलख जगाने और राजस्थान के निर्माण से जुड़े इतिहास में अविस्मरणीय भूमिका निभाते चले गए।

(लेखक यूनीवार्ता के पूर्व समाचार संपादक हैं।)

फोटो जर्नलिज्म का सफरनामा

राकेश शर्मा (राजदीप)

करीब 35 वर्षों की पत्रकारिता/फोटोग्राफी यात्रा के दौरान सैकड़ों आर्टिकल, फिल्म समीक्षाएं, इंटरव्यू, हजारों छायाचित्र राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित हुए; जिनसे पहचान और सम्मान मिला। हालांकि इससे पहले राष्ट्रदूत और समाचार जगत जैसे समाचार पत्रों में भी मेरे शुरुआती कालखंड के दौरान छायाचित्र और आर्टिकल प्रकाशित हो चुके थे। पत्रिका में मेरी नियुक्ति एक कलाकार के रूप में हुई थी; जाहिर है कि एक मंझे हुए जर्नलिस्ट की तरह वह समझ मुझमें कभी नहीं विकसित हो पाई। ऐसे में फील्ड पर जो भी जिम्मेदारी मुझे सौंपी जाती, उसकी परिणति बहुत सम्मानजनक टिप्पणी से कभी नहीं होती। अक्सर पत्रिका के वरिष्ठ साथी और अन्य अखबारों के छायाकार मुझे 'पोर्ट्रेट मास्टर' कहा करते। शायद उनकी नजर में मैं कभी एक मुकम्मल और तेवरदार फोटो जर्नलिस्ट रहा ही नहीं। बावजूद इसके कि मेरी सेवा अवधि में सैकड़ों फोटो और फोटो स्टोरी सराही गई। बहरहाल, विगत वर्षों में काम करते हुए पत्रिका के चीफ फोटो जर्नलिस्ट अजय सोलोमन की काम के प्रति निष्ठा और समर्पण भाव ने मुझे खासा प्रभावित किया। उनकी खोजी पत्रकारिता में समझ के कारण ही पहले बिशनसिंह शेखावत और बाद में उनके पुत्र जितेंद्रसिंह शेखावत की जुगलबंदी ने उस वक्त कई कीर्तिमान स्थापित किए। ऐसे में पत्रिका के चीफ फोटो जर्नलिस्ट की हैसियत से सोलोमन के संपर्क भी राजनेताओं से बहुत सुदृढ़ रहे। उस दौर से पहले के प्रेस छायाकारों में खजान सिंह और गोपाल संगर, जिनकी विरासत को कालांतर में उनके पुत्र राजीव संगर ने बखूबी निभाया, का नाम बड़े अदब से लिया जाता है। उसी दौर में इनके साथ सुरेंद्र जैन 'पारस' की जिजीविषा तो आज भी किसी युवा छायाकार को नई ऊर्जा देती है; वे उम्र के पचहत्तर बसंत पार भी सक्रिय हैं इसी कालखंड में अमोलक पाटनी, सुभाष शर्मा, वी.एस. राठौड़ और कमल जुल्का का नाम भी अग्रणी पंक्ति में रखा जा सकता है। इन सभी ने फोटोग्राफी के शुरुआती काल में तकनीक और कला के मिश्रण की ऐसी मिसाल कायम की, जो आज डिजिटल युग में शायद किसी और के बूते की बात नहीं है।

आजादी के बाद से जीविका के लिए सरकारी नौकरी और स्टूडियो लाइन में रहते हुए भी छायांकन कला को आत्मसात कर गाहे-ब-गाहे अलग-अलग समाचार पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले प्रमुख हस्ताक्षरों (स्वतंत्र छायाकारों) में घनश्याम अग्रवाल, एम.डी. शर्मा, भगवानदास रुपाणी, नत्था सिंह, एल.एस. टाक, एच.के. झा, जी.आर. आसनानी, एल.ए. भट्टी, सुभाष भार्गव, आनंद आचार्य, राजकुमार चौहान, एन.एल. जेवरिया, एन.एस. ओलानिया, महेश स्वामी आदि स्मरणीय हैं। इनसे पहले गोपाल सैंगर, अमोलक पाटनी, राजीव सैंगर ने भी समाचार पत्रों में बतौर

राजस्थान दिवस, 2022 की पूर्व संध्या पर स्टेच्यू सर्किल को केन्द्रित गुलाबी नगर का खूबसूरत परिदृश्य। फोटोः चेतन शर्मा

फोटो पत्रकार बेहतरीन नाम कमाया। इनके बाद अस्सी और नब्बे के दशक में जयपुर से प्रकाशित हिंदुस्तान टाइम्स के एचटी लाइव में काम करने वाले हिमांशु व्यास, सुमन सरकार और इंडिया टुडे के पुरुषोत्तम दिवाकर जैसे प्रयोगवादी छायाकारों के काम ने न केवल आमजन को प्रभावित किया, वरन प्रेस फोटोग्राफी की धारा को नए आयाम भी दिए। इसी समय में इकलौती महिला फोटो पत्रकार मोलिना खिमानी के साथ मनोज छाबड़ा, गिरधारी पालीवाल, प्रमोद शर्मा, योगेंद्र गुप्ता, निरंजन चौहान, अनिल शर्मा, सुनील शर्मा, राजेश कुमावत, पद्म सैनी, संतोष शर्मा, मनोज श्रेष्ठ, शहजाद खान, डी.के. सैनी, चेतन शर्मा, मोहन कुमावत, दिलीप सिंह, चंद्रप्रकाश कुमावत जैसे प्रेस छायाकारों ने राज्य के विभिन्न प्रतिष्ठित समाचार पत्रों में प्रकाशित अपनी तस्वीरों के बूते खासी सुर्खियां बटोरीं; इनमें से कुछ अभी सक्रिय हैं।

अपनी तीन दशक की पत्रकारिता यात्रा में मुझे इन तमाम छायाकारों के अलावा अलग तेवर वाले स्थापित पत्रकार साथी भी याद आते हैं, जिनमें विश्वास कुमार, आनंद जोशी, गोपाल शर्मा, भुवनेश जैन, शाहिद मिर्जा, प्रदीप शेखावत, इकबाल खान, एल.एल. शर्मा, आलोक शर्मा, हरिश्चंद्र सिंह के साथ नवोदित पत्रकार साथी रामकुमार सिंह, उपेंद्र शर्मा, वर्षा भंभानी मिर्जा जैसे अन्य कई पत्रकारों की कलम के जलवे बरबस याद आ जाते हैं। इनके साथ काम करते हुए दसियों सोलो/ग्रुप फोटो प्रदर्शनी के दम पर भारत सहित तीस से अधिक विदेशी राष्ट्रों में चयनित/पुरस्कृत और सम्मानित अनेक छायाचित्रों के बूते कई अंतरराष्ट्रीय फोटो सम्मान भी हासिल हुए।

आज के डिजिटल युग और ड्रोन तकनीक फोटोग्राफी की बात करें तो दिनेश डाबी, संजय कुमावत, भागीरथ, ताराचंद गवारिया, प्रमोद सोनी जैसे युवा छायाकार अपने काम के साथ कामयाबी की दास्तां बयां करते हैं। इस बदलती धारा में फोटो जर्नलिस्ट जिस प्रकार अपने काम को पूरा कर रहे हैं, उसे सराहा जाना चाहिए क्योंकि आज के दौर में मीडिया की विभिन्न विधाओं और धाराओं से कार्यस्थल पर काम करते हुए अलग प्रकार की चुनौतियां खड़ी हो गई हैं।

(लेखक वरिष्ठ फोटो पत्रकार हैं।)

कार्टून के नए कलेवर

अभिषेक तिवारी

मैं लगभग दो दशक पहले कार्टूनिंग करने राजस्थान आया था। वह पत्रकारिता का स्वर्णिम युग था और सभी विधाओं में आज की तुलना में बेहतर था। उस समय तक राजस्थान की पत्रकारिता के क्षेत्र में अबू अब्राहम और काक जैसे धुरंधर कार्टूनिस्ट काम कर चुके थे। राजस्थान में पॉलिटिकल कार्टून पर सबसे ज्यादा काम हुआ है। हालांकि सबसे ज्यादा कार्टूनिस्ट देने वाला राज्य मध्य प्रदेश है, फिर भी जब पॉलिटिकल कार्टून की हो तो राजस्थान सब पर भारी पड़ता है। मिसाल के तौर पर सुधीर तैलंग बड़े कार्टूनिस्ट हुए, वे बीकानेर के रहने वाले थे। ऐसे ही पंकज गोस्वामी का भी बहुत नाम हुआ। ऐसा बताया जाता है कि पंकज गोस्वामी ने बीकानेर में कार्टून बनाने की शुरुआत की और उन्हें देखकर अन्य लोगों ने भी काम शुरू किया। इनमें से काफी बड़े नाम निकले और कुछ लोग इसी पेशे की अलग अलग विधाओं में चले गए। कोई विज्ञापन में पंचलाइन लिखने लगे, किसी ने सरकारी प्रेस जॉइन कर ली।

पत्रकारिता पर तकनीक का गहरा प्रभाव पड़ा। धीरे-धीरे रंगीन अखबार छपने लगे और उनमें मनमोहक तस्वीरें होती थीं। लेकिन कार्टून तो कागज पर छपी लकीरें होती थीं। कार्टून में व्यक्ति ने कौन-से रंग का कुर्ता या साड़ी पहनी है, यह न तो पता चलता है और न इसका कोई महत्व होता है। आधुनिक अखबार की सजावट में कार्टून फिट नहीं बैठ रहा था। पहले फ्रंट पेज पर आने वाला कार्टून अब पीछे के पन्नों पर धकेल दिया गया है। कुछ अखबार हैं, जिन्होंने इस प्रथा को अभी तक जारी रखा है। राजस्थान पत्रिका में 'कार्टून कोना' आज भी पहले पन्ने पर ही छापा जाता है।

कभी ऐसा मौका भी आता है जब खबर कम है और वहां कार्टून लगाना है। ऐसे कार्टून को हम ह्यूमर की तरह ही बनाते हैं। जैसे सर्दी ज्यादा है तो सर्दी टुंस बना दिया या महंगाई पर कोई हल्का सा ह्यूमर दर्शाते हुए कार्टून बना दिया। सीरीज में ह्यूमर ज्यादा होता है और तंज कम होता है। कार्टून बनाना एक कार्टूनिस्ट के लिए बाएं हाथ का खेल है, लेकिन किसी विषय पर कार्टून की सीरीज बनाना थोड़ा मुश्किल होता है। अखबार में जगह ज्यादा हो तो एडजस्ट करके सीरीज बनाई जाती है, जिसमें एक तरह की थीम पर काम किया जाता है। आजकल ग्राफिक्स के साथ कार्टून बनाए जाते हैं, जिनमें कार्टूनिस्ट रंगों के साथ खेल सकता है।

काफी लोग अपने कार्टून में एक कॉमन मैन देते हैं। जब हम हाथ से कार्टून बनाते हैं तो सबकी लिखावट अलग होती है। कर्व या लकीर खींचने का तरीका अलग होता है। कोई धोती में दिखाता है तो कोई उसको गमछा पहना देता है। ऐसे ही, अगर आप मेरे कार्टूनों को देखेंगे तो पाएंगे कि वहां पक्षी जरूर होंगे। राजस्थान में कबूतर बहुत हैं और खासकर जयपुर में तो हर गली, हर सड़क पर कबूतरों को

खाना दिया जाता है। जितना दाना यहां डाला जाता है, उतना कहीं नहीं डाला जाता। इसके बावजूद यहीं के लोग शिकायत भी करते हैं कि इन्होंने हमारे शहर की सुंदरता बिगाड़ दी। इसलिए ये परिंदे ही मेरे कॉमन मेन हैं। वे कहीं भी प्रवेश कर सकते हैं, किसी भी मुंडेर पर बैठ सकते हैं; वे बिजली घर भी जा सकते है, आरटीआई के दफ्तर भी जा सकते हैं, बस में भी घुस सकते हैं। यह प्रेरणा आर.के. लक्ष्मण से मिली। लोग उनसे पूछते थे कि आपका कॉमन मैन बोलता क्यों नही है? वे कहते कि वह भले कुछ बोलता नहीं है, लेकिन देखता सब है.. हर जगह उसकी नजर रहती है।

अभी राजस्थान में कार्टून जर्नलिज्म की हालत निराशाजनक है। कार्टून पढ़ा नहीं जा सकता, सीखा जा सकता है और सिखाने के लिए कोई गुरू भी होना चाहिए। हर फील्ड में इंटर्न आता है, लेकिन कार्टूनिंग में तो इंटर्न आता नहीं। कभी कोई स्टूडेंट आता है थैली में कार्टून लेकर और उसको भी कोई रिस्पॉन्स नही मिलेगा तो वह चला जाएगा। जब मैं इस फील्ड में आया तो मुझे खुले मन से स्वीकार किया गया। मुझसे यह नहीं पूछा गया कि कैसा कार्टून बनाते हो? लोगों ने कहा कि मैं उनके लिए महत्वपूर्ण हो सकता हूं। अब वह परिस्थिति नहीं है क्योंकि अब ऑफिस में सिर्फ पत्रकार नही हैं, एडिटर भी हैं और साथ ही अनेक सब एडिटर होते हैं। यह समझना जरूरी है कि अखबार के लिए एक कार्टूनिस्ट का होना कितना जरूरी है। मेरे जैसा व्यक्ति तो चाहेगा कि संपादक से मिले, लेकिन वहां तक पहुंच ही नहीं हो पाएगी और हो तो भी अब वैसे संपादक रह नहीं गए हैं जैसे पहले हुआ करते थे।

आज कार्टूनिस्ट टी.वी. के शो लिख रहा है या कोई पंचलाइन लिख रहा है। कार्टूनिस्ट की मार्केट में डिमांड तो है, लेकिन सप्लाई नहीं है। कार्टूनिस्ट बनने-बनाने की प्रक्रिया ही बंद हो चुकी है।

इस स्थिति को बदलने के लिए जरूरी है कि लोग कार्टून देखें और अपनी प्रतिक्रिया दें। सोशल मीडिया पर हो तो उस पर रिएक्ट करें, अखबार में पढ़ रहे हैं तो फीडबैक लिखने की परंपरा नहीं छोड़ें। जो चीज खराब लगी, उसको खराब बोलें और जो अच्छी लगे उसकी तारीफ करें। कार्टून कम है क्योंकि पाठक मुखर नही हैं। आप अगर अखबार लेते हैं तो सवाल कीजिए कि इसमें से कार्टून गायब क्यों है? कार्टून को थोड़ा-सा सहारा देने की जरूरत है, मुझे यकीन है कि यह विधा फिर उसी मुकाम पर पहुंच जाएगी।

(लेखक राजस्थान पत्रिका में कार्टूनिस्ट/ डिप्टी एडिटर हैं।)

जिलों में जलाई मशाल

- **अजमेर :** मनीषी समर्थदान, रामनारायण चौधरी, दुर्गाप्रसाद चौधरी, चंद्रगुप्त वार्ष्णेय, विश्वदेव शर्मा, मानकराम ईसराणी, अनिल लोढ़ा, दीनबंधु चौधरी, मोहनराज भंडारी
- **अलवर :** मूलचंद गांधी, सुशील झालानी, ईश मधु तलवार, राजेश रवि, कपिल भट्ट, सुभाष मोदी
- **उदयपुर :** कनक मधुकर, रणजीत अग्रवाल, अजय गुप्ता, भगवतीप्रसाद श्रीमाली, मनोज लोढ़ा
- **करौली :** ब्रजमोहनलाल अग्रवाल, गजानंद डेरोलिया, सूरजमल, रामचरण आर्य
- **कोटा :** गजेंद्रसिंह सोलंकी, हरिकुमार औदिच्य, आत्मदीप, हीरालाल व्यास, चंद्रभान, मुनीश जोशी, श्याम दुबे, प्रद्युम्न शर्मा, पुरूषोत्तम पंचोली, कृष्ण बलदेवसिंह हाड़ा
- **चित्तौडगढ़ :** के.एम. भंडारी, गिरधारीलाल जीनगर, बलदेव भाटा, हरिप्रकाश शारदा, रघुवीर जैन
- **चुरू :** रामलाल शर्मा, जगदीशप्रसाद शर्मा, शिवदत्त पारीक, नारायण बारेठ, नरेंद्र शर्मा
- **जालोर :** रामेश्वर पुरोहित, कन्हैयालाल खंडेलवाल, रघुनंदन व्यास
- **जैसलमेर :** भंवरलाल पुरोहित, देवकीनंदन थानवी, प्रेम जगानी, हरदेवसिंह भाटी
- **जोधपुर :** शिवदान थानवी, सरदारमल थानवी, जयनारायण व्यास, अचलेश्वरप्रसाद शर्मा, सुमनेश जोशी, गोवर्धन हेड़ाऊ, शिवप्रसाद पुरोहित, माणक मेहता, नेमिचंद्र जैन भावुक, श्यामसुंदर व्यास, सूरजप्रकाश पापा
- **झालावाड़ :** जेठानंद चंचल
- **झुंझुनूं :** झाबरमल शर्मा, मातादीन बगेरिया, रामनिरंजन तुलस्यान, गोकुलचंद शर्मा
- **टोंक :** रामबाबू टिक्कीवाल
- **धौलपुर :** रामनाथ गोयल
- **दौसा :** गोरधनलाल बोहरा
- **नागौर :** शंकरसिंह चौहान, बाबूलाल टांक
- **पाली :** मूलचंद भट्ट, सुभाष रावल, बी.एन. पारीक, ओम चतुर्वेदी, चैनसिंह चौहन, सुरेश चतुर्वेदी, राजकमल पारीक, ओम गौड़
- **भरतपुर :** आदित्येंद्र चतुर्वेदी, मिश्रीलाल गुप्ता, मोहनलाल मधुकर, महेंद्र चीमा, युगलकिशोर चतुर्वेदी
- **भीलवाड़ा :** ललितप्रसाद शर्मा, महेंद्र ओर्डिया, ताराशंकर जोशी, राजेश तोषनीवाल
- **बाड़मेर :** डॉ. केसरीमल केसरी, भूरचंद जैन, भैरोंसिंह सोढ़ा, शंकरलाल गोली
- **बारां :** कुश कुमार मिश्रा
- **बांसवाड़ा :** नंदकिशोर पटेल, भूपेंद्रनाथ त्रिवेदी
- **बीकानेर :** शंभुदयाल सक्सेना, अभय भटनागर, विष्णुप्रकाश शर्मा, श्याम आचार्य, श्याम शर्मा, शुभू पटवा, मनोहर चावला
- **सवाई माधोपुर :** सुरेंद्र चतुर्वेदी, चंद्रकेतु बेनीवाल, नाथूलाल श्रीमाल, गोकुलचंद गोयल
- **सिरोही :** भीमाशंकर शर्मा, महावीर जैन, बाबूलाल परिहार, संयम लोढ़ा
- **सीकर :** प्रभुदयाल जैन, जे.पी. खूटेटा, कन्हैयालाल शर्मा, कमल माथुर, जानकीप्रसाद पुरोहित, प्रदीप महर्षि
- **श्रीगंगानगर :** आत्माराम गुप्ता, इंद्रकुमार तिवारी, राजेंद्र सारस्वत

प्रेरणा स्रोत और आशीर्वचन

माननीय गोपालजी

(वसुंधरा राजे)

जयपुर में सीरियल बम ब्लास्ट के बाद मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे का महानगर टाइम्स को धन्यवाद पत्र।

23.11.97

क.च. कुलिश

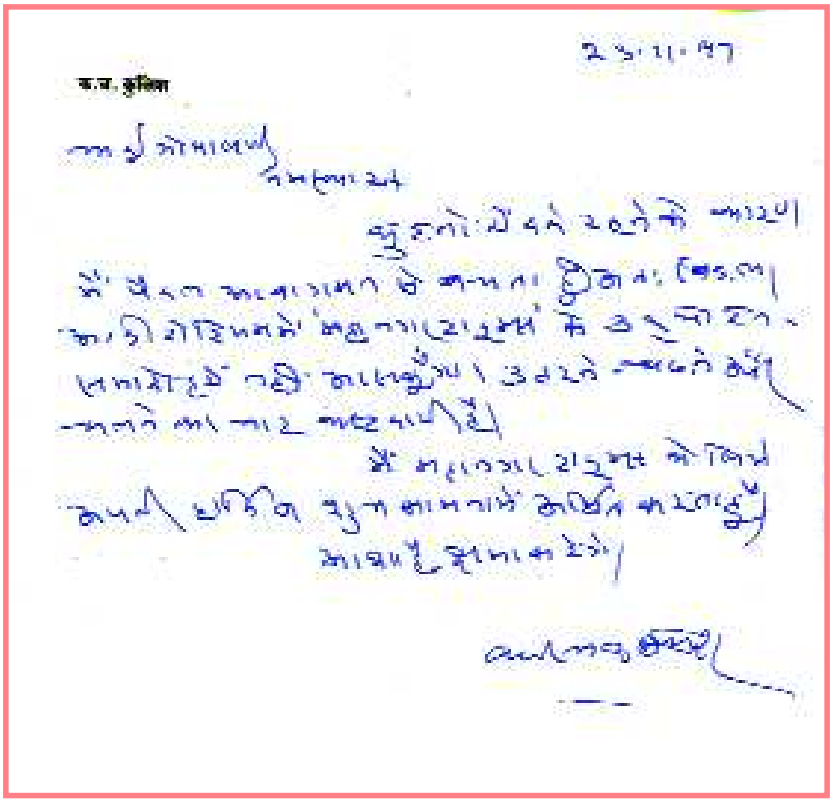

महानगर टाइम्स के लोकार्पण के अवसर पर राजस्थान पत्रिका के संस्थापक कर्पूरचंद कुलिश का आशीर्वाद।

समाज को निरंतर जागरूक करने में अब तक की यात्रा सराहनीय

पत्रकारिता की श्रेष्ठ परंपरा को आगे बढ़ा रहा महानगर टाइम्सः मोदी

प्रधान मंत्री
Prime Minister
संदेश

'महानगर टाइम्स' के पच्चीसवें स्थापना दिवस की शुभकामनाएं। समाज को निरंतर जागरूक करने में समाचार पत्र की अब तक की यात्रा सराहनीय है।

भारत में पत्रकारिता का इतिहास साहस व संघर्ष की गाथाओं और राष्ट्र निर्माण के संकल्प से समृद्ध है। देश, दुनिया व समाज से जुड़े विभिन्न विषयों की विस्तृत जानकारी को जनता तक पहुंचाने में समाचार पत्रों का विशेष महत्व है।

पिछले कुछ वर्षों में जन-जागरूकता और जन-भागीदारी से जुड़े मुद्दों, सामान्यजन के उद्यम और उपलब्धियों से लेकर देश की सतत विकास यात्रा को प्रभावी रूप से जन-जन तक ले जाने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह प्रसन्नता सुखद है कि 'महानगर टाइम्स' पत्रकारिता की श्रेष्ठ परंपरा को आगे ले जाने का कार्य कर रहा है।

जब देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है तो एक प्रकार से संस्थान के लिए भी यह अवसर और यादगार हो गया है। यह आशा प्रकट की है कि 'महानगर टाइम्स' अपनी रजत जयंती यात्रा से प्रेरणा लेते हुए देश व समाज की बेहतरी के लिए समर्पित प्रयास करता रहेगा।

'महानगर टाइम्स' के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों और पाठकों को बधाई व हार्दिक शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
अग्रहायण 01, शक संवत् 1943
22 नवंबर, 2021

साधना-सफलता के यादगार क्षण

● विशेष संवाददाता

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'महानगर टाइम्स' के पच्चीसवें स्थापना दिवस पर शुभकामनाएं देते हुए **समाज को निरंतर जागरूक करने में समाचार पत्र की अब तक की यात्रा को सराहनीय बताया है।**

प्रधानमंत्री ने कहा है, **'यह देखना सुखद है कि 'महानगर टाइम्स' पत्रकारिता की श्रेष्ठ परंपरा को आगे ले जाने का कार्य कर रहा है।'**

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया है कि जब देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है तो एक प्रकार से संस्थान के लिए भी यह अवसर और यादगार हो गया है। **यह आशा प्रकट की है कि 'महानगर टाइम्स' अपनी रजत जयंती यात्रा से प्रेरणा लेते हुए देश और समाज की बेहतरी के लिए समर्पित प्रयास करता रहेगा।** मोदी ने शुभकामना संदेश में लिखा है कि भारत में पत्रकारिता का इतिहास साहस और संघर्ष की गाथाओं और राष्ट्र निर्माण के संकल्प से समृद्ध है। देश, दुनिया और समाज से जुड़े विभिन्न विषयों की विस्तृत जानकारी को जनता तक पहुंचाने में समाचार पत्रों का विशेष महत्व है।

उन्होंने मीडिया के महत्व को रेखांकित करते हुए माना है कि पिछले कुछ वर्षों में जन-जागरुकता और जन-भागीदारी से जुड़े मुद्दों, सामान्यजन के उद्यम और उपलब्धियों से लेकर देश की सतत विकास यात्रा को प्रभावी रूप से जन-जन तक ले जाने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

प्रधानमंत्री ने 'महानगर टाइम्स' के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों और पाठकों को बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

> भारत में पत्रकारिता का इतिहास साहस और संघर्ष की गाथाओं और राष्ट्र निर्माण के संकल्प से समृद्ध है। देश, दुनिया और समाज से जुड़े विभिन्न विषयों की विस्तृत जानकारी को जनता तक पहुंचाने में समाचार पत्रों का विशेष महत्व है।

पत्रकारिता में आदर्श

कलराज मिश्र
राज्यपाल

मैं इस समाचार पत्र का पाठक हूं और मैंने निरंतर यह पाया है कि पत्रकारिता के स्वस्थ मूल्यों का निर्वहन करते हुए यह समाचार पत्र पाठकोपयोगी, स्तरीय समाचार और विचार सामग्री प्रकाशित करता है। उम्मीद है भविष्य में भी जयपुर महानगर टाइम्स पत्रकारिता में आदर्श स्थापित करता रहेगा। समाचार पत्र परिवार को मेरी इस अवसर पर स्वस्तिकामना।

सदैव जनहित को महत्व

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री

पाठकीय साख का परिचायक दैनिक समाचार पत्र जयपुर महानगर टाइम्स का ढाई दशक से प्रकाशन अपने आप में महत्वपूर्ण है। आशा है अपने रजत जयंती वर्ष की यात्रा के दौरान पत्रकारिता के स्वस्थ मूल्यों का अनुसरण करते हुए यह समाचार पत्र पूरी प्रतिबद्धता से सामाजिक सरोकारों के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए आगे बढ़ेगा।

पाठकों का भरोसा प्रशंसनीय

वसुंधरा राजे
पूर्व मुख्यमंत्री

सायंकालीन समाचार पत्र के रूप में 24 बरस पहले शुरू हुए महानगर टाइम्स ने आज प्रदेश में खास पहचान बनाई है। सायंकालीन के बाद निष्पक्षता, निडरता और नयेपन के साथ महानगर अब हर सवेरे पाठकों से ताजा जानकारी के साथ मुलाकात करने लगा है। मुझे खुशी है कि महानगर ने पाठकों का विश्वास अर्जित करने का पूरा प्रयास किया है।

सजग-सचेत समाज का निर्माण

ओम बिड़ला
लोकसभा अध्यक्ष

स्वतंत्र एवं निष्पक्ष मीडिया सशक्त लोकतंत्र का आधार है। आज के युग में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि समसामयिक विषयों पर सूचनाप्रद आलेखों एवं विश्लेषण के माध्यम से वे नागरिकों का ज्ञानवर्धन भी करते हैं तथा एक सजग एवं सचेत समाज का निर्माण करते हैं। आपके 25वें स्थापना दिवस तथा भावी प्रकल्पों के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

जागरूक एवं निर्भय

डॉ.सी.पी. जोशी
विधानसभा अध्यक्ष

महानगर टाइम्स ने जनहित को सर्वोपरि रख जागरूक एवं निर्भय पत्रकारिता से हर खबर को जनता तक पहुंचाया है। साथ ही अपने सशक्त संपादकीय लेखों एवं समाचारों को ज्यों का त्यों जन साधारण तक पहुंचाने का प्रयास किया है। एक राष्ट्र के लोकतंत्र को अधिक मजबूत बनाने के लिए ऐसी ही निडर और सत्य परक पत्रकारिता की आवश्यकता है।

सटीक खबरें

गुलाब चन्द कटारिया
नेता प्रतिपक्ष

23 नवम्बर को प्रकाशित होने वाले विशेषांक के सुअवसर पर मैं शुभकामना संदेश प्रेषित कर रहा हूं। साथ ही प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर आपके कार्य को जनमानस के पटल पर विश्वसनीय बनाए रखने, पाठकों में महानगर टाइम्स के प्रति विश्वास, खबरों की सटीकता एवं सफलता के नए आयाम स्थापित करने में आपकी सहायता करे।

पत्रकारिता के मूल्यों की सदैव रक्षा

सतीश पूनियां
प्रदेशाध्यक्ष भाजपा

राजस्थान के प्रतिष्ठित समाचार-पत्र महानगर टाइम्स ने पत्रकारिता के मूल्यों की हमेशा रक्षा कर मान बढ़ाया है। अपने सफर के शुरुआत के साथ ही समाचार पत्र ने आमजन के मुद्दों को उठाते हुए जनहित में अपनी कलम चलाई है। मेरी यही कामना है कि महानगर टाइम्स भविष्य में इसी तरह आमजन की आवाज बनता रहे।

सफल प्रकाशन की शुभकामना

सचिन पायलट
पूर्व उपमुख्यमंत्री

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि 23 नवम्बर, 2021 को महानगर टाइम्स सफलतापूर्वक 24 वर्ष पूरे कर 25वें वर्ष की ओर कदम बढ़ा रहा है। साथ ही, इस अवसर पर विशेषांक का प्रकाशन भी किया जा रहा है। मैं इस अवसर पर महानगर टाइम्स के संपादक, पाठकगणों एवं इससे जुड़े लोगों को हार्दिक बधाई देते हुए विशेषांक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।